तार्किक ज्योतिष नये लेख व केस स्टडी के साथ

विपुल जोशी

www.shopizen.in

नमस्ते मित्रो

यह पुस्तक लेते ही आप हमारे परिवार के सदस्य बन चुके हैं। मैं प्रगति दाभोलकर हिन्दी विभाग प्रमुख शॉपिज़न परिवार में आपका हार्दिक स्वागत करती हूं, और आपकी आभारी हूँ।

शॉपिज़न की संकल्पना को आपने अपनाया, स्वीकार किया और पसंद किया, इसी कारण आज शॉपिज़न अपने श्रेष्ठ साहित्य के लिए जाना जाता है। आप सबके कारण ही यहाँ उच्च स्तरीय साहित्य उपलब्ध हो पाया है।

शॉपिज़न भारत का एकमात्र मंच है जो लेखकों के हितो को ध्यान में रखकर अपनी सेवाएं दे रहा है।

स्थापित लेखक हो या नवोदित दोनों ही प्रकार के लेखकों के साहित्य को प्रकाशित एवं प्रसारित करने की दिशा में हम निरंतर आगे बढ़ रहे हैं।

शॉपिज़न पर हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती, और बंगाली इन पाँच भाषाओं में साहित्य का प्रकाशन सम्पूर्ण विश्व में किया जाता है। यह पूरी तरह भारतीय कंपनी है। यहाँ आप साहित्य के साथ साथ चित्र, छायाचित्र, ऑडियो, सुविचार(कोट्स), आसानी से स्वयं ही प्रकाशित कर सकते हैं और हजारों लोगो तक अपनी बात पहुंचा सकते हैं। शॉपिज़न पर ईपुस्तकों का प्रकाशन निशुल्क है, ईपुस्तक प्रकाशित करने के लिए लेखक को कोई शुल्क नहीं देना होता, ये सभी पुस्तकें शॉपिज़न पर कई देशों में पढ़ी जा सकती हैं।

पुस्तक विक्री के पश्चात लेखकों को अधिकतम रॉयल्टी देने का प्रयास हमारे द्वारा किया जाता है, हिन्दी भाषा और साहित्य का अधिक से अधिक प्रचार, प्रसार करने के उद्देश से हमारे लेखकों को ज्यादा से ज्यादा मानदेय प्रदान करना ही हमारा एकमात्र उद्देश है।

यहाँ पर अनेक स्पर्धाओं और ऑनलाइन कार्यशालाओं का समय-समय पर आयोजन किया जाता है जिससे लेखकों को अच्छा साहित्य लिखने के लिए मार्गदर्शन व प्रोत्साहन मिलता है।

अब पुस्तकों की हार्डकॉपी हमारे वाचकों के लिए किफायती दरों पर उपलब्ध है।

हमारा कुशल टेक्निकल स्टाफ अपने रचनात्मक प्रयत्नों से नए-नए फीचर्स शोपिजेन ऐप पर सबके लिए उपलब्ध कर रहा है।

शॉपिज़न केवल एक नाम या संस्था नहीं बल्कि आपके सपने पूरा करने का सरल व सुंदर मार्ग है।

आपके द्वारा दी जाने वाली सूचनाओं एवं सुझावों का हम हृदय से स्वागत करते हैं। भविष्य में भी आप सभी का सहयोग मिलता रहेगा इसी विश्वास के साथ...

प्रगति दाभोलकर
हिन्दी विभाग प्रमुख
शॉपिज़न.इन
pragati@shopizen.in
www.shopizen.in

(तार्किक एवं व्यावहारिक ज्योतिष @ विपुल जोशी)

संपादक – अरविन्द कुमार साहू (aksahu2001@gmail.com)

प्रथम संस्करण: 2022

मुखपृष्ठ - रक्षिता बोरा (अल्मोड़ा)

प्रकाशक: VIPUL JOSHI

दूरभाष (WhatsApp)-+919528561144

Email ID: vipuljoshii0001@gmail.com

कुछ महत्वपूर्ण नाम

मेघा बंसल, स्वाति गुप्ता, अभिषेक सूर्यवंशी,
अरविंद कुमार 'साहू', उमेश तिवारी "शुभम",
सौरभ पाठक, रक्षिता बोरा

जिनकी वजह से किताब पाठकों के हाथ में है

प्रस्तावना

विपुल जोशी की तार्किक ज्योतिष- एक जरूरी किताब

ज्योतिष में रुचि रखते हैं या नहीं रखते, तो भी यह किताब आप ही के लिए है। पराविद्याओं पर विश्वास है या इसे अंधविश्वास मानते हैं, तब तो आप को यह पुस्तक जरूर पढ़ना चाहिए। मैं ऐसा इसलिए कह सकता हूँ क्योंकि मैंने इसे गंभीरतापूर्वक पढ़ा, समझा और थोड़ा संपादित भी किया। बहुत ही सरल, सहज शब्दों में किन्तु विद्वतापूर्ण और निष्पक्ष तरीके से लिखी गयी है।

लेखक विपुल जोशी कोई पेशेवर ज्योतिषी नहीं है। वे सामान्यतया आपका भविष्य बताने की फीस भी नहीं माँगते। ग्रह अनुकूल करने के लिए कोई मँहगे माणिक- मोती खरीदने वाला उपाय भी नहीं बताते। फिर भी उनके जातक को फायदा होता है तो यह अपनी रूचि के प्रति उनकी सच्ची आस्था व 15 वर्षों के जिज्ञासु अध्ययन, मनन वाला अनुभव है।

हो सकता है, यह पुस्तक पढ़ने के बाद आप छोटी- मोटी परेशानियों के लिए ज्योतिषियों के पास जाना ही छोड़ दें, क्योंकि आपको समस्याओं का समाधान या शांति खुद नजर आने लगे। ,,,,,और विश्वास कीजिये, यदि गये भी तो शायद ही कभी ठगे जाने की शिकायत करें।

कोई विद्या बुरी नहीं होती। बुरा तो उसका अधकचरा ज्ञान होता है। उससे भी बुरा किसी ऐसी विद्या का अति व्यवसायीकारण होता है। विपुल जोशी का मानना है कि तंत्र, मंत्र, ज्योतिष आदि जनकल्याण की पराविद्यायें है। अत्यधिक धन कमाने की लालसा रखने वालों ने इन्हें भी प्रदूषित कर दिया है।

इसलिये किसी जन सामान्य को ज्योतिष या ज्योतिषी के पास जाने से पहले, उसके तार्किक और व्यावहारिक स्वरूप को जानना- समझना बहुत आवश्यक है। इसलिये निश्चित रूप से, नये- पुराने सभी जिज्ञासुओं और जातकों

के लिए मैं इसे पढ़ने की व्यक्तिगत रूप से सलाह देता हूँ।
ईश्वर सबका कल्याण करें। शुभमस्तु।

शुभेच्छु
✍अरविंद कुमार 'साहू'
(साहित्यकार/संपादक)
(मोबाइल- 7007190413)

विषय सूची

ज्योतिष और अहं ब्रह्मास्मि

अहं ब्रह्मास्मि की कई लोगों ने अपने- अपने हिसाब से व्याख्याएँ की हैं। मैं भी एक ज्योतिषी के दृष्टिकोण से इस पर अपनी बात रखना चाहता हूँ। जब कोई व्यक्ति “अहं ब्रह्मास्मि” कहता है तो उसका अर्थ होता है "मैं ही सृष्टि हूँ, मैं ही सब कुछ हूँ"।

इस वाक्य में अहम झलकता है। लेकिन, अगर इसी बात को व्यक्ति "ये सृष्टि मेरी है और मुझे इसका ख्याल रखना है, बेहतर बनाना है" कहे, तो इसमें एक समर्पण की झलक दिखती है।

देखा जाये तो यही सच्चाई भी है। परमपिता परमेश्वर ने हर व्यक्ति को सृष्टि का मालिक बनाकर भेजा है, किन्तु हम हमेशा इससे अनजान रहते हैं।

इस दुनिया में जितने लोग हैं, दुनिया के अंदर उतनी ही दुनिया हैं। ....यानी आपका सूर्य सिर्फ आपका सूर्य है। वह आपके जन्म के साथ उगा है और आपकी मृत्यु के साथ ढल जायेगा। आपका चंद्रमा/ मंगल/ बुध/ गुरु/ शुक्र/ शनि/ राहु/ केतु सिर्फ आपके हैं। ये सारे ग्रह आपके साथ ही उदय हुए हैं और आपके साथ ही ढल जायेंगे। यही वजह है कि पूरी दुनिया में दो लोगों की कुंडली कभी एक सी नहीं होती। हर कोई अपने आप में कमाल, लाजवाब है। बस, जरूरत है खुद को पहचानने की और निष्काम भाव से कर्म करते हुए, अपना शत- प्रतिशत देने की।

कोई अच्छा नहीं है, कोई बुरा नहीं है। ये बात थोड़ी दार्शनिकों वाली लगती है, मगर यही सच्चाई भी है। सोचकर देखेंगे तो आप पायेंगे कि बुरे से बुरे व्यक्ति ने जो काम किया, उससे भी कोई अच्छी बात निकल आयी होगी। जो व्यक्ति हमारी नजरों में बुरा था, जिसे जीने का हक नहीं था, वो भी किसी की नजरों में हीरो था। लोग उसके लिए भी लम्बी उम्र की दुआएं कर रहे थे।

जैसे एक खेल होता है न, जिसमें टुकड़े जोड़- जोड़कर एक पूरा चित्र बनाया जाता है और वो टुकड़े अकेले देखने में बहुत अटपटे से लगते हैं। ठीक उसी तरह सृष्टि में भी हर अटपटे टुकड़े की जरूरत है। वह भी सृष्टि को पूर्ण कर रहा है। सम्भव है कि जो आपकी नजरों में अटपटा हो, वही दूसरे की नजर में एकदम सही हो और जो आपकी नजर में सही हो, वही दूसरे की नजर में अटपटा।

पाप-पुण्य भी आपके दृ िकोण के ऊपर ही हैं। मेरा मानना है कि अगर आप प्रत्यक्ष तौर पर किसी को नुकसान पहुँचा रहे हैं तो वह पाप हो सकता है, वरना आप तरक्की करेंगे तो आपको छोड़कर लगभग हर किसी को बुरा ही लगेगा। चिड़ियाँ फल चुराती है, जानवर दूसरों के खेत चर जाते हैं, वकील झूठ बोलते हैं, सेना के जवान दुश्मनों को गोली मारने से पहले एक पल नहीं सोचते, तो कैसा पाप? अगर वजह ठीक लग रही है तो पाप- पुण्य कुछ भी नहीं, सब कर्म है।

अंत में, मैं बस यही कहना चाहता हूँ कि परमपिता परमेश्वर ने आपको सृष्टि सौंपी है, तो कोई ऐसा काम तो करके ही जाइयेगा। ....ताकि जब उससे मुकालात हो, तो कम से कम नजरें मिला सकें और कह सकें कि मैंने सृष्टि पहले के मुकाबले और बेहतर बनाया। ....ताकि परमपिता परमेश्वर मन ही मन कह सकें कि इसीलिए तुम्हें भेजा था। तुम अपनी परीक्षा में पास हुए।

ज्योतिष उपाय और दिनचर्या

मैं गिनती के पाँच- छः उपाय में से दो- तीन उपाय ही हर किसी को बताता हूँ। कई बार किसी को एक ही उपाय बताता हूँ। लेकिन लोगों को आदत होती है भयंकर टाइप के उपाय सुनने की। ....तो कई बार लोग भरोसा नहीं करते मेरे बताये उपायों पर। मेरे कुछ ज्योतिष मित्र मुझे बोलते भी हैं कि मुझे लोगों को नग (रत्न) सुझाने चाहिए, ताकि वह मुझे गम्भीरता से लें या मेरे बताये उपाय करें। लेकिन मैं इन चक्करों में नहीं पड़ता। मुझे ये बात पहले दिन से पता थी कि अगर नग बेचने लग गया तो नग ही बेचता रह जाऊँगा। आध्यात्मिक यात्रा यातना में बदल जायेगी।

ऐसा नहीं है कि मैं नग सजेस्ट नहीं करता, लेकिन सबसे आखिरी में। मेरा पूरा जोर रहता है कि लोग सात्विक उपाय करें, क्योंकि उसके द्वारा आये बदलाव स्थायी होते हैं, सकारात्मक होते हैं।

देखिये न, ये इतना मुश्किल भी नहीं है। सूर्योदय के समय उठिये, सूर्य का उपाय हो जायेगा। तीन-चार किलोमीटर पैदल चलिये, मंगल का उपाय हो जायेगा। ज्यादा से ज्यादा मौन रहने की कोशिश कीजिये, बुध का उपाय हो जायेगा। अच्छी किताबें, अच्छे लोगों के सम्पर्क में रहिये, गुरु का उपाय हो जायेगा। घर में फूल लगाइये, शुक्र/ बुध का उपाय हो जायेगा। किसी गरीब के साथ या जो आपसे कमजोर है, उसके साथ दुर्व्यवहार मत कीजिये, शनि का उपाय हो जायेगा। रात्रि के पहले प्रहर यानी 6 से 9 के बीच सोने की कोशिश कीजिये या सिरहाने की तरफ एक मिट्टी के बर्तन में पानी रखकर सोइये, आदि।

इसी तरह के काफी आसान- आसान उपाय हैं, जो लोग बताने के बाद भी नहीं करते हैं। वहीं दूसरी तरफ जो करते हैं, उनमें से 80- 90% लोगों को जरूर फायदा होता है और कुछ एक मामलों में उन्हें उनकी उम्मीद से बढ़कर चीजें प्राप्त हुई हैं।

इस विषय को लिखने के दो उद्देश्य थे। पहला, अपनी दिनचर्या ठीक करने की कोशिश कीजिये और दूसरा, सात्विक उपाय करने की कोशिश कीजिये।

ज्योतिष यात्रा

ज्योतिष अध्ययन के शुरुआती सालों में जिस एक बात की तरफ मेरा बहुत ध्यान गया, वह बात ये थी कि यदि भविष्य में ऐसा हो कि आप बहुत बड़े ज्योतिषी बन गये और आपको सामने वाले की कुंडली के बारे में अच्छी और बुरी सब बातें पता चल जाएँ और वह व्यक्ति आपका बहुत जानने वाला हो या आपका बहुत चहेता हो, ऐसी स्थिति में उसके बारे क्या ज्योतिषी को बहुत बुरा लगता होगा?

लेकिन अब मुझे यह लगता है कि जब आप एक लम्बी ज्योतिषीय यात्रा कर लेते हैं, तो आपके अंदर अल्प मात्रा में ही सही आध्यात्मिकता का विकास भी हो जाता है। आप समझ जाते हैं कि हम सब यात्री हैं। सब की अपनी- अपनी यात्रा है, सब के अलग-अलग स्टेशन हैं। हाँ, यह सम्भव है कि हमारे कुछ सहयात्री हो सकते हैं, जो कुछ समय जीवन यात्रा में हमारे साथ रहें। लेकिन, कुछ समय बाद हम उनके साथ या वह हमारे साथ नहीं रहेंगे। ये अकाट्य सत्य है।

जीवन बहुत आसान है और सबसे कठिन भी। अगर आप जीवन में किसी से कोई उम्मीद रख रहे हैं, तो आप निश्चित तौर पर दुःखों को निमंत्रण दे रहे हैं। यहाँ तक कि अगर आप खुद से भी कोई उम्मीद रख रहे हैं, तो भी आप कभी न कभी दुःखी जरूर होंगे। ...क्योंकि आपका भविष्य सिर्फ आपकी मेहनत पर निर्भर नहीं करता। ऐसी बहुत सी सम्भावनाएँ हैं, जो खेल बना और बिगाड़ सकती हैं और जिन पर आपका रत्ती भर भी नियंत्रण नहीं है।

एक ज्योतिषी को बहुत जल्दी उस स्तर पर पहुँच जाना चाहिए, जहाँ पर न उसके लिए कुछ दुःख हो और न ही सुख हो। वरना वह अपनी कुंडली देखकर ही रोता रहेगा कि फलाना ग्रह यहाँ बैठा होता तो मैं ये कर लेता, ये ग्रह उच्च का होता तो मेरे पास ये होता, आदि-आदि। हर दिन मेरे पास कई कुंडली आती है, जिसमें मुझे लगता है कि यह चीजें इसके साथ बुरी हो सकती है, ...या ये चीजें अच्छी हो सकती हैं। मेरी हमेशा कोशिश रहती है कि मैं बस सामने वाले को एक दिशा दिखा दूँ, कुछ उपाय बता दूँ। उन्हें करना या न करना तो उसके ऊपर है।

....और हम ये भी उसे बता सकते हैं कि जो चीज आपको बुरी लग रही

है, अगर आप उसको थोड़ा सा घुमाकर देखेंगे तो आपको लगेगा कि यह जीवन की सबसे अच्छी घटना है। मेरा अपना इसमें यह मानना है कि जो बुरा वक्त होता है, वह आपकी जिंदगी का सबसे अच्छा वक्त होता है। ....क्योंकि उस वक्त आपको सब कुछ साफ- साफ दिख रहा होता है कि कौन आपके साथ है और कौन अपने खिलाफ है? आदि।

बुरे से बुरे योग के भी अपने फायदे हैं, अच्छे से अच्छे योग के भी अपने नुकसान है। अनपढ़ परिवार में दसवीं पास बच्चा भी कलेक्टर समझा जाता है और कलेक्टर परिवार में डबल एमए किया हुआ व्यक्ति भी अनपढ़ समझा जा सकता है।

रत्नों का बाजार

शीर्षक में बाजार शब्द इसलिए लिखा है, ताकि जितना हो सके आप इससे बचने या दूर रहने की कोशिश करें। अब विषय की ओर लौटते हैं। कुछ दिन पहले एक दोस्त को सुनहला चाहिए था। वह मैं अपने एक जानने वाले के पास खरीदने गया था, जहाँ रत्न बाजार से काफी कम कीमत पर मिल जाते हैं। वहाँ मेरी नजर इन बड़े- बड़े जरकनों (हीरे का उपरत्न) पर पड़ी और मैं खुद को रोक नहीं पाया। तस्वीर खिंचवाने से यही जादू भी है। शुक्र का असर आदमी को मंत्रमुग्ध कर देता है। फिल्मी दुनिया, नए कपड़े, परफ्यूम आदि इसके कारक हैं।

मैं जिस जानने वाले से रत्न खरीदता हूँ, उनकी तरफ से मुझे ये मशवरा हमेशा मिलता है कि आपको हर किसी को रत्न के लिए प्रेरित (रिकमेंड) करना चाहिए। ख़ैर, मैं पहले भी अंत में रत्न रिकमेंड करता था। पर, अब मैं सामने वाले के पूछने पर बता तो देता हूँ कि ये रत्न पहन सकते हैं, लेकिन अपनी तरफ से रिकमेंड नहीं करता ।

अब इसके बाजार वाले हिस्से पर थोड़ी बात करते हैं। रत्न की क्या कीमत होती है? यकीन मानिये, रत्न की कोई कीमत नहीं होती। मोती आपको 5-10 रुपये से लेकर 5000 तक का भी मिल जाएगा। हाँ, उनकी क़्वालिटी में फर्क होगा, लेकिन आप इसे कभी नहीं समझ पायेंगे। यही हाल दूसरे रत्नों का भी है ।

थोड़ा समझ लेते हैं, किस ग्रह या राशि के लिए कौन सा रत्न/ उपरत्न होता है? और उसके अलावा हम कौन सा अथवा क्या सबसे आसान उपाय कर सकते हैं?

12 राशियाँ होती हैं और नौ ग्रह होते हैं। हर राशि का एक स्वामी होता है। सूर्य और चन्द्रमा को छोड़कर हर ग्रह दो राशियों का स्वामी होता है। राहु केतु किसी राशि के स्वामी नहीं होते, ये छाया ग्रह हैं।

मेष/ वृश्चिक राशि के स्वामी मंगल होते हैं और मंगल का रत्न मूंगा होता है। वृष/ तुला राशि के स्वामी शुक्र होते हैं, शुक्र का रत्न हीरा और जरकन होता है। मिथुन/ कन्या राशि के स्वामी बुध होते हैं, बुध का रत्न पन्ना और ओनेक्स होता है।

कर्क राशि के स्वामी चन्द्रमा होते हैं, चन्द्रमा का रत्न मोती होता है। सिंह राशि के स्वामी सूर्य होते हैं, सूर्य का रत्न माणिक होता है। धनु/ मीन के स्वामी गुरु होते हैं, गुरु का रत्न पुखराज और सुनहला होता है। मकर/ कुम्भ राशि के स्वामी शनि होते हैं और शनि का रत्न नीलम, नीली होता है। राहु केतु के रत्न क्रमशः गोमेद और लहसुनिया होते हैं। इन रत्नों की जगह आप इन ग्रहों के कारक खोजकर उनके जरिये भी आसान उपाय कर सकते हैं ।

ज्यादातर ज्योतिषी जातक को पुखराज/ नीलम/ पन्ना/ माणिक पहनने की सलाह देंगे, या मुमकिन है ये भी कहें कि उनसे ही खरीद लो। ....क्योंकि इसमें उनकी कमाई अच्छी हो जाती है अर्थात प्रॉफिट/ मार्जिन अच्छा मिल जाता है। दूसरा, कुछ ज्योतिषी आपसे कहेंगे कि वह आपको कोई रत्न सिद्ध करके देंगे, जिसकी कीमत थोड़ी ज्यादा होगी। मुझे लगभग 18- 19 साल का अनुभव है और मेरे पास फलित ज्योतिष का सरकारी डिप्लोमा भी है। .....तो यकीन मानिये, अब तक की यात्रा में मुझे इससे बड़ी झूठी बात कोई और नहीं लगती।

अंत में, मैं यही कहना चाहूँगा कि जो सिद्ध पुरुष होगा या किसी चीज को सिद्ध करने की शक्ति रखता होगा, वह एक धागे को भी सिद्ध कर देगा और मुफ्त में आपको देकर चला जायेगा।

ग्रुप इवेंट (सामूहिक कार्यक्रम) और ज्योतिष

अक्सर लोग सवाल (कुतर्क) करते हैं कि एक ही हॉस्पिटल में एक ही वक्त पर पैदा होने वाले दो बच्चों की किस्मत एक जैसी क्यों नहीं होती है? तो जवाब है कि दोनों बच्चों की देश, काल, परिस्थिति अलग- अलग होती है। अगर वह अलग- अलग माँ- बाप के हैं तो भी और अगर वो जुड़वाँ हैं तो भी। क्योंकि उनमें एक छोटा भाई है, एक बड़ा भाई है। एक छोटा भाई है तो एक बड़ी बहन आदि होंगे और देश, काल, परिस्थिति के अलावा हर 13- 14 मिनट के अंतराल में नवमांश कुंडली भी बदल जाती है। ....और वास्तविक फल नवमांश से ही पता चलते हैं।

वैसे तो ऐसे लोगों को मना (इग्नोर) कर देना चाहिये। मगर फिर भी, कभी मन हो तो उनसे ये जरूर पूछना चाहिए कि जब किसान सौ बीज लगाता है, समान तरीके से ख़्याल रखता है, तो हर बीज एक जैसा ही अंकुरित होकर, एक जैसा फल क्यों नहीं देता?

ये प्रस्तावना जरूरी थी ताकि समझ में आये कि हर व्यक्ति/ पौंधा/ जंतु/ कीट- पतंगा आदि एक अलग ही दुनिया (देश, काल, परिस्थिति) में यात्रा कर रहा होता है, जिसका दूसरे से लेना- देना है भी और नहीं भी। सबकी अपनी- अपनी यात्रायें हैं, अपनी- अपनी उपलब्धियाँ, अपनी-अपनी जीत और अपनी- अपनी हार भी है।

अब सवाल ये है कि जो ग्रुप इवेंट या सामूहिक कार्यक्रम होते हैं, (जैसे किसी जगह अनुष्ठान हो रहा है, किसी जगह राम कथा हो रही है, किसी जगह विवाह कार्यक्रम आदि है) तो वहाँ इतने सारे लोग आए होते हैं, तो क्या सभी की कुंडली में वहाँ आने का योग मौजूद होता है?

मैं इसी विषय पर अपने कुछ विचार रखना चाहता हूँ। हम इसे इस तरह का एक उदाहरण लेकर समझते हैं कि अगर कोई विवाह कार्यक्रम है और वहाँ 10- 15 मेहमान आए हैं तो जाहिर सी बात है कि अगर वहाँ लड़की/ लड़के की शादी है तो उसके सारे रिश्तेदार अलग- अलग होंगे। सबको अलग- अलग तवज्जो मिलेगी। वह अलग- अलग देश से आये होंगे, अलग- अलग काल से आये होंगे और

अलग- अलग परिस्थिति में आये होंगे । हो सकता है कुछ लोग मजबूरी में आए हो, कुछ लोग घूमने के उद्देश्य से आये हों, कुछ लोग विवाह अटेंड करने के ही उद्देश्य से आए हों। कुछ लोग इसलिए आ गये हों कि खाली थे तो चलते हैं। कुछ लोग इस उद्देश्य में आ गए होंगे कि वहाँ से कुछ उपहार मिल जाएगा और ये लालच उन्हें विवाह कार्यक्रम तक ले आया होगा। कुछ लोग ये देखने आ गए होंगे कि व्यक्ति विवाह में कितना खर्चा करता है? थोड़ा बारीकी से अध्ययन करेंगे तो आप पायेंगे कि हर व्यक्ति की परिस्थिति अलग- अलग होगी तो फलादेश अलग होना स्वाभाविक ही है।

मैं इसी तरह के एक ग्रुप इवेंट पर उसका जिक्र करना चाहता हूँ। ये थोड़ा गंभीर मुद्दा है। अगर आपको किसी बात का बुरा लगे तो आप मुझे माफ कीजियेगा।

जैसे हम देखते हैं कि प्राकृतिक आपदाएं आती हैं और लोग कहते हैं कि उस प्राकृतिक आपदा में 100 लोगों की जीवन लीला समाप्त हो गई, तो क्या सब की कुंडली में मृत्यु योग था?

इसे हमें इस तरह से समझना होगा कि जीवन में कई तरह के मृत्यु तुल्य कष्ट आते हैं। कई बार वह घटित थोड़ा ज्यादा तीव्रता से होते हैं, तो व्यक्ति की जीवन लीला समाप्त हो जाती है। कई बार व्यक्ति पर उसका असर तो पड़ता है, मानसिक या शारीरिक रूप से नुकसान भी होता है, उसकी हालत भी खराब होती है, लेकिन बच जाता है। किसी प्राकृतिक आपदा को उदाहरण के तौर पर देखें कि अगर कहीं बाढ़ आई तो जरूरी नहीं है कि हर किसी की जीवन लीला उसी वजह से समाप्त होगी। कुछ लोग पानी में डूबने के कारण प्राण खोयेंगे, कुछ लोग किसी पत्थर से टकराकर और कुछ लोग डर के मारे अपने प्राण छोड़ देंगे। संभव है कुछ लोग सर में चोट लगने के कारण प्राण छोड़ सकते हैं, कुछ लोगों के फेफड़ों में पानी भर सकता है, कुछ लोग भूख- प्यास की वजह से जीवित नहीं बच पायेंगे।

अगर आप थोड़ा भी किसी घटना का बारीकी से अध्ययन करेंगे तो आप पायेंगे कि अगर कोई ग्रुप-इवेंट या कोई सामूहिक कार्यक्रम हो रहा है, तो उसमें आये हुए प्रत्येक व्यक्ति के वहाँ पहुँचने का कारण बिल्कुल अलग- अलग होगा। वैसे शायद इसे मेदिनीय ज्योतिष का अध्ययन करके और बारीकी से समझा जा सकता है। मगर मैंने जातक ज्योतिष के कुछ उदाहरणों के जरिये इस पर विचार रखने की कोशिश की है। ऐसा भी सम्भव है कि कुछ लोगों को ये बातें बिल्कुल

निराधार लगें और कुछ लोगों को ये बातें बहुत रोचक लगें। मैं खुद दूसरी श्रेणी का व्यक्ति हूँ। मुझे ग्रुप इवेंट्स का अध्ययन करना ज्यादा जटिल और ज्यादा रोचक लगता है।

क्या राहु के उपाय असम्भव हैं ?

पिछले लेख में लगभग सभी ग्रह के आसान उपाय बताए थे। वो उपाय जिन्हें आप दिनचर्या का हिस्सा बना सकते हैं, लेकिन उसमें राहु और केतु के उपाय लिखना मैं भूल गया था। तो एक व्यक्ति ने फेसबुक कमेंट बॉक्स में उन उपायों को जानना चाहा। मैंने उनसे कहा- "राहु का सबसे आसान उपाय है कि इंटरनेट से दूरी बना ली जाये, साथ ही इलेक्ट्रॉनिक गैजेट से भी दूरी बना ली जाये। कुछ समय एकांतवास में रहा जाये।"

...तो उस व्यक्ति ने कहा कि यह होना संभव है आज के दौर में? ऐसा कोई नहीं कर सकता।

मैंने उसे बताया कि मैं छह- सात महीने पहले फीचर फोन प्रयोग करता था। इसमें न व्हाट्सएप था न ही इंटरनेट। मैं अक्सर ऐसा करता हूँ या यूँ कह लीजिये कि परिस्थिति ऐसी बन जाती है। जीवन में हर चीज से कुछ- कुछ वक्त का ब्रेक लेना हमेशा जरूरी होता है। ...क्योंकि इससे जब लौटते हैं तो दुगनी ताकत के साथ लौटते हैं।

अब सवाल आता है कि क्या इंटरनेट और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को छोड़ देना इतना मुश्किल है? तो उसका जवाब कुछ ऐसा है कि "बहुत आसान है। जिस व्यक्ति को लगता है कि उसकी परेशानी बड़ी है और इंटरनेट छोटी चीज है, वह उसे छोड़ सकता है। जिस व्यक्ति को लगता है कि इंटरनेट बड़ी चीज है और परेशानी छोटी है, वह नहीं छोड़ सकता। तय आपको करना होगा कि आपके लिए जीवन में जीवन महत्वपूर्ण है या कुछ और?

राहु है महत्वकांक्षा, भौतिकवाद का प्रतीक और इंटरनेट, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण उस महत्वकांक्षा में उत्प्रेरक का कार्य करते हैं। आपकी महत्वकांक्षा को बढ़ा देते हैं। आप इंटरनेट में नई- नई जानकारियाँ पढ़ते हैं, फेसबुक इंस्टाग्राम में लोगों को नए- नए उपहार खरीदते हुए देखते हैं, शॉपिंग वेबसाइट को देखते हैं तो जो कोई अच्छी चीज आप देखते हैं स्वतः ही उसकी तरफ आकर्षित हो जाते हैं । इस तरह आप जाने- अनजाने राहु के प्रभाव आ जाते हैं।

लेकिन जब आप कुछ वक्त के लिए इस सब से कट जाते हैं तो आप खुद

के साथ होते हैं और उस वक़्त आप विचार कर सकते हैं कि आपका जन्म क्यों हुआ है? क्या सिर्फ ये सब चीजें ही जीवन के लिए जरूरी है? क्या रुपया, पैसा, शोहरत, बड़ा घर, बड़ी गाड़ी इतनी ही जरूरी है जीवन के लिए? या जीवन के लिए खुशी जरूरी है, शान्ति जरूरी है, सुकून जरूरी है।,

यह सब आप तभी आप सोच पाते हैं, जब आप समाज से कटते हैं। क्योंकि जब समाज में आप रहते हैं, तब तो आप समाज के जैसे ही होते हैं। जैसा बाजार आपको नचाना चाहता है, आप नाच रहे होते हैं। अगर आप राहु के उपाय करना चाहते हैं, तो आप धीरे- धीरे इसकी शुरुआत कीजिये। पहले 1 दिन में एक घंटा बिना फोन के रहिए, फिर अगले दिन उसे 2 घंटा कीजिये। ऐसे ही तीसरे दिन 3 घंटा कीजिए। इस तरह आप उस स्थिति में पहुँच जायेंगे, जहाँ एक दो महीने फोन या इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से दूर रहना आपके लिये छोटी सी बात होगी।

अंत में, मैं फिर से अपनी बात दोहराता हूँ "आपको तय करना है कि आपकी परेशानी ज्यादा बड़ी है या उसके उपाय"।

ज्योतिष, कमजोर राहु और जीवन

रचनात्मकता यूँ तो चन्द्रमा की देन है, मगर राहु भी इसके लिए काफी हद तक जिम्मेदार होता है। राहु के कारण ही व्यक्ति वाकपटु होता है, प्लानिंग में माहिर होता है, साथ ही जोड़- तोड़ करके अपना रास्ता बनाने की काबिलियत आदमी को राहु से ही मिलती है।

राहु टेक्नालॉजी का भी कारक ग्रह है। जो लोग कुछ ही मिनटों में लैपटॉप, कंप्यूटर, केलकुलेटर, टाइपराइटर आदि को ऑपरेट करना सीख जाते हैं, वह सभी राहु प्रधान होते हैं। अब सवाल आता है कि हम कैसे पता करें कि व्यक्ति का राहु कमजोर है? अगर आप आधुनिक समय की बात करें, तो राहु के कमजोर होने के प्रमुख लक्षण जो मुझे लगते हैं, वह यह है कि जैसे कोई व्यक्ति ह्वाट्सएप से कोई मैसेज उठाता है और अब देखते हैं कि व्हाट्सएप में जो मैसेज होते हैं, वह डॉट लगे हुए हैं, ताकि वह बोल्ड दिखें। अब व्यक्ति अगर सीधा- सीधा ही उसे वैसे ही पेस्ट करके फेसबुक में डाल देता है, तो आप मान सकते हैं कि उस व्यक्ति का राहु कमजोर है।

कई बार हम देखते हैं कि हम कहीं से कोटेशन उठाते हैं। अगर व्यक्ति वह ज्यों की त्यों कोटेशन फेसबुक पर डाल दे रहा है और उसमें कुछ भी बदलाव (मॉडिफाई) नहीं कर पा रहा है, तो हम कह सकते हैं कि उसका राहु भी कमजोर है। कई लोग होते हैं जो महँगे– महँगे फोन रखते हैं, लेकिन उन्हें उसके पूरे फीचर जीवन में कभी नहीं पता चल पाते और कई व्यक्ति ऐसे होते हैं जिनके पास खुद तो बड़ा फोन नहीं होता, लेकिन वह दूसरों के फोन देख कर या नेट से जानकारी इकट्ठा करके सब कुछ पता कर लेते हैं। जिन लोगों के पास टेक्नोलॉजी की सारी जानकारी होती है, ऐसे व्यक्तियों का मान सकते हैं कि उनका राहु अच्छा है और जिस व्यक्ति को टेक्नोलॉजी की नॉलेज कम है, आप मान सकते हैं कि उसका राहु कमजोर है।

राहु को बेसिकली प्रोग्रेसिव माइंड कह सकते हैं, जो नए नियम बनाता है या यूँ कह लें कि अपने नियम बनाता है। दूसरी तरफ जो जड़ों से जुड़ा रहता है, अपनी पुरानी परंपरा और सिद्धांतों को अपने साथ लेकर चलता है वह केतु है।

ऐसा बिल्कुल नहीं है कि जिसका राहु अच्छा होता है, वह राजा बनता है। ...या ऐसा भी नहीं है कि जिसका केतु अच्छा होता है, वह राजा बनता है। कई बार आप देखते हैं कि जो पुरानी परंपरा को फॉलो करने वाले लोग हैं, उनके घर में राहु नौकरी कर रहा होता है और कई बार नये बिजनेस आइडिया के साथ एक व्यक्ति नया स्टार्टअप खोल देता है और दुनिया बदल देता है। वही राहु है।

कहने का मतलब यह है कि व्यक्ति कैसा जीवन जियेगा? कितना सफल होगा? उसका फैसला नौ के नौ ग्रह करते हैं। किसी एक ग्रह के आधार पर राय बना लेना सबसे बड़ी बेवकूफी है।

मुझे लगता है कि जातक को मौलिक रहते हुए अपनी नजरों में सफल होना चाहिए, किसी से दौड़ नहीं करनी चाहिए। बाकी किसी के लिए जीवन में शांति महत्वपूर्ण है, तो किसी के लिए पैसा और किसी के लिए शोहरत है। फिर भी, आखिर में आपने देखा होगा कई सारे लोग सब कुछ पाकर भी नाकामयाब ही रहते हैं और कुछ फकीर होते हैं जिनके पास कुछ नहीं होता, मगर उनके पास सब कुछ होता है।

ज्योतिष और जातक

ज्योतिष से जुड़े होने का सबसे बड़ा फायदा ये है कि आपको हर दिन बहुत से लोगों से मिलने, उनके बारे में जानने और बातचीत करने का मौका मिलता है। आपको हर दिन इंद्रधनुष से लोग, इंद्रधनुष सी समस्याओं के साथ मिलते हैं और यकीन मानिए आप कितने भी बड़े ज्योतिषी बन जायें, हफ्ते दस दिन में एक ऐसी कुंडली जरूर आती है कि आपको लगता है "अभी तो कुछ भी नहीं आता। फिर से शून्य से शुरुआत करनी पड़ेगी।"

अभी तक कि बात करूँ तो जातकों के मामले ज्योतिष एकदम उल्टा चलता है। जो जातक शुल्क देता है, उसके गिनती के दो- तीन सवाल होते हैं। हद से हद चार और जो जातक निःशुल्क दिखवाना चाहता था, उसके पास दर्जनों सवाल होते हैं। एक और तरह के जातक होते हैं जो आपके पास आते हैं, सवाल पूछते हैं और फिर कुछ ही घण्टे बाद वो लोग वही सवाल दूसरे, तीसरे और चौथे ग्रुप में भी पूछते हुए पाये जाते हैं और सदा ही कन्फ्यूजन में रहते हैं।

कुछ जातक कहते हैं, अभी देख लीजिये, बहुत आवश्यक (अर्जेंट) हैं। उन्हें समझना होगा कि ज्योतिष में कुछ अर्जेंट नहीं होता। कुछ भी जादू/ चमत्कार नहीं होता। अगर आज कुंडली दिखायी, कल से उपाय करने शुरू किए तो भी 3- 4 महीने या कम से कम 15 दिन लगेंगे, स्थिति बदलने में।

कुछ लड़के अप्सरा जैसी लड़की से शादी करने का सपना देखते हैं। कुछ लड़कियाँ किसी सरकारी अधिकारी से शादी करने की इच्छा के साथ आती हैं। ....तो उन्हें ये भी समझना चाहिये कि जिस तरह वो खुद से साढ़े उन्नीस वालों को तवज्जो नहीं दे रहे हैं, तो क्या उन्हें वैसे लोग देंगे?

एक तरह के जातक और होते हैं जो दिया हुआ समय याद नहीं रखते और उल्टा आपसे कहते हैं "आपने याद क्यों नहीं दिलाया?" मतलब हद है, जिसको उपाय चाहिये वही तो याद दिलाएगा या नहीं? एक होती है बहरूपिया बिरादरी, जो कमेंट बॉक्स में या मैसेज में आपसे कहती है "ज्योतिष-वोतिष कुछ नहीं होता, सब ढोंग है। हिम्मत है तो मेरा भविष्य देखकर बताओ।" उनसे कहिये, जब सब ढोंग ही है तो क्यों इन चक्करों में पड़े हो भाई? चिल करो ना।

सबसे अंत में जिस तरह के जातकों से ज्योतिष अक्सर टकराता है, वह उस तरह के जातक होते हैं जो सामर्थ्य तो रखते हैं चम्मच जितना और चाहते हैं कि उस चम्मच में पूरा सागर उतर आये। उदाहरण के लिए कोई दसवीं पास लड़का या व्यक्ति है, वह सोचता है कि कोई उसे CEO बना दे। कोई व्यक्ति है जिसने कभी रामायण (मुहल्ले की रामलीला) में भी कोई किरदार नहीं निभाया और उसे ऑस्कर की तलाश है। कोई व्यक्ति जिसका घर खर्च बड़ी मुश्किल से चल रहा है और वह चाहता है कि वह महल में रहे, कोई व्यक्ति अपने स्वास्थ्य को लेकर परेशान है, वो किसी खिलाड़ी की तरह फिट होना चाहता है, लेकिन सिगरेट/ शराब आदि नहीं छोड़ना चाहता। जबकि कहा भी गया है-

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥
(उद्यम से ही कार्य सफल होते हैं, न कि मनोरथों से।
ठीक उसी प्रकार, जैसे सोये हुए शेर के मुख में हिरण नहीं आते।)

नोट :- जिंदगी कर्म प्रधान है। हर कुंडली में कम से कम पाँच राजयोग होते ही हैं किसी ना किसी तरह से। लेकिन लोगों को याद रखना चाहिए कि राजयोग उन्हीं के फलित होते हैं, जो पुरुषार्थ करते हैं ।

बुधादित्य योग और ज्योतिष

जिस प्रकार कालसर्प योग से जातकों को डराया जाता है और पैसा बनाया जाता है, ठीक उसी प्रकार बुधादित्य योग से जातकों को खुश करके पैसा बनाया जाता है। देखा जाए तो कालसर्प योग उतना बुरा नहीं है, जितना बताया जाता है। बड़े- बड़े सैन्य अधिकारियों और प्रशासनिक अधिकारियों की कुंडली में प्रायः यह योग पाया जाता है और बुधादित्य योग उतना अच्छा नहीं है, जितना बताया जाता है। बुधादित्य योग को समझने के लिए हम सबसे पहले ग्रहों की चाल को समझेंगे। हर महीने सूर्य की राशि बदलती है। ठीक उसी तरह शुक्र लगभग 23 दिन और बुध भी लगभग 14 दिन में अपनी राशि में बदलाव करते हैं। जिसके परिणाम स्वरूप आप देखते हैं कि अधिकतर कुंडली में सूर्य, बुध और शुक्र आस-पास ही होते हैं। ....तो ऐसे मामलों में कई बार बुधादित्य योग का बन जाना स्वाभाविक है ।

अगर आप मोटे- मोटे तौर पर कहें तो 70- 80% कुंडलियों में बुधादित्य योग देखा गया है। बुधादित्य योग का अच्छा होना या अच्छे फल देने इस बात पर भी निर्भर करता है कि वह कौन से भाव में बन रहा है। महत्वपूर्ण बात ये भी है कि नवमांश कुंडली और षोडश वर्ग कुंडलियों में सूर्य और बुध की क्या स्थिति है? सिर्फ जन्म कुंडली में उसकी स्थिति अच्छी है, सिर्फ इससे कुछ नहीं होगा। मैं हमेशा कहता आया हूँ, आप किसी एक के आधार पर कोई धारणा ना बनायें और उससे होने वाले फलादेश से भी बचें। कुंडली (जीवन) किसी एक अच्छे ग्रह या एक बुरे ग्रह पर निर्भर नहीं करती। एक सफल, संतोषी और आनंदमय जीवन के लिए हर ग्रह का थोड़ा- थोड़ा अच्छा होना जरूरी है।

जिस तरह सिर्फ पेट भर खीर/ रायता खा लेने भोजन अधूरा है, आपको पूरी, चावल, दाल, चटनी थोड़ी- थोड़ी हर चीज भोजनथाल में चाहिए होती हैं। ठीक उसी तरह सिर्फ एक योग/ ग्रह को आधार में रखकर जीवन सुखद होगा, नहीं कहा जा सकता। कई बार आपने देखा होगा कि व्यक्ति बाहर से बहुत चमकता हुआ सोने की मोटी चेन पहना हुआ दिखता है, मगर गौर करने पर पता लगता है आर्टिफिशियल गोल्ड है या असली होने की सूरत में उस चेन की वजह से व्यक्ति

की नींद हराम हो गयी है। अब उसे हर वक़्त खुद से ज्यादा उस सोने की मोटी चैन की चिन्ता रहती है। ...यानी चेन मिल गयी और चैन चला गया।

ज्योतिष और अकाल मृत्यु (आत्महत्या)

इस विषय पर एक लम्बे वक़्त से लिखने का मन था, मगर मेरी कोशिश रहती है कि ऐसे मुद्दों पर कम या ना ही लिखा जाये तो बेहतर। क्योंकि जाने-अनजाने में भी इस तरह के नकारात्मक शब्द किसी को भी लिखने, बोलने या सोचने नहीं चाहिए।

ज्योतिष में ज्यादातर लोग आत्महत्या के लिये कमजोर चन्द्रमा को दोषी मानते हैं। उनका तर्क होता है कि कमजोर मनःस्थिति वाला ऐसे कदम उठाता है। मैं इस बात से पूरी तरह इत्तेफाक नहीं रखता। सोचिये, जो व्यक्ति इतनी कमजोर मनस्थिति वाला है कि सकारात्मक नहीं सोच पा रहा, क्या वह व्यक्ति आत्महत्या जैसा बड़ा कदम उठाएगा? मैं हमेशा कहता हूँ, किसी भी घटना के घटित होने का जिम्मेदार एक ग्रह नहीं होता। एक ग्रह के आधार पर फलादेश करने वाला या तो स्वयं मूर्ख है या सामने वाले को बना रहा है।

आपने देखा होगा आत्महत्याओं के मामले में कई बार ऐसे लोग होते हैं जो अपने क्षेत्र में अच्छा कर रहे होते हैं या कर चुके होते हैं या भी सम्पन्न घरों से होते हैं। क्योंकि जो कमजोर है, गरीब है, उसके जीवन में तो इतनी उलझनें है कि उसके पास समय ही नहीं कि इस बारे में सोचे। ऐसा कोई कदम उठाये। बहुत से लोगों में ये भ्रांति है कि चन्द्रमा आत्महत्या के लिए जिम्मेदार है। चन्द्रमा मन का कारक है, इसलिए ये एक आम धारणा बनी हुई है। जबकि सच्चाई यह है कि नौ के नौ ग्रह इस तरह की घटना के लिए जिम्मेदार हो सकते हैं।

कुछ काल्पनिक उदाहरण के जरिये यह समझने की कोशिश करते हैं। उदाहरण के तौर सूर्य से शुरू करते हैं। एक प्रशासनिक अधिकारी है, जो घूंस लेते पकड़ा गया या कहीं किसी छुटभइये नेता ने उसे थप्पड़ लगा दिया। सोचिये, क्या इसमें चन्द्रमा का प्रत्यक्ष रूप से लेना देना है? लेकिन कई बार ऐसे मामलों में लोग आत्मघाती कदम उठा लेते हैं । मंगल का उदाहरण देखिये, एक खिलाड़ी है जो लगातार तरक्की कर रहा है। इस वजह से घर- परिवार को वक़्त नहीं दे पा रहा है या और आगे बढ़ने के लिए नशा करने लगा। नशे की लत लग गयी, इस वजह से करियर ग्राफ गिरने लगा। लोगों की नजरों में भी पहले सी इज्जत नहीं रही और

अगर वो कोई आत्मघाती कदम उठा ले तो चन्द्रमा इसमें भी सीधे- सीधे जिम्मेदार नहीं है।

बृहस्पति (गुरु) का उदाहरण देखते हैं। एक शहर के इज्जतदार अध्यापक हैं, जिनकी शहर में बहुत इज्जत है। बड़े से बड़ा व्यक्ति उन्हें झुककर प्रणाम करता है। अगर किसी बच्चे ने उन पर फीस चोरी जैसा छोटा सा भी इल्जाम लगा दिया या उन पर किसी ने सरकारी योजना के पैसे में गबन का इल्जाम लगा दिया या उनकी संतान ने उनकी इच्छा के विरुद्ध शादी कर ली। (मेरे हिसाब से सबको अपनी मर्जी से अपनी जिंदगी के फैसले लेने का अधिकार है) जिससे उनकी वर्षों की प्रतिष्ठा धूमिल हो गयी, तो क्या ये सम्भव नहीं कि वो कोई आत्मघाती कदम उठा लें और इसमें भी चन्द्रमा सीधे- सीधे जिम्मेदार नहीं है।

शायद ऐसे कई मामले आपने अपने आस-पास भी देखें होंगे। तो ज्योतिष में रुचि रखने वाले लोगों से मेरा निवेदन है कि अगर वो ज्योतिष सीखना चाहते हैं तो किसी भी घटना का ऊपर- ऊपर से अध्ययन ना करें बल्कि उसकी जड़ में जाने की कोशिश करें। देखें उस जड़ को पानी कहाँ से कैसे मिल रहा है?

ज्योतिष मित्र और भाग्योदय

हर मनुष्य के पास सीमित क्षमताएँ होती हैं। सबके अपने गुण- अवगुण होते हैं। अगर कोई सज्जन है तो चाह करके धूर्त नहीं बन सकता और अगर कोई धूर्त है तो चाह कर भी कभी सज्जन नहीं बन सकता। आज मैं इसी के बारे में कुछ बात करूँगा कि आप किस तरह के लोगों से मित्रता रखकर सफल हो सकते हैं?

उदाहरण के तौर पर अगर आपकी कुंडली में गुरु कमजोर है तो आप पढ़े-लिखे बुद्धिजीवी वर्ग से मित्रता करके अपना गुरु बिना किसी उपाय के सुधार सकते हैं। अगर आपकी कुंडली में मंगल कमजोर है तो आप किसी खिलाड़ी या शहर के किसी दबंग व्यक्ति से मित्रता करके अपना मंगल सुधार सकते हैं। अगर आपकी कुंडली में बुध कमजोर है तो आप व्यापारियों से मित्रता करके अपने बुध को मजबूत कर सकते हैं।

ठीक इसी तरह, जो भी ग्रह जिस तरह के व्यक्ति से संबंधित है, आप उस तरह के व्यक्ति से मित्रता करके अपने उस ग्रह के प्रभाव को बढ़ा सकते हैं, वो भी बिना उपाय किये।

यूँ तो आपको ये उपाय बहुत आसान लग रहा होगा, लेकिन यकीन मानिए यह इतना आसान उपाय नहीं। क्योंकि मित्रता करना तो आसान है लेकिन उसे जारी रखने के लिए आपको मित्रता दोनों तरफ से निभानी पड़ती है। अगर आप मित्रता करके निभाने में कमजोर हैं तो संभावना है कि चंद्रमा और बुध आपकी कुंडली में पीड़ित हो सकते हैं।

दूसरा महत्वपूर्ण पहलू ये भी है कि हर किसी व्यक्ति का एक औरा यानी आभा मण्डल (प्रभाव क्षेत्र) होता है, जिसमें वो हर किसी को आसानी से आने नहीं देता। संत कभी डाकुओं को अपने समीप नहीं आने देंगे और न ही डाकू चाहेंगे कि कोई संत उनके बीच आकर रहे या मित्रता करे।

फिर भी मैं कई जातकों को इस तरह की सलाह जरूर देता हूँ। उन्हें इसमें दिक्कतें भी आती है क्योंकि उनका मन ही इसकी इजाजत नहीं देता। वो अपने मन को ही इसके लिए तैयार नहीं कर पाते। इसका एक आसान उपाय भी है। अगर कोई जातक इस उपाय को करना चाहता है और नहीं कर पा रहा है तो जरूरी नहीं

वो किसी हमउम्र से ही मित्रता करे। वो अपनी उम्र से बहुत कम या बहुत ज्यादा वालों की भी तलाश कर सकता है।

करके देखिएगा, बहुत असरदार उपाय है और कहावत भी तो है "खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है"।

राहु, केतु और ज्योतिष

लगभग सभी ज्योतिषी राहु, केतु को बुरा बताते हैं और उन दोनों के नाम से जातक को खूब डराते हैं। लेकिन इस बात पर मेरे विचार कभी उनसे नहीं मिलते। राहु आपको डिप्लोमेटिक/ चतुर/ प्रैक्टिकल बनाता है, जिसकी वजह से आप जिंदगी जीना सीखते हैं। दूसरी तरफ केतु बिना कुछ सोचे बिना ध्यान भटकाये लक्ष्य की ओर ले जाना सिखाता है और जब दोनों का मिलन होता है तो आदमी तरक्की के सातवें आसमान को छू लेता है।

अगर हम पुराणों से भी इस प्रसंग को उठा कर देखे तो आप पायेंगे कि समुद्र मंथन के समय जब देवता और दैत्यों ने बराबर मेहनत की, यहाँ तक कि दैत्यों ने ज्यादा मेहनत की। क्योंकि वो वासुकी नाग के फन की तरफ थे और लगातार हताहत होने के बावजूद हिम्मत नहीं हार रहे थे। लेकिन जब अमृत निकला तो देवताओं ने छल से अमृत ले लिया और खुद पी लिया।

मगर इस दौरान सबसे ज्यादा जाग्रत दैत्य की वजह से ही यह भेद खुला, जो दैत्य उसके बाद राहु और केतू बना। दैत्य खराब थे या देवता अच्छे थे? मैं उन सब में नहीं पड़ना चाहता। मेरी नजर में हर कोई अपनी-अपनी जगह सही होता है।

मेरा अंत में बस यही कहना है कि राहु और केतु से मत डरिये, लेकिन जो डराये उससे जरूर डरिये।

जातक को हैरान कैसे करें?

कोशिश कीजियेगा कि यहाँ बतायी गई बातें आप कभी उपयोग में न लायें। ये बस जागरूक करने के उद्देश्य से बताई जा रही हैं ताकि कोई आपको हैरान न कर सके।

चन्द्रमा की स्थिति से आप जातक की राशि बता सकते हैं। जिस नम्बर पर चंद्रमा होगा, वही जातक की राशि होगी। उसी के जैसा उसके स्वामी के जैसा जातक का स्वभाव भी होगा। सूर्य की स्थिति देखकर आप जन्म का समय और महीना बता सकते हैं। केंद्र में सूर्य होने पर जातक का जन्म सुबह 6 से 8 के आस-पास होगा। बारहवें घर में सूर्य होने पर जातक का जन्म 8 से 10 के आस-पास होगा। इसी तरह लगभग हर दो- दो में सूर्य दाहिनी तरफ जाता रहेगा। महीना बताने के लिए कुंडली में सूर्य जिस राशि में होगा, उसी भारतीय महीने में जातक का जन्म हुआ होगा। जैसे चैत्र (मार्च- अप्रैल), वैशाख (अप्रैल- मई), ज्येष्ठ (मई- जून), आषाढ़ (जून- जुलाई), श्रावण (जुलाई-अगस्त), भाद्रपद (अगस्त- सितम्बर), आश्विन (सितम्बर-अक्टूबर), कार्तिक (अक्टूबर- नवम्बर), मार्गशीर्ष (नवंबर-दिसंबर), पौष (दिसंबर- जनवरी), माघ (जनवरी- फरवरी), फाल्गुन (फरवरी-मार्च)।

सूर्य और चन्द्रमा की स्थिति देखकर जन्म पूर्णमासी के आस- पास हुआ है या अमावस्या के पास, ये पता लग जाता है। दोनों एक दूसरे से सात घर दूर हों तो पूर्णमासी का जन्म, साथ हों तो अमावस्या का जन्म होता है। इसी तरह एकादशी, द्वादशी तिथि का अनुमान भी लग जाता है। शनि की स्थिति देखकर आप जातक की उम्र का पता लगा सकते हैं। वर्तमान में शनि जिस राशि में है और कुंडली में जिस राशि में, वहाँ तक दो- दो साल जोड़िये और उसमें एक- डेढ़ साल बढ़ा दीजिये। वही जातक की उम्र होगी। कई बार 1 साल के जातक, 30 साल के जातक और 60 साल के जातक में शनि की स्थिति एक सी होती है तो उसके लिए आपको अध्यन करना होगा।

शनि, राहु, केतु जिस जगह होते हैं, उस भाव के प्रति विरक्ति (वैराग्य) पैदा करते हैं। चन्द्रमा जिस भाव में होता है, जातक उसी विषय में सबसे ज्यादा

सोचता है। क्योंकि चन्द्रमा मन का कारक होता है।

इस तरह आप जातक की राशि, जन्म समय, जन्म का महीना, यहाँ तक कि दिन भी बता सकते हैं । जातक के मन में क्या चल रहा है और किस चीज के प्रति उसका रवैया उदासीन है? ये भी कई बार आसानी से जाना जा सकता है।

सामुद्रिक शास्त्र और फलादेश

सामुद्रिक शास्त्र यानी शरीर का हाव- भाव, चेहरा देखकर, लक्षण देखकर, शरीर की बनावट देखकर, किसी के बारे में फलादेश करना। यह बहुत ही आसान तरीका है। किसी के बारे में फलादेश करने का और इसके लिए आपको न कुंडली की जरूरत है, न उसका हाथ देखने की जरूरत है। लेकिन यह उतना ही कठिन भी है, क्योंकि इसके लिए आपको बहुत ज्यादा अभ्यास की जरूरत होती है।

जितना मैं समझ पाया हूँ, सामुद्रिक शास्त्र निर्भर करता है दो चीजों पर। पहले भाग में आप यह देखिए कि व्यक्ति का चेहरा किस जानवर से मिलता-जुलता है। उदाहरण के तौर पर शेर से, बंदर से, लोमड़ी से, तोते से, भैंस से या किसी अन्य जानवर से। उसका चेहरा जिस जानवर से मिलता जुलता होगा, आप पायेंगे कि उसके लक्षण भी काफी हद तक उसी जानवर से मिलते- जुलते होंगे। फिर इसके बाद एक और पायदान है। उसमें जब आप किसी व्यक्ति का चेहरा देखते हैं तो आप ये समझने की कोशिश कीजिये कि उसका चेहरा आपके किसी दोस्त से या किसी रिश्तेदार से मिल रहा है और जैसे आपके दोस्त या रिश्तेदार के गुण होंगे, वैसे ही उस व्यक्ति के गुण होने की संभावना भी रहती हैं।

कई बार तो आप यकीन नहीं करेंगे कि अगर उस रिश्तेदार के दो बच्चे हैं तो उस व्यक्ति के भी दो ही बच्चे होते हैं। अगर बड़ी बेटी, छोटा बेटा या बड़ा बेटा-छोटी बेटी है तो न मालूम कैसे? मगर ये बात भी कई बार सटीक बैठ जाती है।

ऊपर लिखी हुई बात सौ फीसदी सही है, आजमाई हुई बात है। आप भी कोशिश कीजिये, थोड़ी मेहनत कीजिये। हर किसी को गौर से देखिये, उसके जैसे तीन- चार लोगों पर शोध कीजिये। मुझे यकीन आपको बेहतर परिणाम मिलेंगे। कई बार तो आप इस विद्या का प्रयोग करके धूर्त लोगों को दूर से ही पहचान सकते हैं और अपना रास्ता पहले ही अलग करके उनसे बच सकते हैं।

ज्योतिष विज्ञान, ज्योतिषी कलाकार

ज्योतिष विज्ञान है, क्योंकि वो गणित पर आधारित है। लेकिन फलित कला है, क्योंकि वो देश, काल, परिस्थिति पर निर्भर करता है। जैसे पानी हर जगह उबलता 100°C पर ही है, लेकिन जरूरी नहीं है कि हर जगह, हर वक़्त उसमें एक जैसा ही समय लगे। इसका दूसरा पहलू विज्ञान और वैज्ञानिक वाला भी है। जिस ज्योतिषी के पास आप गए हैं उसको ज्योतिष का कितना ज्ञान है? ये भी एक महत्वपूर्ण सवाल है।

वैज्ञानिक गलत हो सकता है, विज्ञान गलत नहीं होता। इस समय जो ब्रह्मांड में ग्रहों की स्थिति है, वही कुंडली में उतरती है। लेकिन फलादेश बहुत सी बातों पर निर्भर करता है।

जब पूर्णिमा होती है तो सूर्य और चन्द्र अपने से सात घर दूर होते हैं। जब अमावस्या आती है उस दिन साथ आ जाते हैं। इससे ज्यादा क्या विज्ञान हो सकता है? दीपावली के दिन सूर्य- चन्द्र साथ में हैं या नहीं? ये देखिये, क्योंकि दीपावली अमावस्या के दिन ही होती है और होली पूर्णिमा के दिन। .....तो 100 साल पहले की भी होली देखने पर आप पायेंगे उस दिन सूर्य और चन्द्रमा सात घर दूर होंगे।

बाकी जिसे सिर्फ कुतर्क ही करने हो तो उसे "आपकी बात सही है, सब झूठ है" बोलकर आगे बढ़ जाइये।

एक रोचक बात बताता चलूँ, उस व्यक्ति के हाथ में भाग्य रेखा (आस्था रेखा) नहीं होगी। होगी तो बहुत धुँधली सी । अगर कहीं से उसकी कुंडली मिली तो आप पायेंगे उस कुंडली में बुध+शनि, चन्द्रमा+शनि, चन्द्रमा+राहु जैसी युतियाँ या सम्बन्ध हो सकता है।

इसको पढ़ने के बाद आप भी ज्योतिषी बन जायेंगे

ज्योतिषी बनना बहुत आसान है या ये कह लीजिये कि इसको पढ़ने के बाद आप भी बन सकते हैं। ज्यादातर ज्योतिषी मनोविज्ञान से खेलते हैं। वह जिंदगी के सकारात्मक पहलुओं पर बात करते हैं, जो हर आदमी बनना चाहता है। ....यानी मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम सी जिंदगी। वो ऐसी बातें कहते हैं जो 10 में से 8 बार सब पर सटीक बैठती है। जिन दो- चार पर सटीक नहीं बैठती, वो भी अपने मुँह से इंकार नहीं कर पाते।

जैसे- अगर मैं कहूँ कि आप बहुत ईमानदार हैं, साहब बहुत दयालु हैं। आप बहुत ही कर्मठ- जुझारू हैं, जो ठान लेते हैं वह कर के रहते हैं। आपको अपने परिवार से कभी उतनी सहायता नहीं मिलती, जितनी आपको उम्मीद होती है। अथवा आपके दोस्त आपको मौके पर धोखा दे जाते हैं। प्रेम संबंध में आपको निराशा हाथ लगती है, कोई आपको समझ नहीं पाता। आप बिजनेस करना चाहते हैं, मगर अच्छी टीम नहीं मिल पाती। आपके बच्चे आपकी सुनते नहीं, सुनते हैं तो सुनकर भी अनसुना कर देते हैं। इन बातों से आप इनकार नहीं करेंगे। ऐसी और भी बहुत सी चीजें हैं।

कम से कम एक हजार। सब सकारात्मक चीजें हैं, जैसा मनुष्य होना चाहता है। एक बुरा से बुरा आदमी भी खुद को अच्छा ही समझता है। ये सब याद कर लीजिये। आप भी अच्छे ज्योतिषि बन जायेंगे। लेकिन अच्छे ज्योतिषि होने की यात्रा बहुत कठिन है। उसका रास्ता आपको स्वयं खोजना होगा।

मैं किसी को अच्छा बुरा नहीं कह रहा बस अपनी बात उन लोगों तक रख रहा हूँ जिनकी ज्योतिष में दिलचस्पी है और मैं बस इतना कहना चाहता हूँ कि जब तक कोई ज्योतिषी आपके भूतकाल से जुड़ी चीजें आपको नहीं बता रहा है, आपके भविष्य को लेकर उसके पास कुछ बातें बताने को नहीं है, अगर वह आपको सकारात्मक एनर्जी नहीं दे पा रहा है, अगर वह आपके दुख को सुख में नहीं बदल पा रहा है, तो आपकी नजर में वो व्यक्ति कितना भी ज्ञानी क्यों न हो? मेरी नजर में वो ज्योतिषी नहीं है।

बाकी ऊपर लिखी हुई बातों का आजमा कर आप भी ज्योतिषी बन सकते हैं। धन्यवाद।

ज्योतिषीय कर्मपथ

मेरे कई मित्र जानना चाहते हैं कि मैंने कौन सी किताबें पढ़ी हैं? मैंने किस तरह से ज्योतिष सीखी और वो किस तरह से इसे सीख सकते हैं? ....तो मैं बस यही कह सकता हूँ कि मेरा तो बस एक ही फंडा है। मैं हर ग्रह को एक आदमी मानता हूँ और जो एक आदमी के लक्षण होते हैं, सबसे सज्जन होने पर और सबसे धूर्त होने पर, उसी के हिसाब से फलादेश कर देता हूँ। उसके साथ दूसरा कौन सा ग्रह बैठा है? कौन उसे देख रहा है? उनके क्या लक्षण हैं? ये देखना भी बहुत जरूरी है।

जानवरों का बारीक अध्ययन करके भी आप काफी कुछ सीख सकते हैं। जैसे राहु के गुण बिल्ली से मिलते हैं, केतु के गुण कुत्ते से मिलते हैं, गुरु के गुण गाय से मिलते हैं, आदि।

उदाहरण के तौर पर एक चोर चोरों के साथ कैसे रहेगा? पुलिस के साथ कैसे रहेगा? अध्यापक के साथ कैसे रहेगा? और राजा के साथ कैसे रहेगा? ये देखना भी बहुत महत्वपूर्ण है। साथ ही वो चोर है तो उसके पीछे वजह क्या है? उसकी कोई मजबूरी है या किसी की भलाई के चोर बना है? या वो बस शौकिया चोरी कर रहा है? ये भी महत्वपूर्ण कारक है।

चोर की जगह पर आप कोई भी प्रोफेशन इंजीनियर/ डॉक्टर/ नेता/ समाजसेवी/ क्लर्क आदि ले सकते हैं। फल उसी के हिसाब से बदलते रहेंगे। इससे ज्यादा मुझे कुछ नहीं आता। मुझे तो 27 नक्षत्रों के नाम भी ढंग से याद नहीं। सबसे महत्वपूर्ण बात जो मैं हमेशा कहता हूँ "किसी कार्य की सफलता इस पर भी निर्भर करती है कि वो काम आप स्वार्थ के वशीभूत होकर कर रहे हैं या परमार्थ के।" अगर आपका उद्देश्य परमार्थ है, तो यकीन मानिए भगवान आपका साथ देंगे। मुझे विश्वास है आप बहुत तेजी से अच्छे ज्योतिषी बनते जायेंगे। आपकी, कही बातें आश्चर्यजनक रूप से सत्य होंगी। लेकिन उसके लिए आपको ज्योतिष को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाना होगा। हर व्यक्ति, हर घटना पर बारीक नजर रखनी होगी। आपको लगातार खुद से सवाल पूछने होंगे कि ये क्यों हुआ? कैसे हुआ?

एक और महत्वपूर्ण बात जो शायद बहुत जरूरी है, जिसे लोग अक्सर भूल जाते हैं या याद नहीं रखना चाहते। वो बात यह है कि "आपको ज्योतिष से

जातक का भला करना है अपना नहीं। "

अगर आप ये सारी बातें याद रखने में कामयाब रहे तो फिर विश्वास मानिये, ईश्वर आपकी न सिर्फ जरूरतों बल्कि आपकी ख़्वाहिशों का भी खुद ख़्याल रखेंगे।

राजा, उनके नौ रत्न और ज्योतिष

ज्योतिष के प्रभाव से कोई नहीं बच पाता है। मैंने कई ऐसे लोगों को देखा है जो मुँह से नास्तिक मगर उँगलियों से आस्तिक थे। यानी बोलते थे कि उन्हें भाग्य पर या इन चीजों पर भरोसा नहीं है, लेकिन उंगलियाँ अंगूठियों से भरी रहती थी और इसमें कोई गलत बात भी नहीं। हर कोई एक अच्छा वर्तमान व अच्छा भविष्य चाहता ही है। हर व्यक्ति किसी न किसी तरीके से किसी ग्रह का उपाय कर ही रहा होता है या किसी ग्रह को खराब कर रहा होता है। बस, फर्क इतना होता है कि उसका तरीका पूरी तरह से अलग भी हो सकता है। जरूरी नहीं कि हर कोई अपनी अंगूठी ही पहने, रत्न ही धारण करे या हर कोई उपवास रहे या मंत्रों का उच्चारण करे। जैसी देश काल परिस्थिति होती है, उसी के अनुसार उपाय भी होते हैं ।

इसके लिए सबसे पहले ग्रहों के कारक को समझना जरूरी है कि कौन सा ग्रह किस चीज का कारक होता है, या हो सकता है। हर ग्रह के अनेक कारक होते हैं और उन कारकों के हिसाब से हर आदमी उस ग्रह से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़ा ही होता है। या तो घर में या कार्य स्थल में या कहीं और, इसी के अनुसार जातक को अच्छे या बुरे फल मिलते हैं।

उदाहरण के लिए थोड़ा इतिहास खँगाले तो हम पाते हैं हर एक बड़े राजा के दरबार में नवरत्न हुआ करते थे। कोई वाकपटु था, कोई ज्ञानी, कोई संगीतज्ञ तो कोई कूटनीतिज्ञ। मेरा पूरा विश्वास है कि ये नौ रत्न 9 ग्रह का ही प्रतिनिधित्व करते थे। हर एक व्यक्ति एक न एक ग्रह का प्रतिनिधित्व करता ही था।

अगर आप थोड़ा गंभीरता से विचार करें तो इसके अलावा एक और बात पायेंगे कि क्रूर से क्रूर राजा भी व्यायामशाला बनवाते थे, मंदिर बनवा देते थे; धर्मशाला बनवा देते, पानी के तालाब, स्कूल आदि बनवाते थे। यह सभी किसी न किसी कारक का प्रतिनिधित्व करते हैं।

अंत में बस यही कहना चाहूँगा कि अगर आपको कोई ज्योतिषी कोई महँगा उपाय बताये और आपको लगे कि आप उस उपाय तो करने में असमर्थ हैं, तो दूसरा उपाय पूछिये। एक ग्रह के लिए कई सारे उपाय होते हैं।

ज्योतिष और रत्न

रत्न कब या क्यों पहनें? जितना मुझे ज्ञान है, उसके आधार पर तीन तरह के उपाय होते हैं। शारीरिक, मानसिक और आर्थिक। मेरा निजी अनुभव कहता है कि सबसे अच्छे शारीरिक उपाय, फिर मानसिक उपाय, उससे बाद आर्थिक उपाय प्रभावी होते हैं। रत्न पहनना या धारण करना आर्थिक उपाय के अंतर्गत ही आता है।

जब व्यक्ति के पास शारीरिक उपाय यानी किसी की सेवा करने, मानसिक उपाय यानी मन्त्र एवम उपवास रखने लायक, देश काल अथवा परिस्थिति ना हो तो ऐसे में व्यक्ति को रत्न धारण कर लेना चाहिए।

रत्न की कीमत क्या? रत्नों की कोई कीमत नहीं होती। मैंने पाँच रुपये का मोती भी देखा है और तीन हजार का भी. मैंने सत्तर रुपये का लहसुनिया भी देखा है और आठ सौ का लहसुनिया भी देखा है। रत्नों की कीमत पूरी तरह से विश्वास पर निर्भर करती है। आपको ज्योतिष में कितना विश्वास है, ज्योतिषी पर कितना विश्वास है और अन्त में सबसे जरूरी खुद पर कितना विश्वास है? मुझे देवदार की लकड़ी धारण करके पुखराज जैसे फल मिले थे।

रत्न पहनने चाहिए या नहीं? सबके अपने अपने तर्क हैं। सब अपनी अपनी जगह सही हैं। मेरे तर्क ये हैं कि नहीं पहनने चाहिए। पुखराज/ माणिक/ मूंगा धारण करने के बजाय खुद को पुखराज/ माणिक/ मूंगा बनाने की दिशा में प्रयास करना चाहिए जातक को।

ज्योतिष और राज योग

ज्योतिष में राजयोग पर बहुत चर्चायें होती हैं। हर ज्योतिषी जातक को कहता ही है कि आपकी कुंडली में राजयोग है और कई बार एक नहीं, तीन- चार राजयोग बताता है। राजयोग के विषय में बताया जाता है कि राजा (बड़े अफसरों) से निकटता रहेगी। उनके साथ रहेंगे और जातक उछलने कूदने लगता है। जैसे दुनिया जीत ली हो । मुझे लगता राजयोग की सफलता इस बात पर निर्भर नहीं करती कि आप राजा के करीब हैं, (वो तो शहर का हर तीसरा चौथा आदमी होता ही है) बल्कि इस बात और निर्भर करती है कि राजा आपके कितने करीब है?

ज्योतिषी ईश्वर के पोस्टमैन

जिस तरह डाकिया चिठ्ठियाँ पहुँचाता है मगर उसमें कुछ फेर बदल नहीं कर सकता, ठीक उसी तरह ज्योतिषी भी डाकिये होते हैं। ईश्वर के डाकिए! जो भविष्य में होने वाली घटनाओं को कुछ पहले बता देते हैं। एक अच्छा डाकिया ज्यादा से ज्यादा ये कर सकता है कि वो बुरी ख़बर होने पर पढ़ने वाले को हौंसला दे, हिम्मत दे कि घबराइए मत सब ठीक हो जायेगा। कुछ दिन पहले तो इससे बुरी ख़बर सुनी थी मैंने। फलाने गाँव/ शहर में और अच्छी ख़बर होने पर भी ऐसे बताये जैसे सामान्य सी बात हो ताकि ख़बर सुनने वाला व्यक्ति उतावला न हो, ज्यादा उम्मीद ना बाँध ले।

ख़ैर, होता इसका बिल्कुल उलट है। आजकल ज्यादातर ज्योतिषी त्रिकालदर्शी होने का दावा करने लगे हैं। खुद के कहे को पत्थर की लकीर बताने लगे हैं और जो जातक पहले से परेशान है, दुःखी है, उससे ज्यादा पैसा बटोरने लगे हैं। अब देखिये, पूरे तरीके से तय तो कुछ है नहीं। सम्भव है किसी ज्योतिष ने जन्मकुंडली देखी। वहाँ किसी चीज का योग था मगर नवमांश कुंडली में ऐसा योग ही नदारद था और नवमांश का उस ज्योतिष को ज्ञान नहीं है या बाकी षोडश कुंडलियों को उसने कभी नाम ही नहीं सुना। .....तो वो कैसे कह सकता है कि "लिखकर ले लीजिए, यही होगा..."।

ज्योतिषी को तो पीड़ाहारी होना चाहिए कि सामने वाले व्यक्ति की सारी पीड़ा हर ले और सामने वाले को ऐसा आत्मविश्वास दे कि उसे लगे, वो भी हनुमान जी की तरह सूरज निगल सकता है। शब्दों पर ध्यान दीजिए। मैं आत्मविश्वास कह रहा हूँ, उम्मीदें नहीं कह रहा हूँ।

सनातन का दंड विधान कहता है कि एक ही गलती के लिए अलग- अलग लोगों के लिए अलग- अलग सजा निर्धारित है। शायद कुछ ऐसा की अगर कोई मूर्ख गलती कर रहा है तो उसे समझाकर माफ कर देना चाहिए। अगर कोई समझदार गलती कर रहा है तो उसे सजा देनी चाहिए और अगर कोई विद्वान गलती कर रहा है तो उसे उच्चतम् सजा देनी चाहिए।

याद रखिये, ज्योतिष विद्वान होते हैं और ईश्वर की लाठी में आवाज नहीं होती है।

ज्योतिष, विवाह और भौतिकवादी युग

मेरा काफी मन था कि मैं इस विषय पर कुछ लिखूँ।....तो बात दरसअल ये है कि मुझे लगता है कि जिस तरीके के विवाह अब होते हैं और जिस तरह के विवाह पुराने समय में होते थे, उनमें जमीन- आसमान छोड़िये, आसमान पाताल का अंतर है। मैं कोई हवा- हवाई बात करके इस मुद्दे को भटकाऊँगा नहीं, सीधे मुद्दे पर आता हूँ। लगभग डेढ़ दशक से मैं कुंडलियां देख रहा हूँ और काफी लोग मुझसे सिलसिले में बात करते हैं। मेरी राय जानना चाहते हैं। मेरे एक परिचित मित्र और मैं ज्योतिष पर अक्सर चर्चा करते हैं। वो ज्योतिष सीखना चाहते हैं और मैं भी उनके साथ बातचीत करके अपना ज्योतिष थोड़ा निखार लेता हूं।

एक बार चर्चा के दौरान उन्होंने कहा कि सब की कुंडली वगैरा देखते हैं, 'जैक्सन' की क्यों नहीं देखते? उसकी शादी होने की उम्र निकली जा रही है। उसे लड़की नहीं मिल रही है। तो मैंने उनसे एक ही बात कही। मैंने कहा कि आपका सवाल ही गलत है। आप पहले 'जैक्सन' से पूछ तो लीजिये कि वह लड़की से शादी करना चाहता है या प्रॉपर्टी से शादी करना चाहता है? अथवा उसके बैंक बैलेंस से शादी करना चाहता है या उसके पहुँचे हुए खानदान से शादी करना चाहता है?

मुझे नहीं लगता कि वह लड़की से शादी करना चाहता है। अगर सच में करना चाहता है तो लड़कियों की कमी नहीं है। लेकिन दिक्कत ये है की इस दौर में कोई लड़की से शादी नहीं करना चाहता या कोई लड़की लड़के से शादी नहीं करना चाहती। वह सामान्यतया (बेसिकली) देखते हैं कि जॉब कैसी है,पैसा कितना है? अथवा खानदान में ऑफिसर कितने हैं? घोड़ा- गाड़ी- बंगले की क्या स्थिति है? लड़का/ लड़की एकलौता है या नहीं? ये सब भी अब देखा जाने लगा है और ये चीजें साथ में नहीं मिल पा रहीं और इससे उसकी तथा औरों की शादी नहीं हो पा रही है। मेरी इस बात से वो पूरी तरह इत्तेफाक रखते थे और उन्होंने हल्की आवाज में कहा "हां तुम्हारी बात सही है।"

कुंडली में राजयोग

कुंडली में जो भी राजयोग होता है, वह इस बात पर निर्भर करता है कि आपकी 'देश, काल तथा परिस्थिति' कैसी है? अगर किसी की कुंडली में राजयोग होता है तो इसका यह मतलब होता है कि वह अपनी 'देश, काल तथा परिस्थिति' के हिसाब से ऊपर हो जायेगा। उसका कभी भी यह मतलब नहीं होता कि वह व्यक्ति राजा ही बनेगा। उदाहरण के तौर पर अगर किसी परिवार की आमदनी 10 रुपया महीना है और पैदा होने वाले जातक की कुंडली में राजयोग है, तो यह होगा कि उसकी आमदनी 50 रुपया महीना हो जाएगी, न कि ये, कि उसकी आमदनी 5 करोड़ रुपये हो जायेगी।

ज्योतिष और योग का सम्बन्ध

जो व्यक्ति योग के यम- नियमों का पालन करता है, उसे उसके बाद उतनी ज्यादा ज्योतिष सीखने की जरूरत नहीं पड़ती। वह एक समय आने के बाद अपने आप ही वाकसिद्धि को प्राप्त कर लेता है। ज्योतिष में वाकसिद्धि का क्या महत्व है? ये बात हर ज्योतिष जानने वाला व्यक्ति जानता और मानता है। वाकसिद्धि का मतलब अगर आसान शब्दों में समझें तो जो व्यक्ति ने कह दिया वह घटित हो जाता है। यानी सत्य के नियमित अभ्यास से व्यक्ति को वाकसिद्धि प्राप्त होती है और परमपिता परमेश्वर के आशीर्वाद से उसे जाने-अनजाने, भविष्य में होने वाली चीजों का पहले ही आभास हो जाता है और वह उसे तय वक़्त से पहले ही कह देता है।

सरकारी नौकरी और कुंडली

अक्सर आपने देखा होगा, भारत जैसे देश में दो सवाल प्रमुखता से पूछे जाते हैं। पहला 'सरकारी नौकरी' कब लगेगी? दूसरा शादी कब होगी? आज मुझे जितनी ज्योतिष की समझ है, उसके आधार पर सरकारी नौकरी के विषय पर थोड़ी सी बात करना चाहता हूँ। मुझे हमेशा लगता है कि देश, काल व परिस्थिति के हिसाब से चीजें बदल जाती हैं। कहीं सोना कीमती होता है, कहीं मिट्टी कीमती होती है। पुराने समय में लौटें तो "सरकारी नौकरी" यानी आराम की नौकरी, सुरक्षा की नौकरी। एक बार लग गयी तो छूटेगी नहीं, यानी फायदे ही फायदे।

आज के दौर में जब सरकारी नौकरियाँ कम या खत्म होती जा रही हैं; एमएनसी कम्पनियाँ बड़े-बड़े पैकेज दे रही है, साथ में विदेश के टूर करवाती हैं और अच्छी परफॉर्मेंस पर प्रॉफिट में शेयर भी देती हैं तो मुझे लगता है वो 'सरकारी नौकरी' वाली बात थोड़ी खारिज सी हो जाती है।

आपने देखा होगा कुछ लोग अच्छी 'सरकारी नौकरी' लगने के बाद भी परेशान रहते हैं। लगातार बदलने की सोचते रहते हैं। अगर आपने ऐसे लोग नहीं देखे तो बताता चलूँ ऐसे लोग होते हैं, वो भी बहुतायत में। एक ज्योतिषी को देश काल परिस्थितियों का ज्ञान होना बहुत जरूरी है, ताकि वो जातक को सही दिशा दिखाये।

कहा भी जाता है दुनिया में जितने भी अमीर हुए हैं, उनमें से किसी ने भी नौकरी नहीं की है।

देश, काल तथा परिस्थिति

बचपन से ही मेरी रुचि ज्योतिष में रही है, जिसकी वजह से कुछ एक भविष्यवाणियाँ सटीक साबित हुई हैं। जिसमें से कुछ एक दोस्तों की है और कुछ एक करीबी रिश्तेदारों की। बात तब की है, जब मैंने एक बार अपनी प्रोफाइल में जोश- जोश में वर्क के आगे ज्योतिष लिख दिया तो मुझे काफी क्वेरीज आने लगी। लोग अपना भविष्य जानने के लिए मुझे मैसेज करते। मैं कुछ के जवाब दे पाता, कुछ के नहीं। वैसे मुद्दे पर आते हैं। मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि कुंडली में देश काल परिस्थितियाँ कितना ज्यादा महत्व रखती हैं। क्योंकि जो भी आप भविष्यवाणी करते हैं, उसका फलादेश देश काल परिस्थिति के हिसाब से बदल जाता है।

एक दिन मुझे एक बड़े शहर की महिला का मैसेज आता है कि मैं बहुत परेशान हूँ। मेरी मदद कीजिए, मेरा जीना मुश्किल हो चुका है। मैंने कहा आप अपनी डिटेल भेज दीजिये, मैं देख लेता हूँ। उन्होंने अपनी डिटेल भेजी तो उनके पाँचवें घर में कुछ दिक्कत लग रही थी। पाँचवाँ घर विद्या का, प्रेम का, संतान का होता है। उनकी उम्र लगभग 35- 40 साल के आसपास थी। मैंने उनसे कहा- लगता है आप संतान को लेकर बहुत परेशान हैं। उसकी पढ़ाई को लेकर या शायद उसकी किसी बीमारी को लेकर? तो उन्होंने कहा यह भी है, लेकिन एक समस्या और है। मैंने फिर से कुंडली का निरीक्षण किया तो मुझे उसके अलावा कुछ खास नहीं दिखा। मैंने कहा, मुझे तो लगता है कि यही दिक्कत है, पांचवें घर से संबंधित ही। .....तो उन्होंने मुझसे कहा कि मेरा अपने पति के अलावा किसी और के साथ अफेयर चल रहा है। क्या संभावनायें रहती हैं कि मैं उसके साथ शादी कर लूँ?

तब मुझे ख्याल आया कि पाँचवा घर तो प्रेम का भी होता है और वह कुंडली बड़े शहर से थी, तो वहाँ उस उम्र में भी प्रेम, एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर की संभावनाएं रहती हैं। अगर वह छोटे शहर से उसकी होती तो

शायद उस तरह की संभावना नहीं रहती। अगर होती भी तो शायद नहीं किया जाता। उस दिन के बाद मुझे लगा कि अपनी प्रोफाइल से ज्योतिष हटा लेना ही अच्छा है।

एक वाकया और बड़ा रोचक है। जब भी याद करता हूँ चेहरे पर हँसी आ जाती है। ग्रेजुएशन के वक्त मेरे कुछ दोस्तों को पता था कि मैं हल्का- फुल्का हाथ देख लेता हूँ। ....तो वह मुझसे पूछ कर जानते कि कौन सी रेखा क्या होती है और फिर अगले ही पल क्लास की सबसे खूबसूरत लड़की का हाथ पकड़कर उसका भविष्य बता रहे होते थे।

ज्योतिष और करियर

यह बात ज्योतिष से जुड़ी कम मनोविज्ञान से जुड़ी ज्यादा हो सकती है। वैसे मनोविज्ञान भी ज्योतिष का ही एक हिस्सा है, जिसका प्रतिनिधित्व चन्द्रमा करता है। अक्सर लोग कैरियर को लेकर सवाल करते हैं। बहुत ही उलझा हुआ सवाल है, कम से कम उस देश में जहाँ इंजीनियर, डॉक्टर, सरकारी नौकरी के अलावा शायद ही कोई चौथा विकल्प बच्चों को दिया जाता हो। इसके बाद जो भी करियर बच्चा चुनता है उसे, वो तो आवारा हो गया है, अपने मन की करता है या पता नहीं किन चक्करों में पड़ गया है? लगता है किसी ने जादू टोना कर दिया है? जैसी बातों का लगातार सामना करना पड़ता है।

ख़ैर, इसके भी दो पहलू हैं। अगर तो आप एक समाज की बनायी रेखा पर चल रहे हैं तो फिर ये सवाल आपके लिए उतना महत्वपूर्ण नहीं हैं, क्योंकि भेड़चाल में चलते- चलते कोई कोर्स कर ही लेंगे। कहीं ना कहीं फिट हो ही जायेंगे और अगर आप अपना पैशन फॉलो कर रहे हैं तो भी ये सवाल आपके लिए जरूरी नहीं है क्योंकि पैशन तो वो चीज होती हैं जिसे करने में मजा आता है, आंनद आता है। जिस काम को आप बिना थके 18- 18 घण्टे कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए कोई व्यक्ति एस्ट्रोनॉट बनना चाहता है लेकिन किसी कारणवश वो नहीं बन पाया तो वह अपना पैशन कैसे फॉलो करेगा? तो शायद एस्ट्रोनॉट्स के ऊपर वीडियो बना सकता है, उनके बारे में रोचक किताबें पढ़ सकता है। एस्ट्रोनॉट के बारे में लोगों को अलग-अलग जानकारियाँ दे सकता है, एस्ट्रोनॉट से जुड़ी आर्ट बनाकर लोगों को जागरूक कर सकता है, एस्ट्रोनॉट की ड्रेस पहन के लोगों का मनोरंजन कर सकता है। शायद ऐसे हजारों काम है जिस तरह वह अपने पैशन से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ा रह सकता है और उसे फॉलो कर सकता है।

तो फिर क्या करियर वाला सवाल पूछना ही नहीं चाहिए? जरूर पूछना चाहिए। लेकिन तब जब व्यक्ति को खुद कुछ समझ ना आ रहा हो या दो करियर में से उसे एक का चुनाव करना हो कि किसको चुनने में ज्यादा तरक्की होगी। कुछ लोग सवाल लेकर आते हैं कि क्या मेरी सरकारी नौकरी लगेगी? अरे भइया इसका

जवाब तो ज्योतिषी से ज्यादा बेहतर तुम्हारा कोचिंग इंस्टीट्यूट वाला दे सकता है और उससे भी बेहतर जवाब तुम खुद दे सकते हो।

हाँ, अगर चीजें होते- होते रुक जा रही हैं। जैसे कुछ नम्बर से बार- बार अटकना या परीक्षा/ इंटरव्यू वाले दिन कुछ ऐसा घटना, जिससे वहाँ तक पहुँच ही ना पाओ और ऐसा भी बार- बार होना तो शायद ज्योतिषी कुछ मार्गदर्शन कर सकता है। श्रीकृष्ण सबसे बड़े कर्मयोगी थे। उन्हें ज्योतिष और मुहूर्त जैसी कई विद्याओं का ज्ञान था और महाभारत में अर्जुन से कहा 'कर्म किये जा फल की चिंता मतकर' न कि ला अर्जुन! अपनी कुंडली दिखा।

नोट :- जीवन कर्मप्रधान है सब कुछ भूलकर मेहनत कीजिये। जो भी करेंगे उसमें जरूर सफलता मिलेगी।

ज्योतिष और प्रेत बाधा, ऊपरी हवा आदि

पहली लाइन में ही एक बार साफ कर देता हूँ। यकीनन ये चीजें होती होंगी, मगर मेरा इसमें रत्तीभर भी विश्वास नहीं है। प्रेत बाधा, ऊपरी हवा आदि के ज्योतिषीय पहलू को थोड़ा समझने की कोशिश करते हैं। हर हफ्ते कम से कम चार- पाँच ऐसे मामले आते ही आते हैं जिसमें कोई जातक या जातिका मेरे पास आकर कहता है कि गुरु जी (मुझे ये सुनना पसंद नहीं) मेरे पर या मेरे किसी परिचित पर किसी ने काला जादू कर दिया है। ....या मेरे पर किसी प्रेत का साया है या मुझे किसी प्रेत ने वश में कर रखा है और मुझे उस से छुटकारा दिलाइये। मैं हमेशा उसे कहता हूं कि यह मेरे विषय से बाहर की चीज है और आप किसी तंत्र साधना वाले व्यक्ति से संपर्क करिये।

लेकिन मैं उनको एक बात हमेशा कहता हूं कि शायद आपका जो चंद्रमा है वह सीधे- सीधे राहु या केतु के संपर्क में होगा और यह संभव भी है कि चंद्रमा कुंडली में काफी ज्यादा डैमेज होगा। आप यकीन मानिए 99 बार नहीं 100 बार उनका चंद्रमा इसी स्थिति में पाया जाता है या तो उनका चंद्रमा सूर्य के साथ होकर ग्रहण योग बना रहा होता है या उनके चंद्रमा राहु या केतु से ग्रसित होते हैं। जैसा कि आपको पहले से पता है कि चंद्रमा मन का कारक होता है। एक तरह से मन ही हमारी सोच भी है। जो हम सोचते हैं, जो हमें दिखाई देता है, उसमें मन का महत्वपूर्ण स्थान है और जब मन पर राहु यानी माया की एक तरह से छल की दृष्टि होती है या वो सूर्य के साथ होता है जो अपने आप में एक गर्म ग्रह है, तो वह इल्यूजन/ कंफ्यूजन क्रिएट करता है।

साथ में केतु भी चंद्रमा के लिए ग्रहण का काम करता है। जब चंद्रमा इन तीनों में से किसी ग्रह के प्रभाव में होता है, अक्सर कमजोर हो जाता है। कई बार हम देखते हैं कि सिक्के की आवाज भी हमें पायल की आवाज लगने लगती है, अंधेरे में हवा में उड़ता कपड़ा हमें भूत लगने लगता है, अंधेरे में बिल्ली का जाना ऐसा लगता है कि जैसे कोई हमारे बगल से गुजरा हो। ज्योतिषीय पहलू से यदि आप देखेंगे कि अगर कोई व्यक्ति आपके पास इस तरह की समस्या लेकर आता है और आप उसकी कुंडली में इसी तरह के योग/ युतियाँ/ दृष्टियाँ पायेंगे।

अंत में, मैं बस इतना कहना चाहूँगा कि जब हमारी किस्मत पहले से लिखी जा चुकी है तो दुनिया में कोई व्यक्ति इतना ताकतवर नहीं कि वह परमपिता परमेश्वर की लिखी हुई किस्मत को बदल सके। इसलिए वशीकरण, जादू टोना आदि पर मैं चाहकर भी विश्वास नहीं कर पाता, क्योंकि मुझे सृष्टि चलाने वाले परमपिता परमेश्वर पर हर किसी चीज से ज्यादा भरोसा है।

बाकी चन्द्रमा राहु या इस तरह की युतियाँ हमेशा खराब नहीं होती हैं, मैं यकीन के साथ कह सकता हूँ। हैरी पॉटर की लेखिका जे के रोलिंग की कुंडली में भी कुछ ऐसे ही योग होंगे और शायद कुछ अच्छे ग्रह इस युति को देख रहे हों या उसने इससे बाहर निकलकर कुछ रचने का ठाना और रच दिया।

ज्योतिष और उपाय

ज्योतिष में फलादेश से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है उपाय बताना। ... क्योंकि उन्हीं से जातक का जीवन सुखमय होता है और वही जानने के लिए जातक आया भी होता है। बताने को तो जन्मकुण्डली में मंगल और शनि की स्थिति देखकर शरीर में तिलों की संख्या और स्थान भी बताया जा सकता है, मगर उसका क्या फायदा ? उस फलादेश से जातक कुछ देर के लिए चौंक ही सकता है। आराम उसे तभी मिलेगा, जब आपका बताया उपाय उसकी परेशानी दूर कर दे।

जितनी मुझे समझ है, उसके हिसाब से तीन तरह के उपाय होते हैं- मानसिक, शारीरिक और आर्थिक। मानसिक उपाय यानी मन्त्र- व्रत आदि करना, शारीरिक उपाय यानी सेवा आदि करना, आर्थिक उपाय यानी रत्न पहनना या कुछ दान करना। उदाहरण के तौर पर अगर हम मंगल को लें तो हनुमान चालीसा एवं मंगलवार के व्रत मानसिक उपाय हैं, व्यायाम, ब्लड डोनेशन, खेलकूद शारीरिक उपाय हैं एवं मूंगा आदि धारण करना आर्थिक उपाय हैं।

देश,काल व परिस्थिति के हिसाब से उपायों का स्वरूप बदलता रहता है कुछ दिन पूर्व एक मित्र को शनि सम्बन्धी उपाय करने को कहा था, जिसमें हर शनिवार शनि मंदिर जाकर सरसों के तेल का दिया जलाने को कहा। लेकिन मुश्किल ये थी वह मित्र देश से बाहर था और उस देश में न शनि का मंदिर था, न ही पीपल आदि का वृक्ष। तो उपाय कर पाना सम्भव नहीं था।

फिर मैंने उसे गूगल से कुछ शनि यंत्र की तस्वीरें भेजी और उसे कमरे में लगाकर हर शाम शनि मंत्र पढ़ने को कहा। सुनने में ये बात कुछ लोगों को झूठी और कुछ को चमत्कारिक लगे कि उसे 21 दिन बाद बताने को बोला था और जिस चीज के लिए वो शनि के उपाय कर रहा था, ठीक 21 दिन में वो चीज उसके साथ घटित हो गयी। ऐसा मुझे वाट्सएप के माध्यम से पता लगा।

हर ग्रह कुछ वस्तुओं/ पौधों का प्रतिनिधित्व करता है। अगर उन वस्तुओं/ पौंधों को आप अपने संग रखें तो और इन उपायों को करते वक़्त मन में पूरी श्रद्धा रखें तो भी आपको वही फल प्राप्त होंगे, जो लाखों के रत्न पहनकर प्राप्त होते हैं।

एक पहलू और गौर करने वाला ये भी है कि आपको या आपकी कुंडली

देखने वाले को सही समस्या का पता चल रहा है या नहीं? कई बार व्यक्ति खाना इस वजह से नहीं खा रहा होता है कि उसके मुँह में छाला हो रहा होता है, जो 25 रुपये की दवाई से हफ्ते भर में ठीक भी हो सकता है। मगर गैर-अनुभवी या पैसा कमाने का उद्देश्य लेकर बैठे डॉक्टर 25 जाँचे लिख देते हैं।

अंत में, मैं बस यही कहना चाहूँगा अगर ठीक जगह लग जाये तो एक सुई भी ट्रक का टायर पंचर कर सकती है। ऐसा ही उपायों के साथ भी है।

कालसर्प का बाजार

काफी समय पहले हल्द्वानी में ही एक पण्डित जी से मिलने गया था। वैसे वो पूजा- पाठ करवाने वाले पण्डित जी थे, लेकिन सुना था कि उन्हें ज्योतिष भी का ज्ञान है। तो मेरी हमेशा कोशिश रहती है कि ऐसे लोगों से मिला जाये और बातचीत करके उनसे कुछ ना कुछ नया सीखा जाये। बातों के आदान- प्रदान से हमेशा कुछ नया सीखने को मिलता है। ....तो मैं जब उनके घर पहुँचा, हमारी थोड़ी बातचीत हुई ही थी कि एक व्यक्ति अपनी बहन की कुंडली लेकर आया। उस व्यक्ति की बहन की शादी नहीं हो पा रही थी। पंडित जी ने उसकी कुंडली देखी और बोले कि आपकी बहन की कुंडली में 'कालसर्प दोष' है और आपको अपने घर में भागवत करवानी पड़ेगी। अगर आप भागवत करवायेंगे तो यह चीजें थोड़ा सही हो जायेंगी और विवाह हो जायेगा।

लेकिन एक बात याद रखिए कि अगर आप सोच रहे हैं कि भागवत आसानी से हो जायेगा? यह दोष इतना खतरनाक है कि भागवत भी यह दोष आसानी से करने नहीं देगा। वह व्यक्ति थोड़ा मध्यवर्गीय परिवार से था तो भागवत करवा पाना उसके बस की बात नहीं थी। उस व्यक्ति ने पंडित जी को बोला "पंडित जी! यह तो बहुत भारी उपाय है, कुछ और हो सकता है?" पंडित जी बोले- नहीं- नहीं, भागवत के अलावा और कोई उपाय मुझे नहीं दिखता। फिर सोचकर बोले- कुछ होगा तो चलो मैं आपको बताऊंगा। इसके बाद वह व्यक्ति चला गया।

मैंने भी कुंडली एक सरसरी निगाह से देख ली थी, जब वो पंडित जी के हाथ में थी। मैंने उसके जाने के बाद पण्डित जी से कहा- उस कुंडली में तो 'कालसर्प योग' था ही नहीं? पंडित जी बोले- नहीं उस कुंडली में था। मैंने कहा- आप कैसी बातें कर रहे हैं? जब राहु और केतु के मध्य में सारे ग्रह होते हैं, तब कालसर्प योग होता है। लेकिन उसमें तो कुछ एक ग्रह बाहर थे।

शायद पण्डित जी को उम्मीद नहीं थी कि मुझे ये देखना आता था। उसके बाद पण्डित जी ने बात भी घुमा दी। मेरी भी आदत है कि मैं कभी किसी का क्लाइंट नहीं बिगाड़ता। ...तो एक तरह से वो व्यक्ति पंडित जी का क्लाइंट ही था। अब उसकी गलती थी। वह पंडित जी के सामने था और फिर मैंने उसे कुछ नहीं

कहा और न ही उससे मिलकर सच बताने की कोशिश की। मुझे लगता है कि जब से चीजों का बाजारीकरण हुआ है, जब से जरूरतों की जगह ख़्वाहिशों ने ले ली है, तब से आदमी आदमी का दुश्मन बन गया है।

कई बार मेरे पास लोग आते हैं, जो बोलते हैं कि हमको तो ज्योतिषी ने यह बताया है, हमें वह बताया है। तो मैं उन्हें यही कहता हूँ- ठीक है, अगर आपको बताया है तो आपको कुछ दिन, कुछ महीने उन पर विश्वास करना चाहिए। आप उनकी कही हुई बात को ही फॉलो कीजिए। ऐसा भी हो सकता है कि वह ज्यादा ज्ञानी हो। उनका जीवन देखने का नजरिया अलग हो या ये भी हो सकता है उनका बताया उपाय घातक हो और जातक को ऐसी ठोकर लगे कि अगली बार के लिए अक्ल आ जाये।

नोट :- कालसर्प दोष नहीं होता, कालसर्प योग होता है। इसके फायदे भी होते हैं।

ज्योतिष, लॉक प्रोफाइल और राहु

कुछ लोग मेरे पास आते हैं और वह लोग कहते हैं कि वह काफी तनाव में जी रहे हैं। मानसिक शांति नहीं मिल पा रही है। जब मैं उनकी फेसबुक प्रोफाइल चैक करता हूँ तो ज्यादातर मामलों में उनकी प्रोफाइल में लॉक लगा हुआ होता है और उनके बारे में कोई जानकारी नहीं दिख रही होती है। मैं उन्हें कहता हूँ कि जो आपने प्रोफाइल में लॉक लगा रखा है, वो भी इसका प्रमुख कारण हो सकता है।

राहु की वजह से जातक रहस्यमयी बनता है यानी अपने बारे में सब छुपाने वाला और दूसरों के बारे में सब जानने वाला। राहु हमेशा व्यक्ति को बहुत अधिक सोचने का गुण देता है। जितने भी वैज्ञानिक शोध से जुड़े होते हैं या शतरंज आदि के खिलाड़ी, यहाँ तक कि संगीतकार भी वो कहीं ना कहीं राहु के प्रभाव में होते हैं।

सबसे कमाल की बात यह होती है कि कई बार महिलाएं/ लड़कियां जब यह सवाल लेकर आती हैं और जब मैं उन्हें कहता हूँ कि आपकी प्रोफाइल मे लॉक लगा हुआ है, यह राहु की वजह से हो सकता है और परेशानी की वजह भी यही हो सकती है। मुमकिन है कि कुंडली में चन्द्रमा- राहु या शनि- राहु- चन्द्र की कोई युति हो।

वो कहती तो नहीं, पर कई बार उन्हें ये लगता है मैं प्रोफाइल चैक करना चाहता हूँ, आदि। असल में ये जो शक उन्हें मन में पैदा होता है या जो व्यक्ति इसी शक की वजह से प्रोफाइल लॉक करता है, उसका कारक भी राहु ही है। राहु व्यक्ति को जीवन में असुरक्षा की भावना भी देता है। राहु से प्रभावित व्यक्ति सब कुछ बटोरना चाहता है, अपने पास रखना चाहता है और जितना बटोरता रहता है उतना ही परेशान होता रहता है।

ज्योतिष से जुड़े तथा ज्योतिष में रुचि रखने वाले व्यक्तियों को लॉक प्रोफाइल वाले मित्रों तथा परिचितों की कुंडली का अध्यनन करना चाहिए। मुमकिन है कि जन्म कुंडली या नवमांश में उन्हें चन्द्रमा राहु या शनि राहु चन्द्र की कोई युति नजर आये। इसके अलावा गोचर में बदलाव आने पर भी कुछ समय के लिए व्यक्ति प्रोफाइल लॉक या ह्वाट्सएप से डीपी हटा सकता है।

अब इसके उपाय पर भी थोड़ा बात करते हैं। जहाँ तक मेरी समझ है, हर युति के फायदे और नुकसान दोनों होते हैं। कई मामलों में राज परिवार में पैदा होने का नुकसान ये है कि व्यक्ति जरूरत पड़ने पर भी मजदूरी नहीं कर सकता और गरीब परिवार में पैदा होने का नुकसान ये है कि व्यक्ति अमीर होने के बाद भी उस समाज से नहीं जुड़ पाता। न ही वो उन्हें स्वीकार कर पाता है, न ही वो लोग उसे स्वीकार कर पाते हैं। इसलिए अगर व्यक्ति को इस युति की वजह से जीवन में नुकसान हो रहे हैं तो उसे समाज में सक्रियता बढ़ा देनी चाहिए। प्रोफाइल लॉक हटाकर हर दिन स्टेटस अपडेट करने चाहिए। नए लोगों से मिलना चाहिए। नए लोगों को पढ़ना चाहिए। अपने विचार रखने चाहिए।

कालसर्प योग के फायदे

जब राहु और केतु के मध्य सारे ग्रह होते हैं, तब जो योग बनता है उसे 'कालसर्पयोग' कहते हैं। हर सामान्य योग की तरह इसके भी फायदे और नुकसान दोनों ही हैं। लेकिन इसे प्रसारित इस तरह से किया गया है जैसे यह महा विनाशकारी योग है और इससे नुकसान ही नुकसान है। लेकिन ऐसा बिल्कुल भी सही नहीं है। बड़े- बड़े सैन्य अधिकारी, बड़े-बड़े प्रशासनिक अधिकारियों की कुंडली में यह योग पाया जाता है।

अब्राहम लिंकन, जवाहर लाल नेहरू, डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन, सचिन तेंदुलकर, धीरुभाई अंबानी, आदि जैसे दर्जनों नाम हैं जिनकी कुंडली में कालसर्प योग है और ये कोई सामान्य लोग नहीं हैं और दूसरी बात इनकी सफलता में काफी हद तक कालसर्प योग का योगदान है ।

कुंडली में 12 भाव होते हैं और प्रत्येक भाव किसी ना किसी का कारक होता है। जब व्यक्ति की कुंडली में कालसर्प योग बनता है तो राहु और केतु के बीच सारे ग्रह आ जाते हैं और जैसा कि हम सब जानते हैं कि राहु केतु हमेशा खुद से सात घर दूरी पर होते हैं, ऐसी स्थिति में बाकी के भावों से व्यक्ति का सीधा-सीधा सम्बन्ध नहीं रहता। ....यानी वह अपने कार्य की ओर ज्यादा ध्यान देता है और यही योग जातक को अनुसाशन पसन्द बनाता है। मेहनत ही सफलता की कुंजी है तथा कुछ पाने के लिए बहुत कुछ खोना पड़ता है। सैन्य अधिकारी या प्रशासनिक अधिकारी बनने की यही दो प्रमुख शर्तें भी हैं।

जो आदमी खुद अनुशासन में रहने वाला होगा, मेहनत करने वाला होगा, समय का पाबंद होगा तो वो कितने लोगों को पसन्द होगा? ये सोचने वाली बात है, क्योंकि वो बदले में सामने वाले से ऐसी ही उम्मीद करेगा। कुल मिलाकर आसान भाषा में कहें तो एक कसा हुआ जीवन होता है कालसर्प योग वाले जातक का।

कालसर्प योग अगर इतना अच्छा है तो फिर लोग इतना डरते क्यों हैं? ये सवाल भी काफी लोगों के मन में आ रहा होगा। ....तो इसका पहला कारण है उसका डरावना नाम काल+सर्प और दूसरा 1% जातक को भी ज्योतिष का ज्ञान नहीं होता। कुछ को होता भी है तो भी काफी चीजें मालूम नहीं होती।

कुछ छः सात महीने पहले मुझे कुंडली दिखाने के लिए एक महिला ने संपर्क किया। वो अपनी बेटी को लेकर चिंतित थी और बेटी की कुंडली के विषय में जानना चाहती थी। महिला ने मुझसे कुछ सवाल पूछे मैंने उन सवालों का उन्हें अपनी समझ के अनुसार उत्तर दे दिया और कुछ एक उपाय बताकर उन्हें कहा कि बाकी सब ठीक है। आपको घबराने की जरूरत नहीं है।

उन्होंने मुझसे कहा कि कुछ और बताना चाहेंगे आप?

मैंने लिखा- नहीं सब सही है।

उन्होंने यही सवाल मुझसे लगभग बदल- बदल के तीन- चार बार कहा तो फिर मैंने उन्हें कहा कि आप जो इस कुंडली में अंगारक योग (मंगल+ राहु) बन रहा है, उसके सम्बंध में जानना चाहती हैं? उन्होंने कहा कि आप एकदम सही कह रहे हैं

मैंने कहा कि कोई योग पूरी तरह से अच्छा- बुरा नहीं होता। हर योग के फायदे नुकसान दोनों हैं और आपकी बेटी की कुंडली में जो अंगारक योग बन रहा है, उसे तो वैसे भी देवगुरु बृहस्पति देख रहे हैं तो उसका तो फायदा ही मिलेगा।

उन्होंने कहा किस तरह? मैंने कहा- "मंगल रणनीति बनवाता है। राहु उस रणनीति को विस्तार देंगे और गुरु उसे सही दिशा देंगे। इस तरह सम्भव है, आपकी बेटी आर्मी में अफसर बने।"

तो उन्होंने कहा- "हाँ उस तरफ उसका झुकाव है।"

आप अगर 10 कालसर्प योग वाली कुंडलियों का अध्ययन करेंगे तो आप पायेंगे 9 जातक समय के पाबंद मेहनती और स्पष्टवादी होंगे। ....तो ऐसा जातक आसानी से किसी को वैसे भी पसन्द नहीं आता। एक बात और कही जाती है कि कालसर्प योग वाले जातकों का हर काम देर से होता है। ....तो आज के समय में हमारे जीवन में सब्र इतना कम रह गया है कि हमें हर काम देर से होता ही लगता है। जबकि सच्चाई ये है हर चीज समय पर ही होती है।

नवमांश क्या है, क्यों उपयोगी है?

ज्योतिष के षोडश वर्गों में सबसे महत्वपूर्ण वर्ग होता है नवमांश। कई बार जन्मकुंडली से भी ज्यादा नवमांश से जन्मकुंडली में दिख रहे ग्रहों का असल फल पता चलता है।

कई कुंडलियाँ मैंने देखी हैं जिसमें जन्मकुंडली में कोई ग्रह नीच का होता है तो इस हिसाब से उसके बुरे फल मिलने चाहिए। लेकिन नवमांश देखने पर पता चलता है कि वह ग्रह नीच का ही नवमांश पर भी बैठा है, तो ऐसी स्थिति में गृह वर्गोत्तम हो जाता है और वर्गोत्तम ग्रह उच्च ग्रह या स्वग्रही ग्रह के बराबर ही बलवान हो जाता है। ऐसी स्थिति में कुछ एक परेशानियाँ तो रहती है लेकिन उसके शुभ फल ही प्राप्त होते हैं।

इसे आसान शब्दों में इस तरह से समझा जाता सकता है कि जैसे हम कोई विशालकाय फलदार वृक्ष देखते हैं तो हमें लगता है, जिसका भी ये पेड़ होगा उसे खूब फल प्राप्त होंगे। लेकिन उसमें अनेक स्थितियाँ बन सकती हैं। ऐसा हो सकता है कि उस वृक्ष में फल ही नहीं आते हो। या दूसरी स्थिति में ऐसा भी हो सकता है कि बहुत विशालकाय पेड़ है, लेकिन जिन टहनियों में फल आये, वह किसी दूसरे के घर की ओर झुक गई और दूसरे जातक को उन फलों का लाभ मिल गया।

एक स्थिति ये भी हो सकती है कि जातक को कहीं बाहर जाना पड़ा और सारे फल एक रात में किसी ने चोरी कर लिए। ऐसी स्थिति में जो दूसरा व्यक्ति उस फलदार पेड़ को देखेगा, उसे तो यह लगेगा कि कितना विशालकाय पेड़ है। जरूर इसका मालिक जब इसका मौसम आयेगा तो बहुत फल खायेगा। लेकिन असल स्थिति यह है कि जितने फल जातक को मिलने चाहिए थे, उतने उसे उस पेड़ के कभी मिल नहीं पाये। जबकि उसका रख-रखाव में खर्चा हुआ सो अलग।

किसी जातक का ही काल्पनिक उदाहरण लें तो मान लीजिये कोई जातक है। जन्मकुंडली में बुध की स्थिति अच्छी नहीं है, जिसके कारण वो एलर्जी सम्बंधित समस्या से परेशान था। (क्योंकि बुध वाणी के साथ- साथ त्वचा का कारक भी होता है और खराब या कमजोर होने पर त्वचा/ एलर्जी सम्बन्धी दिक्कतें

भी देता है।) लेकिन नवमांश में बुध उसी राशि में है, जिस कारण जातक का बुध वर्गोत्तम हो गया है और उस जातक ने भविष्य में कभी फ्लैट/ शहर बदला तो उसका पड़ोसी शहर का कोई मशहूर "त्वचा रोग विशेषज्ञ" बन गया और उसकी समस्या से उसे चमत्कारिक रूप से निजात मिल गयी। ...या उस जातक का ऐसे शहर में तबादला या प्रमोशन हो गया जहाँ वो एलर्जी वाले कारण ही मौजूद नहीं थे, तो सिर्फ उसकी जन्मकुंडली को देखकर किया गया आपका फलादेश गलत हो सकता है।

बिना नवमांश के फल कथन करना अधूरा रहता है फलादेश के वक़्त कम से कम एक बार जातक के नवमांश का अध्ययन भी करना चाहिए ताकि सटीक के करीब का फलादेश किया जा सके। इससे हटकर एक बात ये भी है कि कुछ दैवज्ञ ऐसे भी होते हैं जो सिर्फ चेहरा देखकर एक भटके मन को राह दिखा देते हैं। उनसे मिलना एक अलग दैवीय अनुभूति होती है।

ज्योतिष जीवन और चन्द्रमा

अक्सर यह सवाल आता है कि कौन सा ग्रह बलवान होने से जीवन अच्छा होता है या कौन सा ग्रह ज्यादा फलदायक होता है? मेरा इसमें अपना मानना यह है कि जिस तरह एक भोजन थाल होती है, उसमें रोटी भी जरूरी है, दाल भी जरूरी है, चावल भी जरूरी है, बड़ा पुआ रायता भी जरूरी है और यहाँ तक कि चटनी/ आचार/ मिर्च भी जरूरी है। तभी आप भोजन का आनंद ले पाते हैं। किसी भी एक चीज को खाकर आपको क्षणिक आनन्द तो मिल सकता है लेकिन वो आनन्द स्थायी नहीं होगा।

ठीक इसी तरह जीवन में भी है सारी चीजें थोड़ी- थोड़ी होती हैं, तभी एक पूर्ण जीवन व्यक्ति व्यतीत कर पाता है। इसके साथ-साथ हर ज्योतिषी का भी अपना एक दृष्टिकोण होता है, अपना शोध अपना अनुभव होता है। इसका भी फलादेश के समय बहुत ज्यादा प्रभाव पड़ता है। कुछ ज्योतिषी कहते हैं कि अगर केंद्र में गुरु है तो 5000 दोष कम कर देता है, इसलिए गुरु सबसे महत्वपूर्ण है। कुछ लोगों को लगता है कि मंगल बलवान है तो जातक पराक्रमी होगा और उस पराक्रम से जीवन में हर चीज पा लेगा। किसी को लगता है कि शुक्र बलवान होना चाहिए। शुक्र से वैभव होगा, पैसा होगा, तो चीजें उसको आसानी से प्राप्त होंगी क्योंकि कलियुग में पैसा ही सब कुछ है।

कुछ कहते हैं सूर्य सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि सूर्य ग्रहों का राजा भी है और इसी से प्रशासन में अच्छी पकड़ होती है आदि।

मुझे लगता है कि अगर कुंडली में चंद्रमा बलवान है तो शायद एक सुखमय संतोषी जीवन हो सकता है और संतोषी सदा सुखी कहा ही जाता है। संतोषी व्यक्ति जीवन की हर परिस्थिति को स्वीकार करते हुए आगे बढ़ता रहता है, इसलिए शायद जीवन में संतोष होना जरूरी है। एक उदाहरण के तौर पर एक व्यक्ति है जिसका गुरु बहुत अच्छा है। वह बहुत पढ़ा लिखा है, अपने शहर में सबसे ज्यादा पढ़ा लिखा। लेकिन अगर उसके और ग्रह फेवरेबल नहीं हैं तो वो उस ज्ञान का उपयोग नहीं कर पायेगा। मंगल कमजोर होगा तो वह शहर से बाहर निकलने का साहस नहीं कर पायेगा। कोई सवाल पूछेगा तो तर्क के साथ उसका जवाब नहीं

दे पायेगा। शुक्र अच्छा नहीं होगा तो अपने ज्ञान से ख्याति नहीं प्राप्त कर पायेगा। राहु अच्छा नहीं होगा तो वह हर किसी से लड़ता- भिड़ता रहेगा और खुद को सही साबित करता रहेगा, आदि।

यानी एक अच्छा ग्रह होने के बावजूद उसे उसके फल तो मिले, लेकिन दूसरे ग्रहों का साथ न मिलने की वजह से वह जातक नाकामयाब ही रहा। मुमकिन है कुछ समय के बाद उसे दूसरों से जलन भी होने लगे। ये सोचकर कि यार मैं तो इतना ज्यादा काबिल हूँ, मैं तो ज्यादा इतना ज्यादा पढ़ा लिखा हूँ, लेकिन मैं अपने जीवन में कुछ उतनी सफलता नहीं प्राप्त कर पाया। लोग मेरी इतनी इज्जत नहीं करते हैं जबकि दूसरे लोग जो मुझसे कम-अक्ल हैं, कम पढ़े लिखे हैं, उनको ज्यादा सम्मान मिलता है।

इसके अलावा चंद्रमा मन का कारक भी है और अगर आप मानसिक तौर पर मजबूत हैं तो कोई भी परिस्थिति आपका बाल भी बांका नहीं कर सकती। हमने इतिहास की किताबों में पढ़ा है कि किस तरह महाराणा प्रताप ने घास की रोटी खाई, संघर्ष व कष्टमय जीवन गुजारा, लेकिन सर नहीं झुकाया। किस तरह पृथ्वीराज चौहान की आँखें फोड़ दी गई थी, लेकिन उसके बाद भी उन्होंने इच्छाशक्ति के दम पर अपने शत्रु का दमन किया, नाश किया। ऐसे एक नहीं अनेकों प्रेरणादायी प्रसंग उपलब्ध हैं।

जितना मैं ज्योतिष को पढ़ पाया, समझ पाया, जी पाया, उसके हिसाब से मुझे लगता है कि एक अच्छा बलवान चंद्रमा हो तो जीवन हजारों मुश्किलों के बावजूद भी काफी आसान होता है।

शुरुआत में हमने एक भोजन थाल का जिक्र किया था। ....और अगर जहाँ से हमने बात शुरू किया था, वहीं पर लौटें तो आप पायेंगे कि इतना सब स्वादिष्ट खाना खाने के बावजूद भी अगर आपको पानी ना मिले तो आपको तृप्ति नहीं मिलेगी।

कर्मयोग ज्योतिष और जीवन

एक रात लगभग ग्यारह साढ़े ग्यारह का वक़्त था। हल्द्वानी के हिसाब से लोग आधी नींद पूरी कर चुके होते हैं। मुझे मुम्बई की आदत थी तो मैं जगा हुआ था। तभी मेरा फोन बजा। अनजान नंबर था। मैंने फोन उठाया तो पता चला कि मेरे मुम्बई के ही एक मित्र का फोन आया था। लगभग 3 साल बाद।

जब मैंने फोन उठाया तो उसने बोला और कैसा है? मैंने कहा- बहुत बढ़िया। पूछा- तू कैसा है? उसने कहा बहुत हालत खराब है। मैंने कहा- क्यों क्या हुआ? तो उसने मुझे बताया कि मैंने कभी उसका हाथ और कुंडली देखी थी और उसे बताया था कि उसके जीवन में कोई लड़की आएगी और उसकी बहुत बदनामी होगी। उसे आर्थिक तौर पर बहुत नुकसान होगा और उसके सन्यास लेने के भी योग हैं।

उसने मुझे बताया कि कुछ समय पहले ही उसने एक लड़की से शादी की थी। जबकि कमाल की बात यह थी कि मुझे भी इस बारे में नहीं पता था कि उसने शादी कब की? तो, उसने मुझे बताया कि लगभग ढाई- तीन साल पहले शादी हुई और किन परिस्थितियों में उसका तलाक हुआ। साथ ही लड़की ने तलाक देने के लिए एक भारी अमाउंट उससे चार्ज की। इस सब की वजह से उसके आर्थिक सामाजिक और मानसिक तीनों नुकसान हुये।

मैं मुम्बई छोड़कर हल्द्वानी आ चुका था तो मेरा नम्बर भी बदल चुका था। उसने कहीं से मेरा नम्बर खोजा और मुझसे कहा कि भाई! तूने मुझसे कहा था कि मेरी कुंडली में सन्यास के योग हैं। मेरा मन भी सन्यास लेने का हो गया है, लेकिन मैं सन्यास नहीं लेता चाहता।

मैंने कहा अपना काम पूरी ईमानदारी से करना भी सन्यास ही है और सबसे बड़ा योग भी। वो चौंक गया बोला- कैसे? उसके लिए तो कुंडलिनी जागरण करना पड़ता है! मेरा दोस्त एक्टर था। ऐसा- वैसा भी नहीं, काफी अच्छा। इतना कि उसने एक हॉलीवुड प्रोजेक्ट तक किया था। मैंने उससे कहा- मुझे इतना तो कुंडलिनी जागरण के विषय में, मूलाधार चक्र, आज्ञा चक्र के बारे में नहीं पता। लेकिन ये जानता हूँ कि जब तू एक्टिंग करता होगा और उसमें भी अपना पसंदीदा

किरदार, तो रिहर्सल से उसको निभा लेने तक तुझे भूख,प्यास,नींद नहीं लगती होगी। ....और जिस वक्त तू उस किरदार को निभाता है तो सामने वाले को भी यकीन दिला देता होगा कि डायलॉग बोलने वाला व्यक्ति तू नहीं है, बल्कि तेरा किरदार है। उसने कहा- हाँ ये तो है।

मैंने कहा- चक्रों को जाग्रत करके भी शायद नींद, भूख, प्यास खत्म हो जाती और आज्ञा चक्र जिसका जाग्रत हो जाता है वो सिद्ध पुरुष बन जाता है। यह प्रसिद्धि भी तो एक सिद्धि ही है। क्या अभिनेता प्रसिद्ध नहीं होते हैं/ उनके कुछ कहने पर उनके फैन्स बिना सोचे समझे उस काम को करने के लिए तैयार नहीं हो जाते हैं? उसने कहा- हो जाते हैं और उसकी स्थिति पहले से बेहतर थी। धीरे- धीरे उसके जीवन में चीजें सामान्य हो गयीं।

मेरा हर इस लेख को पढ़ने वाले व्यक्ति से कहना है कि ध्यान करना ईश्वर तक पहुँचने या ईश्वर को पाने का एक मार्ग है, लेकिन सिर्फ ध्यान करना ही एकमात्र मार्ग है ऐसा भी नहीं है। जरूरी नहीं कि अपने अंदर की शक्तियों को जागृत करने या उनको पहचानने के लिए आपको ध्यान का ही सहारा लेना पड़े। अगर ऐसा होता तो भगवान श्रीकृष्ण गीता में तीन मार्ग (भक्ति मार्ग, ध्यान मार्ग और कर्म मार्ग) नहीं बताते। मौत के कुएँ में गाड़ी/ बाइक चलाने वाला व्यक्ति, बड़े पत्थर को मूर्ति में बदलकर उसमें जान डाल देने वाला व्यक्ति भी किसी योगी से कम नहीं है। इस तरह के कई लोग आपको आस- पास दिख जायेंगे, जो आँख बंद करके ध्यान तो नहीं कर रहे थे, लेकिन आँखे खोलकर अपना काम ध्यान से जरूर कर रहे थे।

अगर आप पूरे मनोयोग से कोई कार्य करेंगे तो सम्भव ही नहीं है कि आप उसमें सफलता ना पायें। लेकिन कई बार होता ये है कि हम काम किसी मजबूरी में कर रहे होते हैं, किसी दबाब में कर रहे होते हैं या फिर किसी लालच में। इसलिए चाहते हुए भी अपना शत- प्रतिशत नहीं दे पाते हैं। अंत में बस यही कहूँगा कि कार्य का सफल या असफल होना इस बात पर निर्भर करता है कि हमारा उस कार्य को करने का उद्देश्य स्वार्थ है या परमार्थ।

ग्राफोलॉजी हस्ताक्षर विज्ञान

ग्राफोलॉजी यानी हस्ताक्षर विज्ञान, यह बहुत ही रोचक विषय है, जिसके बारे में काफी कम लोग अध्ययन करते हैं। इसके साथ समस्या ये है कि इसकी काफी कम किताबें उपलब्ध हैं और जो किताबें हैं वह भी ज्यादातर इंग्लिश में हैं। हिंदी में काफी कम लोगों ने इस विषय पर प्रमाणिकता के साथ लिखा है। खुद मेरे पास हस्ताक्षर विज्ञान की सिर्फ दो किताबें हैं, जबकि ज्योतिष से जुड़ी मेरे पास लगभग 20- 30 किताबें है।

हस्ताक्षर विज्ञान यानी ग्राफ़ोलॉजी को समझने के लिए पहले हमें व्यक्तियों को समझना पड़ेगा, फिर उनके व्यवहार को समझना पड़ेगा। उसके बाद ही हस्ताक्षर देखकर हम किसी व्यक्ति के बारे में बता सकते हैं।

कई बार जब मैं जातक को बोलता हूँ- "आप बर्थ डिटेल, दोनों हाथों की तस्वीर और हस्ताक्षर भेज दीजिये", तो वो कहता है कि हस्ताक्षर क्यों? उनके मन में कई सवाल आते हैं यानी मानकर चलिए इस व्यक्ति के हस्ताक्षर राहु प्रधान होंगे। राहु प्रधान हस्ताक्षर घूमे हुए होते हैं यानी जिन्हें देखकर समझ नहीं आता, ठीक उस तरह जैसा राहु है। जिस व्यक्ति के हस्ताक्षर में काफी गैप होता है अधिकतर देखा गया है कि उसका स्वभाव वैरागी होता है और ऐसे हस्ताक्षर शनि प्रधान हस्ताक्षर कहलाते हैं। बेहद सुंदर बराबर हस्ताक्षर शुक्र प्रधान हस्ताक्षर कहलाते हैं।

ठीक इसी तरह हस्ताक्षर करने की गति, दिशा और दबाव भी जातक का किरदार बताते हैं। तेज गति के हस्ताक्षर जातक को जल्दबाज़, ऊपर की दिशा वाले हस्ताक्षर जातक को सकारात्मक, नीचे की दिशा वाले हस्ताक्षर जातक को नकारात्मक बनाते हैं। जिन हस्ताक्षरों में दबाब ज्यादा होता है उनमें जीवनशक्ति उतनी अधिक और वो लोग उतने ही हठी होते हैं। इसके विपरीत कम या हल्के दबाब वाले लोग कलात्मक होते हैं ।

हस्ताक्षर विज्ञान को आसान शब्दों में कहें तो किसी हस्ताक्षर को देखकर पहली बार में जो विचार आपने मन में आता है, व्यक्ति का व्यवहार वैसा ही होता है। लेकिन इसके लिए आपको अभ्यास करना पड़ेगा। अलग- अलग क्षेत्रों के लोगों

के हस्ताक्षर देखने पड़ेंगे। वो हस्ताक्षर किस ग्रह का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं? ये भी समझना पड़ेगा। इसके बाद ही शायद आपकी बातें सही होने लगें ।

हस्ताक्षर में बदलाव करके कई बार व्यक्ति के व्यवहार में तेजी से परिवर्तन भी आता है। मैंने सैंकड़ों तो नहीं लेकिन दर्जनों मामलों में ऐसा देखा है। अगली बार किसी के हस्ताक्षर देखें तो याद रहें- हस्ताक्षर सिर्फ हस्ताक्षर नहीं है, हस्ताक्षर उस व्यक्ति के व्यवहार का आईना है।

विवाह गुण मिलान और ज्योतिष

विवाह जीवन का एक ऐसा निर्णय है, जिसका सफल/ असफल होना सीधे तरीके से जातक के जीवन को प्रभावित करता है। एक सफल वैवाहिक जीवन आपकी प्रगति की रफ्तार को बढ़ाता है और असफल वैवाहिक जीवन प्रगति की रफ्तार को भले ही न घटाए, मगर कुछ देर के लिए ही सही मंद जरूर कर देता है। ऐसा मेरा मानना है, वो इसलिए भी क्योंकि हमारी संस्कृति पाश्चात्य देशों की तरह नहीं है। हम भले ही अब संयुक्त परिवारों में न रहते हों, मगर कहीं न कहीं हम अभी भी संयुक्त परिवारों से ही जुड़े हुए हैं।

विवाह से पहले अक्सर गुण मिलाए जाते हैं और 36 में से 18 या उससे ज्यादा होने पर विवाह के लिए उत्तम बताये जाते हैं और विवाह संपन्न करा दिया जाता है। लेकिन सिर्फ गुणों के आधार पर हम ये नहीं कह सकते कि वैवाहिक जीवन सफल होगा या नहीं। पिछले कुछ समय से मैं इस पर शोध कर रहा था और मैंने पाया कि अधिकतर मामलों में अगर ग्रह मैत्री न हो, वर- वधू की आने वाली महादशा अनुकूल न हो, तब भी इसके गम्भीर परिणाम भुगतने पड़ जाते हैं।

उदाहरण के तौर पर अगर दोनों का मंगल/ सूर्य उग्र है, दोनों में से कोई हठी स्वभाव छोड़ने को तैयार नहीं है, तो गुण मिलान के बावजूद समस्या आ सकती है। जिसे आज की भाषा में "ईगो क्लेसेश" कहते हैं। एक दूसरे उदाहरण में अगर दोनों का चन्द्रमा कमजोर है या लग्न बलवान नहीं है, तो ऐसी स्थिति में सम्भावना है कि ऐसे दम्पति किसी भी चीज को लेकर ठोस निर्णय न ले सकें और कई बार जरूरत से ज्यादा खर्चा कर लें, जिसको लेकर सम्भव है उन्हें बाद में पछतावा हो।

एक और प्रमुख बिंदु है जो मैंने काफी जन्मपत्रियों में देखा है। अगर पंचमेश की स्थिति दोनों की कुंडली में कमजोर होती है तो संतान सुख में कमी का योग बनता है, जिस वजह से दम्पति के जीवन का एक बड़ा हिस्सा दुःख सहते हुए बीत सकता है। दूसरे देशों की तुलना में हमारे देश में ऐसा होना सम्भव भी लगता है क्योंकि यहाँ ज्यादातर लोग विवाह ही सिर्फ संतानोत्पत्ति की वजह से करते हैं।

इस लेख को लिखने का उद्देश्य पढ़ने वाले के मन में किसी तरह का डर

बैठाना या संदेह डालना नहीं, बल्कि जागरूक करना है। .....कि विवाह सम्बन्धी निर्णय लेते समय सिर्फ गुण मिलान को या लड़का/ लड़की कितनी अच्छी जॉब में है, कितना पैसा- प्रॉपर्टी है, को योग्यता का पैमाना नहीं मानना चाहिये।

मैंने कई ऐसे मामले देखे हैं जिनमें थोड़े से स्वार्थ/ फायदे की वजह से या "जिम्मेदारी निभानी है, जितनी जल्दी निभ जाए" वाली एप्रोच पर चलने की वजह से लोग न यहाँ के रहे न वहाँ के।

ज्योतिष और प्रीप्लांड बच्चे

मुझे हमेशा लगता है कि उम्मीदें दुःख का कारण बनती हैं और यहीं से इस लेख को शुरू करता हूँ। इस विषय पर उतना ज्यादा कभी लिखा नहीं गया, लेकिन जो लोग ज्योतिष से बहुत ज्यादा जुड़े होते हैं अक्सर इस विषय के बारे में थोड़ी बहुत जानकारी रखते हैं। एलीट समाज में बच्चों के जन्म लेते समय इन चीजों का काफी ध्यान रखा जाता है कि उस समय ग्रहों की क्या स्थिति है? यह बहुत ही रोचक विषय है, लेकिन निजी तौर पर ये भी लगता है कि इसमें पड़ने वाला व्यक्ति अंत में ठगा हुआ ही महसूस करता है ।

सूर्य एक महीने तक एक राशि में रहते हैं। गुरु- शनि एक वर्ष से थोड़ा अधिक एक राशि में रहते हैं। इन तीन ग्रहों की स्थिति कुंडली में अगर अच्छी है तो कहा जा सकता है कि कुंडली अच्छी है। कई लोग डॉक्टरी सलाह के साथ ज्योतिषीय सलाह भी लेते हैं ताकि होने वाले बच्चे के ग्रह अच्छी स्थिति में हों और साथ ही डिलीवरी डेट में बदलाव भी करवाते हैं। लेकिन इसके अलावा भी बहुत से पहलू होते हैं, जिसके आधार पर ग्रहों के फल प्रभावित होते हैं।

एक पौराणिक कथा बड़ी प्रचलित है कि जब रावण की संतान होने वाली थी, उस वक़्त सारे ग्रह रावण की कैद में थे। ...तो रावण ने सभी ग्रहों से कहा कि आप सभी अपनी- अपनी अपनी उच्च राशि में चले जाओ या स्वग्रही हो जाओ। सभी ग्रह मजबूर थे, तो सभी ग्रह उच्च में और स्वराशि में चले गये। लेकिन उन्होंने न्याय के देवता शनि देव से प्रार्थना किया और कहा- जब रावण इतना ज्यादा दुष्ट है, उसने हमें इतना प्रताड़ित किया है, तो उसकी संतान के अगर सभी ग्रह बलवान होंगे तो वो हमें कितना परेशान करेगा? ये सुनकर शनि देव ने ग्यारहवें घर में तुला राशि (जो उनकी उच्च राशि है) में रहते हुए अपना एक पैर आगे निकाल दिया। जब रावण ने मेघनाथ की चलित कुंडली बनाई, तभी शनि बारहवें घर में वृश्चिक राशि में पहुँच गए और बारहवे घर में वृश्चिक राशि में बैठे शनि अकाल मृत्यु का कारण भी बनते हैं।

ये देखकर रावण ने शनि ग्रह की टांग खींच दी। तभी से शनि की चाल हल्की हो गयी और कहते भी हैं, “शनैः- शनैः चलते हैं शनि” और बाद में यही योग

मेघनाथ की मृत्यु का कारण भी बना।

एक और बात जो ध्यान देने वाली है। वह यह है कि जन्मकुंडली के ग्रहों को व्यक्ति कुछ हद तक नियंत्रित कर सकता है, लेकिन नवमांश के ग्रहों को नियंत्रित कर पाना लगभग नामुमकिन है। ......और ये हम सभी जानते हैं कि फलादेश में नवमांश कुंडली कितनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है? साथ ही हर 13-14 मिनट में नवमांश कुंडली बदल भी जाती है।

जब मैं इस विषय पर शोध कर रहा था तो अंत में एक निष्कर्ष पर पहुँचा और वो निष्कर्ष था, "कोई लाख करे चतुराई कर्म का लेख मिटे ना रे भाई"।

ज्योतिषी अपना भाग्य क्यों नहीं बदलते?

एक सवाल अक्सर लोगों के मन में आता है या लोग कुतर्क भी करते हैं कि इतना बड़ा ज्योतिषी है तो अपना भाग्य क्यों नहीं बदलता? उसके जीवन में परेशानियाँ क्यों हैं? दुःख क्यों हैं?

इस सवाल के जवाब को एक लेख में समझ पाना और समझा पाना बहुत जटिल है। सबसे पहले तो सबसे बड़ी बात ये है कि दुःख और सुख आपके दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। जो भी घटना जीवन में आपके साथ घटती है, उसके फायदे और नुकसान दोनों होते हैं। ये आपके ऊपर है कि आप उसका कौन सा पहलू देख रहे हैं।

दूसरा संसार में हर चीज एक दूसरे से जुड़ी हुई है। मैं कई ज्योतिषियों से मिला हूँ, जिनके दुःख की प्रमुख वजह उनके दुःख नहीं, उनके प्रियजनों के दुःख थे। किसी को बेटे- बेटी की सरकारी नौकरी न लग पाने का दुःख था, तो किसी को उनकी शादी न हो पाने का। साथ ही जब व्यक्ति किसी व्यक्ति की तरक्की से जलने लगता है तो उसके जीवन में दुःखों की बाढ़ आ सकती है और ये तरक्की किसी भी तरीके की हो सकती है। आर्थिक तरक्की, सामाजिक तरक्की, आध्यात्मिक तरक्की आदि। जीवन को करीब से देखेंगे तो आप पायेंगे, आप किसी दूसरे व्यक्ति की वजह से ही दुःखी होंगे।

हर किसी की जीवन यात्रा एक अलग देश, काल, परिस्थिति से शुरू होती है। .....और आपके जीवन की सफलता-असफलता इस बात से तय होती है कि जहाँ से आपने यात्रा शुरू की थी, उस जगह से आप कहाँ पर हो या कहाँ तक पहुँचे। अक्सर हम अपने जीवन की तुलना दूसरे के जीवन से करते हैं, इसलिए उदास रहते हैं। जबकि उसकी यात्रा शुरू ही अलग जगह से हुई होती है।

ज्योतिषी न अपना भाग्य बदलता है, न ही किसी और का भाग्य बदलता है। वो बस रास्ता दिखाता है और बुरे वक़्त में हिम्मत देता है। ज्योतिषी के द्वारा बताते गये उपाय भी जीवन में सकारात्मकता लाते हैं, धैर्य को बढ़ाते हैं। जिससे व्यक्ति के मन की उलझन कम होती है और उसे निर्णय लेने में आसानी होती है और जब व्यक्ति बिना उलझन कोई निर्णय लेता है, तो उसके सफल होने की संभावना बढ़ जाती है।

महान लोगों की कुंडलियाँ और ज्योतिष

जिस भी व्यक्ति की ज्योतिष में रुचि होती है, वह सबसे पहले अपनी कुंडली देखता है। अपनी कुंडली में बने हुए योगों को देखता है। उसके बाद वह महान लोगों की कुंडलीयाँ चेक करता है और उससे अपनी कुंडली को मिलाने की कोशिश करता है कि उसकी कुंडली में कौन- कौन से योग हैं? जो उसे महान बना सकते है। मुझे लगता है कि अमर हो जाना एक ऐसी चाहत है, जिसके लिए व्यक्ति कुछ भी करने को तैयार हो जाता है।

कई बार मुझे यह भी लगता है कि इसकी वजह से व्यक्ति वर्तमान का आनन्द ही नहीं ले पाता और जो सब कुछ भूलकर वर्तमान का आंनद लेते हैं, वह जरूर अमरत्व को प्राप्त होते हैं।

कुछ समय पहले मेरी एक मित्र के साथ, (जो शेयर मार्केट में ट्रेडिंग करता था और जिसकी ज्योतिष में भी थोड़ी बहुत रुचि थी) कुंडली के संदर्भ में बात हो रही थी तो उसने मुझे दुनिया के सबसे बड़े इन्वेस्टर वारेन बफेट की कुंडली दिखाई और मुझसे पूछा कि इस कुंडली में ऐसे क्या योग थे कि व्यक्ति इतना बड़ा इन्वेस्टर बना?

मैंने जब वारेन बुफेट की कुंडली देखी तो उसमें ऐसे कोई आश्चर्यजनक योग नहीं थे। आप कह सकते हैं कि जैसे एक सामान्य कुंडली होती है, वैसे ही कुंडली थी। बस नवमांश कुंडली में सूर्य वर्गोत्तम था। मैं इस विषय पर दो वजहों से बात करना चाह रहा था। पहली वजह है कि जो भी महान व्यक्ति है उसकी देश, काल, परिस्थिति कैसी थी? हमें ये भी समझना चाहिये। जैसा कि मुझे बाद में मालूम चला कि वारेन बफेट के पिता अपने देश में मंत्री या फिर किसी प्रशासनिक अधिकारी की पोस्ट पर थे। .... तो जैसा कि मैं कई बार कहता हूँ कि आपकी यात्रा जहाँ से शुरू होती है, आप अपने जीवन की उन्नति को उसके हिसाब से देख सकते हैं।

अगर आप उस घर में पैदा हुए हैं जहाँ आप के सर पर छत भी नहीं है और आप दो- मंजिला मकान भी बना लेते हैं तो मुझे लगता है कि आप अपने जीवन में सफल रहे। ..... और अगर आप किसी ऐसे घर में पैदा होते हैं जहाँ सभी लोग

विद्यारूपी धन से परिपूर्ण थे। लेकिन आपने धन तो बहुत कमाया लेकिन उस विद्या को आगे नहीं बढ़ा पाये, तो मुझे लगता है आप असफल कहलायेंगे।

वारेन बफेट के केस में जब उनका जन्म ही ऐसे परिवार में हुआ, जो व्यक्ति प्रशासनिक अधिकारी या फिर मंत्री हो, तो मुझे लगता है कि काफी चीजें तो पहले ही आसान हो जाती है। दूसरा इसमें यह भी समझना होगा कि जितने भी महान लोग थे, क्या उनकी कुंडलियां हमें सही मिली हैं?

अभी हाल ही में ज्योतिष के सिलसिले में मुझे एक खिलाड़ी की कुंडली देखने को मिली। मुझे उस खिलाड़ी का नाम नहीं पता था। ये भी मालूम नहीं था कि वह खिलाड़ी की कुंडली थी। मैंने उसकी कुंडली में योग देखे तो उसकी कुंडली में एक अच्छा खिलाड़ी बनने के योग बहुत कम थे। बाद में मुझे बताया गया कि यह एक प्रसिद्ध क्रिकेटर की कुंडली है। जब मैंने उस कुंडली को देखा तो वह सिंह लग्न की कुंडली थी और वह जो क्रिकेटर था, उसके कोई भी गुण सिंह लग्न से मिलते जुलते नहीं थे। उसके गुण तुला लग्न, मीन लग्न और मिथुन लग्न से मिलते जुलते थे।

हमें दो चीजें समझनी होंगी। सबसे पहले कि जो कुंडली आपको मिली है, वह सही भी है या नहीं? दूसरा कि जिस भी व्यक्ति की आप कुंडली देख रहे हैं, उसकी देश, काल, परिस्थिति क्या थी? अगर आप जवाहरलाल नेहरु जी की बेटी की कुंडली देख रहे हैं यानी इंदिरा गांधी जी की कुंडली देख रहे हैं और उसमें बहुत ज्यादा खराब ग्रह एवं योग भी होंगे, फिर भी वह उस जगह तक पहुँच जायेंगी, जहाँ तक शायद एक छोटे शहर की इंदिरा अच्छी किस्मत और पूरी कोशिशों के बावजूद भी ना पहुँच पाये। क्योंकि सक्षम के घर का वातावरण, अनुवांशिक गुण उनके मित्र, सगे- सम्बन्धी आदि यह सब चीजें उनकी मदद करेंगे ही करेंगे।

दूसरा वर्तमान में मैंने बहुत से ज्योतिषियों के साथ यह देखा है कि जब कोई घटना घट जाती है या जब उन्हें पता चलता है कि यह फलाने आदमी की कुंडली है, तो वह फिर उसमें योग बताने लगते हैं कि इस कुंडली में यह योग था। इस योग के कारण यह घटना घट गई है। मुझे लगता है कि एक ज्योतिषी का काम घटना घटने से पहले बताने का है, न कि घटना घटने के बाद। कोई घटना घटने के बाद तो हर कोई व्यक्ति बता देगा कि घटना क्यों घटी?

जो लोग ज्योतिष सीखना चाहते हैं, मेरी उन्हें सलाह है भूतकाल को भूलकर वर्तमान की घटनाओं पर बारीकी से नज़र रखें। यही से उन्हें भविष्य की

घटनाओं के बारे में पता लगेगा। महान लोगों की कुंडलियां अध्यन के लिए सही हैं, लेकिन उन पर इतना विश्वास नहीं करना चाहिये। क्योंकि वह कितनी प्रमाणिक है? यह बात हम पक्के तौर पर नहीं जान सकते।

दूसरी सबसे महत्वपूर्ण बात हर काल में महान होने के योग बदल जाते हैं। अगर त्रेतायुग में मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्रीराम महान थे, तो द्वापरयुग में माखनचोर, रणछोड़, कान्हा महान थे।

भेड़ चाल ज्योतिष

परािवद्याओं में गजब की भेड़ चाल है जिसके जो मन में आता है बोलता है और इतने आत्मविश्वास से बोलता है की अगला व्यक्ति ना सिर्फ उसे सच मान लेता है बल्कि सुनने वाला व्यक्ति भी वही ज्ञान देने लगता है, कई लोग आज से दो-तीन साल पहले मेरे पास अपनी कुंडली दिखाने आए थे आज वह ज्योतिष के प्रकांड विद्वान बन चुके हैं जबकि मैं आज भी ज्योतिष का विद्यार्थी ही हूं।

हमारे समाज के साथ दिक्कत बस ये है की जो भी व्यक्ति कोर्ट पहनकर कॉन्फिडेंस से इंग्लिश बोल देता है उसे हुनरमंद मान लिया जाता है, इसी तरह ज्योतिष में जो व्यक्ति दो-चार संस्कृत के श्लोक बोल या लिख देता है उसे विद्वान मान लिया जाता है जबकि हमेशा ऐसा हो ये बिल्कुल भी जरुरी नहीं।

बचपन में आपने भी सुना होगा कि जिसका तिल मुट्ठी में बंद हो जाता है वह बहुत धनवान होता है, असल बात ये है की ऐसे किसी तिल का इसका धनवान होने से कोई लेना-देना नहीं है हां कुछ एक मामलों में इससे रोग आदि का पता जरूर चलता है, इसी तरह आपने सुना होगा की हथेली जोड़ने पर जिसके हाथ में चांद बनता उसे सुंदर जीवनसाथी मिलता है इस बात में भी रत्ती भर सच्चाई नहीं है क्योंकि हृदय रेखा का जातक के जीवनसाथी से कोई लेना देना है ही नहीं।

जिन लोगों की रूचि ज्योतिष में थोड़ा ज्यादा है उन्हें पता होगा कि "भेड़ चाल ज्योतिष" में एक बात बहुत ज्यादा प्रचलित है, वह यह कि गुरु जिस स्थान पर बैठते हैं उस स्थान की हानि करते हैं और शनि से स्थान पर बैठने से स्थान का लाभ करते हैं, मैं आपको बताना चाहूंगा कि यह बात भी "अहिंसा परमो धर्मः" की तरह आधी सच है पूरा श्लोक कुछ इस प्रकार है।

शनि क्षेत्रे यदा जीव: जीव क्षेत्रे यदा शनि:,

स्थान हानि करो जीव: स्थानवृद्धि करो शनि: ||

अर्थात - गुरु के क्षेत्र (घर) में शनि हो और शनि के क्षेत्र (घर) में गुरु हो, तब गुरु उस स्थान की हानि करता है और शनि उस स्थान के फल में वृद्धि करते हैं।

उम्मीद करता हूं आपको यह लेख पसंद आया होगा मेरा आपसे बस यह निवेदन है की ज्योतिष में ही नहीं जीवन में भी किसी की बात पर भी आंख मूंद कर

भरोसा मत कीजिए, अगर सामने वाला व्यक्ति बहुत अधिक ज्ञानी भी हो तो भी भरोसा करने पहले स्वयं से उस बात की प्रमाणिकता जांच लिजिए, क्योंकि हो सकता है उसका अधूरा ज्ञान लेकर आप ज्ञान झाड़ने जाएं और आपके अधूरे ज्ञान की वजह से किसी भले आदमी का घर उजड़ जाए, अगर ऐसा हुआ तो याद रखियेगा उसकी दी हुई बद्दुआ जीवन के किसी मोड़ पर आपसे जरूर टकराएगी।

वास्तु शास्त्र का आधुनिक स्वरूप

वास्तु शास्त्र की आप जितनी भी किताबें देखेंगे उसमें ज्यादातर पुराने समय के राजाओं के महलों का उदाहरण देते हुए उनके विषय में बताया गया है, मुझे लगता है पुराने समय में पराविद्याओं पर एक तरह से धनाढ्य एवं संपन्न लोगों का ही एकाधिकार था, अभी भी कई लोगों अपना जन्म समय पता नहीं होता है क्योंकि उन्हें ज्योतिष के विषय में पता ही नहीं होता है।

कोई भी ज्ञान तभी तरक्की कर पाता है जब उसमें निरंतर शोध होते रहें और वह खुद भी समय के साथ बदलता रहे, पहले लोग घरों में रहते हैं बड़ा सा आंगन होता था आसपास खेत होते थे, फिर लोग बिना आंगन वाले घरों तक पहुंचे उसके बाद घर विला में तब्दील हो गए अब तो महानगर छोड़िए हमारे शहर (हल्द्वानी) में भी लोग फ्लैट्स में रहते हैं।

आपको लगता है आधुनिक समय में वास्तु के वहीं नियम उसी तरह से लागू हो पाएंगे शायद नहीं, क्योंकि जमीन की बढ़ती कीमतों एवं जमीन के कमी के बीच अब हर किसी के घर का मुख्य द्वार पूरब की ओर ही खुले ये बड़ा असंभव सा लगता है ऐसी स्थिति में तो अगर आपका दृष्टिकोण किताबी होगा तो आपको हर घर में वास्तुदोष नजर आएगा।

एक उदाहरण से समझिए समाज में तीन तरह के लोग रहते हैं पहले जो काफी संपन्न है, दूसरे मध्यवर्गीय, तीसरे वो जो किसी तरह से अपनी जिंदगी गुजारा कर रहे हैं, आपने गौर किया होगा इन तीन वर्गों के परिवार में जब भी कभी विवाह होता है तो जो संपन्न परिवार होता है वह अपने विवाहित पुत्र या पुत्री को नया फ्लैट/घर देते हैं या फिर बड़े घर में शिफ्ट हो जाते हैं, जो लोग मध्यमवर्गीय परिवार से होते हैं वह लोग विवाह तय होते ही या उससे पहले ही नवदंपति के लिए दो या तीन कमरे बना लेते हैं, अंत में जो कि तीसरा वर्ग है जिसका जैसे-तैसे गुजारा चल रहा है वह घर में दो-तीन बाथरूम बना लेते हैं थोड़ी बहुत मरम्मत करवा लेता है ताकि सदस्य बढ़ने के बाद किसी को असुविधा ना हो।

मुझे लगता है वास्तु के उपाय बताते समय वास्तु शास्त्रियों को जातक की परिस्थितियों (सामाजिक, आर्थिक) का भी आकलन करना चाहिए और उसी के अनुसार उपाय बताने चाहिए। इसके साथ-साथ अगर वो परिवार के सभी सदस्यों

की कुंडली देखेंगे और उनके स्वभाव के अनुसार उन्हें कमरे की दिशा, कमरे की स्थिति, दीवार का रंग आदि बताएंगे तो शायद उन्हें बेहतर नतीजे प्राप्त होंगे, क्योंकि अंत में घर कितना ही बड़ा हो कितना ही सुंदर हो रहेंगे तो उसमें पंचमहाभूतों से बने मनुष्य ही, घर स्वयं भी पंचमहाभूतों से ही बना है तो उन तत्वों के मध्य ऊर्जा का संतुलन जितना सही होगा परिजनों के बीच सामंजस्य उतना ही अच्छा होगा।

समय के साथ कितनी बदली है ज्योतिष?

हर चीज वक़्त के साथ कम या ज्यादा बदलती ही है। मेरा अपना मानना है कि टेक्नोलॉजी बदलते ही ज्योतिष पूरी तरह से बदल जाती है। योग वही रहते हैं लेकिन उनके फलादेश बदल जाते हैं।

ज्योतिष के अंदर "देश, काल, परिस्थिति" मेरा पसंदीदा विषय है। अपने अनुभवों के आधार पर मैं कह सकता हूँ, अगर कोई व्यक्ति जातक की "देश- काल- परिस्थिति" का अनुमान लगा ले तो यकीन मानिये, उसे उसकी कुंडली देखने की भी कोई जरूरत नहीं।

देश, काल, परिस्थिति के आधार पर ज्योतिष कितनी बदली है? इसे इस तरह समझिये। आज से कुछ साल पहले तक जब मोबाइल कैमरे एडवांस नहीं थे, इंटरनेट सस्ता नहीं था, उसकी स्पीड कम थी, तो कोई सपने में भी नहीं सोच सकता था कि "यूटूबर" या "व्लागर" बनना प्रोफेशन भी हो सकता है और कई लोग इससे लाखों कमा सकते हैं।

ठीक इसी तरह 50-60 के दशक के आस- पास लोगों की आठ- दस संताने होना सामान्य सी बात थी। वक़्त के साथ ये संख्या पाँच हुई, तीन हुई, उसके बाद दो होते हुए एक तक पहुँची। अब बड़े शहरों में कई लोग ऐसे देखने को मिल जाते हैं, जो सन्तानोपत्ति करना ही नहीं चाहते। वहीं दूसरी तरफ अभी भी गाँवों में ऐसे लोग होंगे, जिनकी पाँच- छः संतान होंगी। कुंडलियों में ग्रह वहीं हैं, उनसे बनने वाले योग वहीं हैं, फर्क बस देश, काल, परिस्थिति का है। जातक की प्राथमिकता का है, उसके दृष्टिकोण का है। ज्योतिषियों के लिए कुंडली देखकर जातक के भाई- बहनों की संख्या बताना या किसी की संतानें बता पाना उतना आसान नहीं रहा है।

मुझे लगता है कुंडली में जब लोग संतान सम्बन्धी सवाल लेकर आयें तो उसका उत्तर देने से पहले उनकी देश, काल, परिस्थिति और साथ ही उन्हें कोई स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या तो नहीं है? आदि चीजें जान लेनी या समझ लेनी चाहिए। इसमें एक बात बहुत महत्वपूर्ण गौर करने वाली है वह ये, ...कि ऐसा नहीं है कि वर्तमान समय में ऐसी कुंडलियों में संतान सुख नहीं है। आपने देखा होगा,

कई लोग अनाथाश्रम में जाकर बच्चों को गोद लेते हैं, अपने खर्चे पर उन्हें पढ़ाते लिखाते हैं, तो एक तरफ से भले ही उनकी कोई जैविक संतान ना हो, लेकिन उनके जीवन में संतान सुख होता ही है।

"ज्योतिष विज्ञान" हमेशा ही सॉफ्ट टारगेट रहा है। कोई भी व्यक्ति आकर इसे निराधार बताकर चला जाता है। चाहे उसने इसका रत्ती भर भी अध्ययन न किया हो। वही लोग अक्सर कुतर्क करते हैं- "पहले के समय में तो 16 की उम्र में शादी हो जाती थी। 25 की उम्र तक पहुँचते- पहुँचते चार- पाँच बच्चे। ....तो क्या अब ये योग खत्म हो गए हैं ?"

इसे इस तरह से समझने की कोशिश कीजिये कि पहले के समय में हर किसी का विवाह 16 की उम्र में ही नहीं होता था। दूसरा शास्त्रों के अनुसार विवाह आठ प्रकार के होते हैं- ब्रह्म, दैव, आर्य, प्राजापत्य, असुर, गन्धर्व, राक्षस और पिशाच। आजकल के समय में भी कुछ लोगों के 15-16 वर्ष की उम्र में ब्रह्म विवाह न सही, लेकिन आठ विवाहों में से कुछ एक तरह के विवाह हो ही जाते हैं ।

मानसागरी का अध्ययन करते हुए मैंने पाया कि उसमें बहुत से योगों के विषय में बताया गया था। जैसे जंगल से गुजरते हुए सर्पदंश, चौपाये के द्वारा शिकार, डाकुओं के द्वारा लूट आदि। अगर हम इसे सिर्फ पढ़ेंगे तो जरूर सोचेंगे कि भला आजकल जंगल से कौन गुजरता है? सांप किसको काटता है? आदि। लेकिन अगर हम इन योगों को वर्तमान की परिस्थिति में ढ़ालकर देखेंगे, तो हम पायेंगे कि लोग "जंगल सफारी" पर जाते हैं। कई देशों में जानवरों को नशे के इंजेक्शन लगाकर लोग उनके साथ तस्वीरें भी खिंचाते हैं और कई बार इस सब में हादसे भी हो जाया करते हैं ।

ये ठीक है कि अब चोर/ डाकू सामने से आकर आपको नहीं लूटते, लेकिन ऑनलाइन फ्रॉड या किसी बात को लेकर ब्लैकमेल करना भी उसी सूची में आता है। बस देश, काल, परिस्थिति पूरी तरह से बदल चुकी है।

ज्योतिषी आपकी मदद नहीं कर सकता, अगर आप......

कुछ लोग ज्योतिषी के पास जादू की उम्मीद लेकर आते हैं। उनकी महत्वाकांक्षाएं उन पर इतनी हावी होती हैं कि वह सच और कल्पना के बीच में जो तर्क की दीवार होती है, उसको पहले ही गिरा चुके होते हैं। ऐसे ही लोगों का ज्योतिषी फायदा भी उठाते हैं और यही लोग बाद में पछताते हैं।

जिस तरह एक साइकिल ठीक करने वाला साइकिल के टायर दुरुस्त कर सकता है, साइकिल में घण्टी, शीशा, स्टैंड आदि लगा सकता है, पर साइकिल चलाने वाले को रेस नहीं जितवा सकता, ठीक उसी तरह ज्योतिषी सिर्फ आपको रास्ता दिखा सकते हैं, प्रयास आपको खुद करने होंगे।

अगर आप नौकरी के लिए इंटरव्यू नहीं दे रहे हैं, खुद से प्रयास नहीं कर रहे हैं, तो ज्योतिषी आपकी नौकरी नहीं लगा सकता है। अगर आप विवाह करने के इच्छुक हैं मगर आपकी जीवनसाथी को लेकर "टॉल, डार्क, हैंडसम" या "स्लीम, फेयर, इंटेलिजेंट" वाली फरमाइशें हैं तो इस मामले में भी कोई ज्योतिषी आपकी मदद नहीं कर सकता। कुल मिलाकर ये कह सकते हैं कि आप जो भी हासिल करना चाहते हैं, अगर आपने उस दिशा में अपनी तरफ से प्रयास नहीं किये हैं तो आपकी मदद ज्योतिषी तो क्या कोई भी नहीं कर सकता। किसी भी चीज को पाने की पहली शर्त स्वयं उसके काबिल बनना है। अगर आप उस चीज के काबिल नहीं होंगे, तो मिलने के बाद भी उसे सम्भाल नहीं पायेंगे।

देश, काल, परिस्थिति को समझना भी हमेशा एक महत्वपूर्ण बिंदु होता है। मान लीजिए एक सरकारी पोस्ट की सिर्फ 12 ही वैकेंसी आयी हैं और उस पर 12 लाख लोगों ने अप्लाई किया है अथवा किसी कोर्स में दाखिले के लिए परीक्षा है, जिसकी सिर्फ 70 सीटें हैं और उस पर 7 हजार बच्चों ने फॉर्म भरा है, तो यहाँ "ज्योतिषीय योग" से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण "कर्म योग" है।

इसके संग- संग अगर आपको कोई अतिरिक्त लाभ यानी किसी भी तरह का कोई आरक्षण नहीं मिल रहा है, न ही आपकी बड़े अधिकारियों तक सीधी

पहुँच है, तो भी आपकी काबिलियत धरी की धरी रह सकती है। क्योंकि कई बार इंटरव्यू करवाया ही तब जाता है, जब लोग रख लिए जाते हैं।

आप बहुत शानदार लिखते हैं, बहुत शानदार गाते हैं, बहुत शानदार चित्र बनाते हैं, बहुत शानदार विचार रखते हैं, बहुत अच्छे खिलाड़ी हैं, लेकिन जब तक पुरुषार्थ करके दुनिया के सामने आप अपनी प्रतिभा को नहीं लेकर आयेंगे, आपको कोई नहीं पहचानेगा। शायद आपके पड़ोसी भी नहीं।

ज्योतिषी को जादूगर मत समझिये। ज्योतिषी आपकी मदद नहीं कर सकता, अगर आप अपनी मदद स्वयं नहीं करेंगे।

योग, दोष और ज्योतिष

मुमकिन है ज्योतिष के जानकर इस बात से बिल्कुल भी सहमत न हों, लेकिन मुझे लगता है कि कुंडली में बनने वाले योग प्राकृतिक हैं और दोष कृत्रिम है, मानव के द्वारा बनाए हुए।

अगर एक व्यक्ति महाधूर्त भी है तो वह पूरी दुनिया के लिए धूर्त हो सकता है, किन्तु खुद के लिए नहीं। .....और दुनिया में भी जरूरी नहीं कि वह हर व्यक्ति के लिए धूर्त ही हो। उसके भी कुछ अपने मित्र होंगे, उसके भी कुछ प्रियजन होंगे, उसके भी कुछ ऐसे लोग होंगे, जिनकी वजह से वो धूर्तता करके जीवनयापन कर रहा होगा।

मेरा अपना मानना यह है कि आपकी कुंडली में जो भी ग्रह या युतियाँ बनती हैं, वह आपकी रक्षा के लिए ही बनती हैं, ताकि आप विपरीत परिस्थितियों में भी अपना जीवन आसानी से जी सकें।

कई बार आपने देखा होगा किसी व्यक्ति के साथ कोई हादसा हो जाता है वह उस हादसे के लिए भगवान को बहुत ज्यादा कोसता है। ..... लेकिन 5 साल बाद, 10 साल बाद, 15 साल बाद या 20 साल बाद जब वह उस घटना के प्रभाव से पूरी तरह बाहर निकल आता है और उसके साथ कोई बहुत अच्छी घटना घटती है, तब वह फिर से सोचता है तो पता चलता है कि उस घटना की वजह से ही उसके जीवन में काफी बदलाव आया। अगर वह बुरी घटना नहीं घटती तो मुमकिन है वो वहाँ नहीं होता, जहाँ वह अभी है।

कुछ युतियों के आधार पर इसे समझने की कोशिश करते हैं। चंद्रमा जब भी राहु, केतु या सूर्य के साथ युति बनाता है तो ऐसा व्यक्ति बहुत अधिक सोचने वाला होता है। उसे छोटी- छोटी बातों पर गहन चिंतन की आदत या टेंशन लेने की आदत होती है। .....लेकिन आप पायेंगे कि जितने भी महान वैज्ञानिक हुए हैं, जिन्होंने भी नई खोजे की हैं, वह इसलिए खोज पाये क्योंकि उन्होंने किसी चीज को लेकर गहन चिंतन किया।

चंद्रमा के साथ केतु की युति व्यक्ति को बहुत ज्यादा भावुक और दयालु बनाती है। यूँ तो यह एक तरह से ग्रहण योग भी है, लेकिन अगर आप इसका

सकारात्मक पहलू देखेंगे, तो आप पाएंगे जितने भी अच्छे कलाकार हुए हैं या जितने भी अच्छे डॉक्टर और नर्स हुई हैं उनका एक मानवतावादी पहलू जरूर होता है। उस गुण के होने से ही वह समाज के हर तबके के व्यक्ति के साथ एकदम जुड़ते हैं और यही गुण उनकी सफलता का कारण बनता है।

यूँ तो मांगलिक योग (जिसे दोष बोलकर काफी डराया जाता है) पर एक अलग से लेख लिखा जा सकता है, मगर मेरी कोशिश रहेगी कि कम से कम शब्दों में उसने बेहतर तरीके से समझाया जा सकें। इसे इस तरह से समझा जा सकता है कि अगर किसी जातक के सातवें या आठवें भाव में मंगल होता है तो उसे क्रमशः सप्तमंगली एवं अष्टमंगली कहा जाता है। ऐसा जातक जीवनसाथी के लिए अच्छा नहीं समझा जाता लेकिन इसका सकारात्मक पहलू यह भी है कि जिसके सातवें भाव में मंगल होता है, उसका मंगल सातवी दृष्टि से लग्न को देखता है और ऐसा व्यक्ति दृढ़ निश्चय ही होता है। वह जो ठान लेता है वह करके ही रहता है। जब जातक के आठवें भाव में मंगल बैठता है तो वह उसके तीसरे भाव यानी पराक्रम भाव देखता है। ऐसा व्यक्ति बहुत ज्यादा पराक्रमी (संघर्षशील) होता है। वह किसी भी तरह की परिस्थितियों में हार नहीं मानता।

मैंने ऐसे बहुत से लोगों को अपने निजी जीवन में देखा है जो मांगलिक थे। .....लेकिन उनका विवाह मांगलिक व्यक्ति से नहीं हुआ, फिर भी आज वह एक सुखमय वैवाहिक जीवन जी रहे हैं। वहीं दूसरी तरफ में ऐसे बहुत से लोगों को जानता हूँ, जिनके गुण बहुत ज्यादा मिले, लेकिन उनका वैवाहिक जीवन बहुत ही ज्यादा बदहाल है।

दोष और योग ज्यादातर आपकी दृष्टि पर भी निर्भर करता है। अगर आपका चीजों को देखने का तरीका सकारात्मक है तो आपको हर जगह अच्छी चीजें दिखेंगी। अगर आपका चीजों को देखने का तरीका नकारात्मक है तो आपको हर जगह गलत चीजें ही दिखेंगी। पहलवान का बेटा अगर म्यूजिक टीचर बनना चाहें तो पहलवान को लगेगा इसकी कुंडली में कोई दोष है, उसी तरह अगर एक म्यूजिक टीचर का बेटा पहलवान बनने का सपना देखे, तो उसे लगेगा उसकी कुंडली में कोई दोष है।

भगवान के मास्टर प्लान पर भरोसा कीजिये, वह जो करते हैं आपके भले के लिए ही करते हैं। भगवान का आशीर्वाद हो तो 16 वर्ष की आयु लिखाकर लाने वाला बालक मार्कण्डेय भी मार्कण्डेय ऋषि बनकर यश पाते हैं, इतना यश कि

इतने युग बीतने के बाद भी बच्चों की दीर्घायु के लिए बच्चों के जन्मदिन पर मार्कण्डेय पूजा करवाई जाती है।

एनर्जी बनाम जातक और ज्योतिष

हर वस्तु सामने वाली वस्तु पर अपने गुणों के आधार पर कम या ज्यादा प्रभाव डालती है। जिस प्रकार मात्र एक चम्मच दही भी कई लीटर दूध का स्वरूप बदलने की क्षमता रखता है, ठीक उसी तरह दूसरे ग्रह भी पृथ्वी पर हम पर प्रभाव डालते हैं। कई बार बहुत से जातक जब मुझे कुंडली दिखाने के लिए आते हैं तो बड़े गर्व से बताते हैं मैं हर दिन इन मंत्रों का इतना जाप करता हूँ या मैं पिछले दस सालों से इस दिन का उपवास रख रहा हूँ। जब उनसे कारण पूछा जाता है तो वो बताते हैं कि मन हुआ तो करने लगा या परिवार में कोई सदस्य करता था, उसे देख देखकर करने लगे।

आगे बढ़ने से पहले एक छोटी सी कहानी का जिक्र करना चाहूँगा, जिसमें एक व्यक्ति हनुमान जी की तपस्या करता है। प्रसन्न होकर हनुमान जी प्रकट होते हैं और वरदान मांगने के लिए कहते हैं, तो व्यक्ति कहता है मुझे अपने जितना बल दे दीजिए। हनुमान जी कहते हैं तुम मेरे बल को धारण नहीं कर पाओगे। व्यक्ति फिर भी जिद पर अड़ा रहता है। हनुमान जी उस व्यक्ति को समझाने के उद्देश्य से अपनी उंगली उस पर रख देते हैं और व्यक्ति जमीन के अंदर धंस जाता है।

समुन्द्र मंथन में जब हलाहल विष निकला तो पूरी सृष्टि में आदियोगी भगवान शिव के अलावा कोई दूसरा नहीं था जो उसे धारण कर सके।

एक बात गौर करने वाली है। क्या हर व्यक्ति सेब पसन्द करता है? क्या हर किसी को लीची स्वादिष्ट लगती है? क्या हर कोई बेल का जूस पसन्द करता है? शायद इसका जवाब है, नहीं। ठीक उसी तरह हर चीज हर किसी को फलित हो जाये ये सम्भव नहीं है, ये हो सकता है कि उससे व्यक्ति को नुकसान न हो या जो नुकसान हो रहा हो वो नजर न आ रहा हो, मगर हर मन्त्र हर उपाय हर किसी के लिए नहीं बना होता।

व्यक्ति में तीन तरह के गुण पाये जाते हैं- तामसी, सात्विक, राजसी। उन्हीं के अनुसार व्यक्ति की प्रकृति बनती है। आयुर्वेद में भी व्यक्ति के अंदर वात, पित्त, कफ बताये गए हैं; जिसकी कमी या अधिकता से व्यक्ति का स्वास्थ्य प्रभावित होता है। तो जब व्यक्ति का स्वभाव अलग है, गुण-धर्म अलग हैं, तब सोचने वाली

बात है कि उपाय एक कैसे हो सकते हैं।

जिस तरह कभी बुखार आदि आने पर आप बिना डॉक्टरी सलाह के कोई दवाई नहीं लेते, उसी प्रकार व्यक्ति को बिना सोचे- समझे, जाने, किसी भी तरह के उपाय करने या मन्त्र आदि पढ़ने से बचना चाहिए। क्योंकि मंत्रों की भी अपनी शक्ति (ध्वनि/ एनर्जी) होती है और ये जरूरी नहीं कि हर उपाय हर मन्त्र आपके लिए बना ही हो।

जिस प्रकार अलग- अलग शरीर के हिसाब से व्यक्ति को एलोपैथिक, होम्योपैथी, आयुर्वेदिक, एक्यूप्रेशर आदि से लाभ होता है। हर उपचार विधि हर किसी को फायदा नहीं पहुँचाती, कभी- कभी उल्टा रिएक्शन जरूर कर देती है। लोग एक बीमारी के उपचार के लिए जाते और दूसरी बीमारी लेकर चले आते हैं, तो खुद ही सोचिये किसी भी वेबसाइट में पढ़कर, किसी का बताया कोई भी उपाय करके कहीं आप आग से तो नहीं खेल रहे?

मांगलिक जातकों के पति या पत्नी की मृत्यु हो जाती है?

एक सवाल बहुत लोगों को पूछते देखा। लगा कि इसका जवाब जरूर देना चाहिए। सवाल था मांगलिक लोगों की पति या पत्नी की मृत्यु हो जाती है ? ऐसा जरूरी नहीं है। थोड़ी बहुत दिक्कतें आती हैं, थोड़ा बहुत मनमुटाव हो सकता है जो आजकल हर परिवार में सामान्य ही है। कई बार पति- पत्नी को जॉब आदि की वजह से एक दूसरे से दूर भी रहना पड़ता है। मंगल व्यक्ति को साहसी बनाता है। अगर सातवें या आठवें घर में मंगल होता है तब जातक मांगलिक होता है और वहाँ से मंगल सातवीं और आठवीं दृष्टि से लग्न, द्वितीय और तृतीय यानी पराक्रम भाव को भी देखता है। वैसे मंगल की चौथी दृष्टि भी होती है तो वो क्रमशः कर्म स्थान और लाभ स्थान को भी देखेगा। ऐसे में जातक पराक्रमी होगा और अगर पराक्रमी होगा तो सम्भव है कोई ना कोई जॉब/ व्यापार करता हो और इसलिए घर से दूर या ज्यादातर वक़्त बाहर रहना पड़े।

एक या दो ग्रहों के आधार पर होने वाले फलादेश पर जब तक जातक यकीन करता रहेगा, यकीन मानिए पछताता रहेगा, डरता रहेगा, लुटता रहेगा।

करियर, तरक्की, मनोविज्ञान और ज्योतिष

एक बेहतर कैरियर, एक बड़े ओहदे की दौड़ व्यक्ति के जीवन में कभी खत्म नहीं होती। कई लोग जिनकी तनख्वाह 10हजार के करीब होती है, वो सोचते हैं 30हजार तनख्वाह जिस दिन हो जायेगी सब ठीक हो जायेगा। जिनकी तनख्वाह 30हजार होती है वो सोचते हैं 65-70होने पर सब ठीक हो जायेगा। असल में जिनको लगता है कि पैसों से सब ठीक होता हैं, उनका जीवन कभी ठीक नहीं होता। वो किसी न किसी वजह से दुःखी ही रहते हैं। (ऐसा नहीं है कि पैसा जरूरी नहीं है, बहुत जरूरी है। इतना कि बिना पैसों के साँस लेना भी मुश्किल है, मगर फिर भी पैसें को जीवन से बड़ा मान लेना मुश्किलों की ओर पहला कदम है।)

मेरे पास कुंडली लेकर आने वाले लोग हमेशा कहते हैं कि मैं डॉक्टर बनकर मरीजों की सेवा करना चाहता/ चाहती हूँ। मुझे कभी समझ नहीं आता/ आया कि ऐसी कैसी सेवा होती है जो सिर्फ एमबीबीएस करके ही की जा सकती है? आयुर्वेद/ होम्योपैथी के डॉक्टर बनकर नहीं।

कई लोग मेरे पास आकर कहते हैं कि वो आईएएस/ पीसीएस अधिकारी बनकर देश की सेवा करना चाहते हैं। मुमकिन है कुछ लोगों का भाव असल में देश सेवा हो, लेकिन ज्यादातर मामलों में ऐसा महसूस होता है कि आदमी दुनिया से, खुद से कितना झूठ बोलता है। साफ- साफ नहीं कहता कि उसे पैसा चाहिए, पावर चाहिए, इसलिए सिर्फ एमबीबीएस ही करना है, इसलिए सिर्फ आईएएस अधिकारी बनना है। आईआरएस या आईएफएस बनकर भी देश सेवा नहीं करनी।

देश सेवा तो निःस्वार्थ भाव से साल्लुमरादा टिकम्मा जी ने की और 66 सालों में 8000 से ज्यादा पौधे लगाए, जिसमें बरगद के पेड़ 400 से ज्यादा हैं। लेकिन कोई विरला ही साल्लुमरादा टिकम्मा जी जैसा बनना चाहेगा, क्योंकि न उनके पास ढ़ेर सारा पैसा है, न ही उनके पास पावर है।

ये तो इसका मानवीय पक्ष था। अगर इसके ज्योतिषीय और व्यवहारिक पक्ष पर बात करें तो अगर एक सीट के लिए पाँच सौ बच्चे प्रयास कर रहे हैं तो ये जरूरी नहीं कि बाकी के चार सौ निन्यानबे बच्चे काबिल नहीं हैं या उनकी कुंडली में योग नहीं हैं। इसका मतलब बस ये है कि वो किसी कारण से उस परीक्षा को

पास नहीं कर पाये। किताबें ऐसे उदाहरणों से भरी पड़ी हैं जिनमें सामने वाला परीक्षा तो पास नहीं कर पाया, लेकिन अपनी मेहनत के दम पर वहाँ तक पहुँचा, जहाँ खुद एक उदाहरण बन गया।

समय समय पर व्यक्ति के द्वारा आत्मावलोकन होना भी बहुत जरूरी है। हर किसी की अपनी क्षमता होती है, हर व्यक्ति हर कार्य में निपुण नहीं होता या हर कार्य के लिए नहीं बना होता। अगर वो किसी दबाब में आकर कुछ कर भी ले तो जरूरी नहीं कि सफल होगा ही होगा। ऐसे भी कई उदाहरण हमारे आस- पास मौजूद हैं।

बहुत से ऐसे प्रोफेशन होते हैं जिसमें एक वक्त के बाद आपको तरक्की मिलती हैं। उदाहरण के लिए वकालत का क्षेत्र, मीडिया का क्षेत्र। अगर आप उन प्रोफेशन से जुड़े हैं तो आपको ज्योतिषी की सलाह से ज्यादा सब्र और मेहनत करने की जरूरत है।

जो आपका मन करे वही करें क्योंकि वही आप जिंदगी भर पूरी मेहनत से खुश रहते हुए कर सकते हैं, और जो आप पूरी मेहनत से खुश रहते हुए करते हैं उसमें सफल होना या न होना मायने नहीं रखता। क्योंकि खुश रहने से बड़ा कोई एचीवमेंट नहीं।

ज्योतिष उपाय दिनचर्या तार्किक पक्ष

दिनचर्या में बदलाव से जीवन बदल जाता है, क्योंकि पल कैसे बीतेगा? ये तय करना आपके हाथ में है और पल आने वाले कल का ही एक रूप है। इस लेख में मैं अपने सीमित ज्ञान के साथ दिनचर्या में बदलाव के तार्किक पक्ष पर बात करना चाहता हूँ ताकि इस लेख को पढ़ने वालों को समझने में आसानी रहे।

चलिये, सूर्य से शुरुआत करते हैं। सूर्य राजा, प्रशासन आदि का कारक होता है। उसको अच्छा करने के लिए आपको सूर्योदय के समय उठना चाहिए। इसके तार्किक पक्ष को देखें, अगर आप सूर्योदय के साथ उठते हैं और एक व्यक्ति सूर्योदय से 3 या 4 घंटे बाद उठता है तो उस व्यक्ति की तुलना में आपके पास हर दिन 3 या 4 घंटे ज्यादा होंगे, यानी महीने में 90 से 120 घंटे। अगर आप दोनों का कार्यक्षेत्र एक ही हो तो मुमकिन है आप समय पर ऑफिस पहुँचकर सारे काम वक़्त पर करेंगे और वक़्त पर पहुँचने वाला, वक़्त पर सभी काम करने वाला व्यक्ति अलग ही चमकता है।

चंद्रमा मन का कारक है। चंद्रमा के उपाय के तौर पर जातक को जल का दान करना चाहिए या जितना सम्भव हो सके उतना अधिक पानी पीना चाहिए, मनोविक्षिप्त लोगों की सेवा करनी चाहिए। जैसा कि हम जानते ही हैं, मनुष्य के शरीर में लगभग 60 प्रतिशत जल होता है और शरीर में पानी की कमी से बेचैनी, थकावट, डिहाइड्रेशन, चक्कर आना आदि होता है। अगर व्यक्ति सही मात्रा में पानी पिये तो उसका मन शांत रहेगा और उसे ऊपर लिखी परेशानी या तो नहीं होगी या न के बराबर होगी।

मनोविक्षिप्त लोगों की निःस्वार्थ भाव से सेवा करने पर जातक को निश्चित तौर पर मानसिक शांति का अनुभव होगा और आध्यात्म से भी उसके तार जुड़ेंगे। मंगल रक्त का कारक है, मंगल के उपाय के तौर पर व्यक्ति को हर दिन जितना संभव हो सके अपनी शारीरिक क्षमता के अनुसार पैदल चलना चाहिए, साथ ही व्यायाम आदि करना चाहिए। इसका तार्किक पक्ष देखें तो व्यायाम आदि करने से या पैदल चलने से रक्त अपने सुचारु रूप से चलता रहेगा, समय- समय पर रक्त दान और खिलाड़ियों की मदद भी मंगल के अच्छे उपाय हैं।

बुध वाणी का कारक ग्रह है। बुध के उपाय के तौर पर व्यक्ति को मौन व्रत रखना चाहिए। कई बार जीवन में आपने देखा होगा, कम से कम इस दौर में कि व्यक्ति बोलता कुछ है, उसकी बात का मतलब कुछ और निकाल लिया जाता है,और उसकी एक या दो मिनट की वीडियो वायरल हो जाती है। तो अगर हम वाणी पर संयम रखें तो यह बुध का अपने आप उपाय हो जाएगा। खराब बुध की वजह से कई बार जातक को एलर्जी की समस्या भी होती है। बुध के उपाय के तौर पर जातक को पेड़- पौंधें लगा कर उनकी देखभाल करने की सलाह भी दी जाती है। अगर जातक खुद से पौधें लगाए तो मिट्टी और कई पौंधों में औषधीय गुण भी पाये जाते हैं जो दवा के साथ- साथ मुमकिन है जातक को एलर्जी में कुछ लाभ हो जाये।

गुरु ज्ञान का कारक है। अध्यापक, धर्मगुरु आदि गुरु। अगर व्यक्ति ज्ञानीजनों के साथ रहे तो गुरु अनुकूल फल देगा। जैसा कि आपने कहावत तो सुना होगा कि तरबूज के साथ तरबूज रंग बदलता है। अगर व्यक्ति अच्छे लोगों के संपर्क में रहेगा तो न चाहते हुए भी उसके ज्ञान में वृद्धि होगी और ज्ञान कहीं न कहीं जीवन में हमेशा काम ही आता है।

शुक्र ग्रह फेम/ प्रेम का कारक है। अच्छे साफ- सुथरे कपड़े, इत्र आदि इसका प्रतिनिधित्व करते हैं। अगर व्यक्ति साफ- सुथरा रहे, अच्छे कपड़े पहने, इत्र आदि का प्रयोग करे तो फर्स्ट इम्प्रेशन तो उस व्यक्ति का समाज में अच्छा ही रहेगा।

शनि मजदूर वर्ग का कारक होता है। शनि न्याय के देवता होते हैं। अगर जातक एक गरीब व्यक्ति के साथ अच्छा व्यवहार करेगा, मजदूर को मेहताना समय पर देगा, फल/ सब्जी वालों से फालतू का मोलभाव नहीं करेगा, तो इसकी संभावना कम ही है कि उसे शनि के दुष्प्रभावों का सामना करना पड़े, क्योंकि शनि सिर्फ उनके साथ बुरा करते हैं जो दूसरों के साथ बुरा करते हैं।

राहु के उपाय के तौर व्यक्ति को इंटरनेट से दूरी बनाकर रखनी चाहिए, जिसे डिजीटल उपवास भी कह सकते हैं। राहु व्यक्ति को निर्णय लेने में भ्रमित करता है और इंटरनेट, टेलीविजन इसमें कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं ये हर कोई जानता है।

केतु वैराग्य का कारक माना जाता है मछली को दाना खिलाना, कुत्ते को रोटी खिलाना इसके प्रमुख उपाय माने जाते हैं। मुमकिन है, लगातार ये उपाय करने

के बाद जातक के मन में करुणा, स्नेह, प्रेम के भाव जागृत हों। केतु के पास अपना दिमाग नहीं होता। केतु सिर्फ धड़ होता है यानी जिस ग्रह के साथ बैठता है उसके फलों में बढ़ोत्तरी कर देता है। मुमकिन है, इसलिए केतु के लिए गणेश जी की उपासना करने को कहा जाता होगा क्योंकि बुद्धि के देवता तो गणेश जी ही हैं।

इसके अलावा देश काल परिस्थिति पर भी काफी कुछ निर्भर करेगा। उदाहरण के तौर पर नाइट जॉब करने वाला सूर्योदय के समय नहीं उठ सकता। आईटी कंपनी में जॉब करने वाला व्यक्ति इंटरनेट से दूर नहीं रह सकता, अगर कोई जातक ड्राइवर है तो शायद वो चाहकर भी ऑफिस पैदल नहीं जा सकता।

उम्मीद करता हूँ ये लेख आपके लिए जीवन के हर मोड़ पर लाभकारी सिद्ध होगा।

अपना घर और ज्योतिष

प्रेम, नौकरी और विवाह के बाद सबसे ज्यादा पूछे जाने वाला सवाल है: अपना घर कब होगा?

जन्मकुंडली में मुख्य रूप से चतुर्थ भाव जिसे सुख स्थान भी कहते हैं, से घर की स्थिति के बारे में फलादेश किया जाता है।

चौथा घर अगर दूषित होगा या उस भाव के स्वामी की स्थिति अच्छी नहीं होगी, तो यकीन मानिए जातक को अपना घर बनाने में अड़चनें आयेंगी या फिर घर बन जाने के बाद घर में टूट- फूट, दीवारों में सीलन, पड़ोसियों के साथ झगड़े आदि हो सकते हैं। चतुर्थ भाव में अगर सूर्य, शुक्र, गुरु, चन्द्रमा आदि का प्रभाव है तो जातक किराए में भी रहेगा तो पूरे स्वामित्व के साथ रहेगा तथा सदा ही अच्छे स्थानों में रहेगा। वहीं दूसरी तरफ यदि शनि, राहु, केतु, ग्रहण योग आदि का प्रभाव है तो सम्भावना रहती है कि जातक का घर संकरी गली के अंदर हो, आस- पास कूड़े का ढ़ेर हो या घर के कुछ कमरों में अंधेरा आदि हो। दुष्ट या पाप ग्रह के प्रभाव के कारण ये तक देखा गया है कि जातक का घर तो अच्छी जगह होता है, घर बड़ा भी काफी होता है, लेकिन पूरे घर में सिर्फ उसी कमरे में अंधेरा होता जहाँ वो रहता है।

मुझे हमेशा लगता है किसी भी तरह का फलादेश करने से पहले उसे व्यवहारिकता के साँचे में ढालकर जरूर देखना चाहिए। कई बार घर न होने का कारण जिस शहर में व्यक्ति घर बनाना चाहता है उस शहर की महँगी जमीन या महँगे फ्लैट्स का होना भी होता है। छोटे शहरों में ज्यादातर लोगों का अपना घर होता है, घर के आगे आंगन होता है, लेकिन अगर दिल्ली/ मुम्बई/ बंगलौर आदि का उदाहरण लें तो वहाँ अच्छी लोकेशन में अपना फ्लैट होना ही किसी उपलब्धि से कम नहीं, खुद का बंगला तो विरलों का ही होता है।

ऐसी स्थिति में ये तो सम्भव नहीं कि उस शहर में रह रहे करोड़ो लोगों की कुंडली में चतुर्थ भाव दूषित ही होगा या पाप ग्रहों के प्रभाव में ही होगा। मुमकिन है कई लोगों के अपने मकान/ फ्लैट ओनर या पड़ोसियों से बहुत अच्छे सम्बन्ध हों, कई लोगों को रहने के लिए मकान/ फ्लैट कम्पनी की तरफ से मिले हुए हो

जिसकी वजह से उन्हें इस बात का कभी आभास ही न होता हो कि वो किराए के घर/ फ्लैट में रह रहे हैं या अपने घर में।

फलादेश करते समय जातक की देश, काल, परिस्थिति ज्ञात होना बहुत जरूरी है। देश, काल, परिस्थिति किस तरह फलादेश को प्रभावित करती है इस विषय में मैं कई लेखों पर अपने सीमित ज्ञान और सीमित अनुभव के आधार पर लिख चुका हूँ।

एक चीज और गौर करने वाली है। कई बार निर्धन परिवार में जन्म लेने वाला जातक अपने संग ऐसा भाग्य लेकर आता है कि उसके होश संभालने तक उसका परिवार बड़े घर में रहने लगते हैं। और कई बार एकदम इसका उल्टा भी होता देखा गया है। जीवन में घर सम्बन्धी दिक्कत आने पर जातक को चतुर्थ भाव और भावेश की स्थिति देखकर उसके उपाय करने चाहिए। अगर फिर भी स्थिति जस की तस बनी रहें तो परिवार के किसी अन्य सदस्य के नाम पर घर आदि लेना चाहिए। बाकी एक महत्वपूर्ण कहावत जो हर किसी को जीवन में याद रखनी चाहिए वो ये है कि जरूरतें सबकी पूरी हो जाती हैं और ख़्वाहिशें बादशाहों की भी अधूरी रह जाती हैं।

जावेद अख़्तर साहब ने कहा है-

सब का ख़ुशी से फ़ासला एक क़दम है,

हर घर में बस एक ही कमरा कम है।

मैं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का विरोधी हूँ लेकिन उसकी काबिलियत का फैन हूँ। कल एक मित्र से हवाट्सअप पर रत्नों और उसके प्रभाव एवं दुष्प्रभावों पर चर्चा हो रही थी। बातों ही बातों में प्रिंसेज डायना का जिक्र आया और आज प्रिंसेज डायना की तस्वीर सामने आ गयी। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस विज्ञापन की दुनिया में किसी क्रांति से कम नहीं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में इतनी काबिलियत है कि वो डिमांड पैदा कर सकती है। ख़ैर मॉर्केटिंग से हटकर इसके ज्योतिषीय पहलू पर लौटें तो कहा जाता है प्रिंसेज डायना का जब एक्सीडेंट हुआ था उससे कुछ हफ्ते या महीने पहले ही उन्होंने हीरा (कोहिनूर) पहना था और कोहिनूर के विषय में ये कहा जाता है कि वो जहाँ- जहाँ गया लोगों को उजड़ता चला गया।

ऐसी ही एक कहानी हरिवंश राय बच्चन के विषय में भी कही जाती है। कहा जाता है कि एक बार हरिवंश राय बच्चन जी एक व्यापारी मित्र के घर में गए हुए थे, व्यापारी के घर में उस वक्त एक सुनार आया था और व्यापारी अपने लिए

रत्न छाँट रहे थे। वहीं पर हरिवंश राय बच्चन जी बैठे थे उन्होंने वहाँ पर नीलम देखा और वह उसे उठाकर देखने लगे, इसी वक्त व्यापारी ने उनसे कहा अगर आपको भी कोई रत्न चाहिए तो आप खरीद लीजिए पैसे मैं दे दूंगा।

यह सुनकर सुनार बहुत हैरत में पड़ गया। सुनार ने हरिवंश राय बच्चन जी से कहा कि आप इस रत्न को अब नीचे मत रखिएगा। हरिवंश राय बच्चन जी ने इसकी वजह जाननी चाही तो सुनार ने कहा -व्यापारी हिसाब का कच्चा है। उसने मुझे पिछला बहुत सा पैसा देना है, लेकिन जैसे ही आपने रत्न हाथ में लिया उसने आपसे कहा कि आप जो चाहें वो ले सकते हैं। यानी यह रत्न आपके लिए बहुत ज्यादा लाभदायक है। इसके बाद हरिवंश राय बच्चन ने वह नीलम धारण कर लिया। कई सालों बाद जब अमिताभ बच्चन की फिल्में फ्लॉप होने लगी तो उन्होंने वह नीलम अमिताभ बच्चन को दे दिया।

इन दो घटनाओं के अतिरिक्त एक और घटना है जो मैं साझा करना चाहूँगा। यह एक सत्य घटना है जो मेरे साथ घटी। मेरी धनु लग्न की कुंडली है जिसमें चंद्रमा अष्टमेश हैं, कई साल पहले किसी ने मेरे घर वालों से कहा कि मुझे मोती पहनना चाहिए। मैंने मोती पहन लिया। मौसम बदला सर्दी का वक्त आया। मैंने मोती पहना था तो कुछ वक्त के बाद मेरी ऊँगलियाँ सूजने लगी। मुझे लगा कि मैं कुछ वक्त के बाद अपने आप ठीक हो जायेंगी या मैं अंगूठी उतार दूंगा, लेकिन एक दिन वह अंगूठी ऊँगली में फंस गई और उसकी स्थिति यह हो गई कि अंगूठी काटकर निकालनी पड़ी। हो सकता है यह बस एक इत्तेफ़ाक़ हो या मेरी नासमझी का नतीजा हो, लेकिन इसका दूसरा पहलू ये भी है कि छठे, आठवे, बारहवे यानी त्रिक भाव के स्वामियों के रत्न नहीं पहनने चाहिए।

रत्नों से जरूरी नहीं कि आपका ही बुरा हो। किसी ऐसे व्यक्ति/ वस्तु का भी बुरा हो सकता है जो आपको बहुत प्रिय हो। ऐसी स्थिति में आपको असहनीय मानसिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। नीलम पहनने से तो कई बार स्वभाव छोड़िये, व्यक्ति के रूप/ रंग तक में बदलाव आ जाता है। मेरा मानना है, रत्न राजसी उपाय के अंतर्गत आते हैं जो व्यक्ति के अहंकार में भी वृद्धि करते हैं। इसलिए मेरी तो हमेशा हर किसी को यही सलाह होती है जितना सम्भव हो सके सात्विक उपाय कीजिये और रत्नों को अंतिम विकल्प मानिए।

एक तांत्रिक से मुलाकात

तंत्र- मंत्र की अलग ही दुनिया है। लोग ज्योतिषियों पर इल्जाम लगाते हैं

कि ज्योतिषी लूटते हैं, लेकिन कोई कभी खुलकर नहीं बोलता की उन्हें तांत्रिक ने लूट लिया। उसके दो तीन कारण होते हैं। पहला लोग तांत्रिक के पास अक्सर उस ख़्वाहिश को लेकर पहुँचते हैं जिसके बारे में किसी को बता नहीं सकते। दूसरा उन्हें इस बात का भी डर रहता है कि अगर लुटने के बाद वो लोगों को बतायेंगे कि उन्हें एक तांत्रिक ने लूट लिया तो दुनिया पहले तो हँसेगी कि उस व्यक्ति की सोच कितनी दकियानूसी है? दूसरा उस व्यक्ति की छवि को भी नुकसान पहुँचेगा।

हाल- फिलहाल में कुछ एक मामले मेरे पास भी आये, जिसमें जातक ने बताया कि उनके 25-30हजार खर्च हो गए मगर कोई लाभ नहीं हुआ। उनकी बातें सुनकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ और जिन कारणों से वो तांत्रिकों से मिले, वो कारण भी बताये नहीं जा सकते।

मेरी बरसों पहले एक तांत्रिक से मुलाकात और लम्बी बातचीत हुई थी। लोगों को कभी मुझसे खतरा नहीं लगता कि मैं उनकी ट्रिक या सीक्रेट जानकर उनका बाजार हथिया लूँगा या उनकी पोल- पट्टी खोल दूँगा। वैसे पोल- पट्टी तो मैं खोल ही देता हूँ पर कभी नाम नहीं लेता, शायद यही वजह रहती है कि लोग मेरे साथ किसी भी तरह की जानकारी शेयर करने में सुरक्षित महसूस करते हैं।

तांत्रिक महोदय जो पेशे से ज्योतिषी भी थे, उनसे पहले ज्योतिष को लेकर बात हुई फिर जीवन के दूसरे पहलुओं पर बात हुई। फिर उन्होंने मुझे तंत्र क्रिया में प्रयोग होने वाली चीजें दिखाई। एक तरह से वह उनका संकलन था। वो बहुत सज्जन व्यक्ति थे तो उन्होंने मुझे उदाहरण के लिए "बिल्ली का जेर" दिखाया। बिल्ली के जेर को तंत्र शास्त्र में अनमोल और सौभाग्य सूचक माना जाता है और इसे प्राप्त करने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है, क्योंकि प्रसव के तुरंत बाद बिल्ली इसे खा जाती है और कई बार पता ही नहीं चल पाता कि बिल्ली ने बच्चों को जन्म कब दिया।

बिल्ली के जेर के विषय में पढ़ने/ सुनने में आया है कि इसे प्राप्त करने के लिए कभी बिल्ली को पिंजरे में रखना पड़ता है, कभी जंजीर से बांधकर। साफ सी बात है कि जो चीज बाजार में उपलब्ध ही नहीं है या इतनी मुश्किल से उपलब्ध है, उसकी कीमत तो ज्यादा होगी ही।

तांत्रिक मित्र से बात करके कुछ बातें मुझे समझ में आई। पहला तो ख्वाहिशों का कोई अंत नहीं। पहले संतान चाहिये, संतान होने का समय आया तो बेटा चाहिए, बेटा हुआ तो सबसे सुंदर होना चाहिये, सुंदर हुआ तो पूरे शहर में

सबसे बुद्धिमान होना चाहिए और ये ख़्वाहिशों का चक्र चलता ही रहता है। इसी तरह दूसरे तीसरे चौथे अनगिनत उदाहरण हैं।

इसके अलावा दूसरा महत्वपूर्ण कारण परिश्रम न करके सब कुछ तुरंत पा लेने की इच्छा। आज के दौर में व्यक्ति को सब हाथ में चाहिये, जबकि एक नन्हा पौंधा भी व्यक्ति से ज्यादा समझदार है जो जाड़ा, गर्मी, बरसात सहता रहता है लेकिन उम्मीद नहीं छोड़ता डटे रहता है और फल आने का इंतजार करता है।

इन्हीं चीजों का हमेशा फायदा उठाया जाता है। इसके साथ- साथ दो तीन बातें जो मुझे लगती हैं मुमकिन है तंत्र में रुचि लेने वाले या तंत्र का अध्ययन करने वाले इन बातों से इत्तेफाक न रखें, लेकिन कोई व्यक्ति किसी की किस्मत नहीं बदल सकता। किसी की किस्मत का लिखा उससे छीनकर दूसरे को नहीं दे सकता, किसी को किसी तरह का नुकसान नहीं पहुँचा सकता, कुछ देर के लिए सम्मोहित भले ही कर ले बातों से, कुछ खिलाकर-पिलाकर या सुंघाकर, लेकिन पूरी तरह से वश में नहीं कर सकता। अगर ऐसा कुछ होता तो यकीन मानिए एलन मस्क, जेफ बेजोस, वारेन बफेट, मार्क जुकरबर्ग आदि बिजनेसमैन नहीं होते, तांत्रिक होते।

कई बार हमें वही चित्र दिखता है जो हम देखना चाहते हैं। साथ ही हर मनुष्य का एक स्वभाव होता है। जो भी चीज मनुष्य को प्राप्त नहीं होती वो प्राप्त होने से पहले तक व्यक्ति को अनमोल ही लगती है, और उसे प्राप्त करने के लिए कोई भी कीमत चुकाने को किसी भी हद तक जाने को तैयार रहता है । वर्तमान समय में लोगों को मूर्ख इसी बिजनेस मॉडल के सहारे बनाया जा रहा है।

ज्योतिष, जातक, प्रमुख समस्याएँ एवं उपाय

बस स्टेशन में एक छोटी सी किताब आती है, जिसका नाम होता है "घर का वैद्य", जिसमें कुछ उपाय लिखे होते हैं जो बहुत आसान लेकिन उतने ही प्रभावी भी होते हैं।

इस लेख में हम उन्हीं समस्याओं और उनके उपायों के विषय में बात करेंगे। पिछले कई वर्षों से ज्योतिष के अध्ययन के दौरान जातकों की कुंडलियों में कुछ योग बारम्बार देखे। दस में से सात जातकों की कुंडली में यही योग होते हैं जिनकी वजह से वो परेशान रहते हैं।

सर्वप्रथम बहुत सी कुंडली में केमद्रुम योग बनता है। केमद्रुम योग में चंद्रमा के दाएं और बाएं तरफ कोई ग्रह नहीं होता यानी चंद्रमा अकेला होता है, जिसकी वजह से व्यक्ति मानसिक तौर पर थोड़ा परेशान रहता है। ...और जिस भाव में केमद्रुम योग बनता है, जातक को इस भाव से संबंधित समस्याएं ज्यादा रहती हैं। उदाहरण के लिए अगर दूसरे घर में बन रहा है तो परिवार में अनबन, धन की कमी आदि चीजें हो सकती हैं।

केमद्रुम और ग्रहण योग आदि बनने का मुख्य कारण जो मुझे समझ में आता है वो है चन्द्रमा की गति। लगभग हर सवा दो दिन यानी 54घण्टे में अपनी में चन्द्रमा अपनी राशि बदलता है। ...तो इसलिए कई बार ऐसी स्थिति बन जाती है कि चन्द्रमा अकेला हो, सूर्य के साथ ग्रहण योग में हो, राहु/ केतु के साथ ग्रहण योग में हो, शनि के साथ विष योग में हो या कभी दो पाप ग्रहों के बीच में आकर पापकर्ति योग में हो। चन्द्रमा मन का कारक ग्रह होता है, तो जब भी किसी ऐसे संयोग बनते हैं तो ऐसा जातक मानसिक रूप से परेशान रहता है। इस समस्या के उपाय के लिए जातक को शिव आराधना करनी चाहिए तथा चन्द्रमा को मजबूत करना चाहिए। शिव आराधना करने से व्यक्ति को शायद ही कोई नुकसान हो।

एक और योग जो जातक के जीवन को बहुत प्रभावित करता है वो है लग्न और सप्तम भाव में राहु, केतु या केतु, राहु का होना। कई बार देखा गया है कि ये योग होने पर जातक का विवाह देर से होता है, शुरुआती सालों में वैवाहिक जीवन में तालमेल की कमी रहती है क्योंकि केंद्र में बैठकर दोनों ग्रहों की पांचवी

दृष्टि पाँचवे/ग्याहरवें घर पर होती है और साथ ही पहली संतान के वक़्त भी समस्याएँ आ जाती है, क्योंकि पाँचवा घर खुद के लिए और ग्यारहवां घर जीवनसाथी के लिए प्रेम एवं प्रथम संतान का घर होता है।

इस समस्या के उपाय के लिए जातक को राहु और केतु के उपाय करने चाहिये। राहु के लिए चिड़ियों को दाना खिलाना और केतु के लिए गायत्री मन्त्र का पाठ सर्वश्रेष्ठ है।

एक अंतिम योग जिसके बारे में बात करने का मेरा मन है और जिसकी वजह से कई जातक परेशान रहते हैं वो है सप्तमेश का खुद से छठे, आठवे और बारहवे घर में बैठना या सातवे घर में दो या दो से अधिक पाप ग्रहों का होना।

इन योगों की वजह से भी जातक का वैवाहिक जीवन बहुत अस्त- व्यस्त हो जाता है। अगर बाकी ग्रहों की स्थिति ठीक न हो तो तलाक तक की स्थिति भी बन जाती है। इनके लिए जातक को गुरु/ शुक्र और पंचमेश के उपाय करने चाहिए ताकि जीवन में प्रेम बढ़े और रिश्तों की कटुता कम हो।

अंत में, मैं एक बात और कहना चाहूँगा जो लगभग हमेशा ही कहता हूँ। हर ग्रह के कुछ कारक होते हैं। उनका दान करके या उन्हें धारण करके आप उस ग्रह से सम्बंधित उपाय कर सकते हैं। उदाहरण के तौर पर जरूरी नहीं मंगल के उपाय के लिए आप मूंगा ही खरीदें और सोने में उसकी अंगूठी बनायें। आप उसकी जगह हनुमान चालीसा या बजरंग बाण का नियमित पाठ कर सकते हैं। समय- समय पर ब्लड डोनेशन कर सकते हैं या ब्लड डोनेशन कैम्पों में किसी अन्य तरह से सहयोग दे सकते हैं। खिलाड़ियों की मदद कर सकते हैं और सबसे आसान एक लाल कपड़ा या लाल रुमाल सदा अपने संग रख सकते हैं क्योंकि इन सभी चीजों का कारक मंगल है।

अपने अब तक के अनुभव के आधार पर कह रहा हूँ कि ऊपर लिखे योग अधिकांशतः फलित होते ही हैं फिर भी चलित कुंडली, नवमांश कुंडली आदि में ग्रहों की स्थिति देखकर फलादेश करना चाहिए। ज्योतिषियों को अगर कुंडली में दुर्योग दिखें भी तो भी कटु शब्द बोलने से हमेशा बचना चाहिए। क्या मालूम उसी वक़्त सरस्वती बैठी हों। उपाय बताते समय ज्योतिषियों को सदा ही जातक की देश/ काल/ परिस्थिति का ध्यान रखना चाहिए और उसे ऐसे उपाय बताने चाहिए जिसे वो आसानी से कर सके।

मोती पहन लो सब ठीक हो जाएगा

ज्योतिष और रत्नों को लेकर समाज में बहुत सी भ्रांतियाँ हैं। ऊपर से भेड़-चाल लोग बहुत जल्दी सुनी सुनाई बातों पर यकीन कर लेते हैं, जैसे दोनों हथेलियों को मिलाने पर अगर चाँद बने तो खूबसूरत जीवनसाथी मिलता है, ये बहुत बेतुकी बात है। इसी तरह एक चीज अपने समाज में और देखी होगी, अगर किसी व्यक्ति को गुस्सा आता है तो बहुत से लोग से कहते हैं कि मोती पहन लो सब ठीक हो जाएगा। यह बहुत आसानी से कही गई बात है जो अक्सर हर दूसरा- तीसरा व्यक्ति बोल देता है। लेकिन देखा जाये तो ये बहुत ही गंभीर बात है। सबसे पहले हर व्यक्ति को मोती सूट करें यह जरूरी नहीं, दूसरा उसे जो गुस्सा आ रहा है वह भी बहुत अलग- अलग प्रकार का हो सकता है।

एक गुस्सा होता है जो चिड़चिड़ापन लिए होता है, जिसमें व्यक्ति खुद का नुकसान करता है। एक गुस्सा एग्रेशन लिए होता है जिसमें व्यक्ति सामने वाले का नुकसान करता है, एक गुस्सा षड्यंत्र वाला होता है जिसमें व्यक्ति सुनियोजित तरीके से खुद को अलग रखते हुए सामने वाले को नुकसान पहुँचाता है। एक तरह के गुस्से में व्यक्ति शब्दों के जरिये अपशब्द आदि बोलकर गुस्सा प्रकट करता है, इसी तरह और भी अनेक तरह का गुस्सा होता है। आपको लगता है कि हर गुस्से का उपाय मोती है ? दूसरी बात यह है कि अगर किसी को गुस्सा आता है तो उस गुस्से को शांत करने की जरूरत क्या है? चाणक्य को गुस्सा आया था तो चंद्रगुप्त मौर्य का जन्म हुआ था, जमशेदजी टाटा को गुस्सा आया था तो होटल ताज का निर्माण हुआ था, युवराज सिंह को गुस्सा आया था तो उन्होंने छह बॉल में छह छक्के मारे थे। ....तो गुस्से को शांत करने की जरूरत क्यों है ? मुझे तो लगता है गुस्से को बस दिशा देने की जरूरत है ताकि आप अपने लक्ष्य को हासिल कर सकें।

यह तो गुस्से का एक मनोवैज्ञानिक पहलू है। अब हम आते हैं ज्योतिषीय पहलू पर। ज्योतिष में कर्क राशि के स्वामी होते हैं चंद्रमा और चंद्रमा का रत्न होता है मोती। अमूमन मान्यता यह है कि व्यक्ति को लग्नेश, पंचमेश और नवमेश के रत्न पहनना चाहिए। वह ज्यादा फलदाई होते हैं तो हर व्यक्ति का लग्नेश, पंचमेश,

नवमेश चन्द्रमा हो ये तो जरूरी नहीं? ..और कई बार लग्नेश, पंचमेश, नवमेश भी ऐसी स्थिति में बैठे होते हैं कि उतना रत्न पहनना फायदेमंद कम नुकसानदेह ज्यादा होता है।

कोई भी रत्न/ उपरत्न या उपाय करने से पहले जातक को किसी जानकार ज्योतिषी की सलाह जरूर लेनी चाहिए। कई बार मेरे पास ऐसे मामले आते हैं जिसमें किसी जातक के घर में कोई व्यक्ति कोई व्रत या मंत्र का जाप कर रहा होता है और उससे प्रेरित होकर वह व्यक्ति वही व्रत या उसी मंत्र का जाप करने लगता है। जिस तरह हर ताले की चाबी अलग होती है ठीक उसी तरह हर व्यक्ति के लिए अलग व्रत होते हैं अलग मंत्र होते हैं यह हर किसी को समझना चाहिए। जरूरी नहीं है कि अगर मंगल का व्रत मेरे लिए फलदाई है और मुझे देखकर कोई मंगल का व्रत करे तो उसके लिए भी उतना ही फलदायी होगा। फलदायी छोड़िये, कई बार फायदा होने के बजाय नुकसान होते हुए भी देखा है।

जातक को समझना चाहिए कि ये बात ठीक है कि मोती व्यक्ति को शांति प्रदान करता है लेकिन जरूरत से ज्यादा शांति व्यक्ति को अवसाद यानी डिप्रेशन की तरफ लेकर जाती है। ठीक इसी तरह मंगल का रत्न मूंगा है जो व्यक्ति को ऊर्जा देता है लेकिन अगर उस ऊर्जा की दिशा ठीक न हो तो जरूरत से ज्यादा ऊर्जा भी विनाश का कारण बनती है।

ज्योतिष और दक्षिणा बनाम दुआ

अमूमन इस विषय पर कोई लिखता नहीं या लिखने से परहेज करता है। ये लेख उन युवा साथियों के लिए है जो ज्योतिष को आय का साधन बनाना चाहते हैं। शुरुआत में मैंने भी फेसबुक पर निःशुल्क देखना शुरू किया था तो उसकी वजह से होता ये था लगभग हर कोई व्यक्ति दर्जनों सवालों के साथ आ धमकता था। ऐसा नहीं है कि हर व्यक्ति खराब ही होता था, कई लोग अच्छे भी मिलते थे और कई बहुत अच्छे भी, लेकिन इस पूरी प्रक्रिया में काफी ज्यादा समय लगता था।

....तो एक दिन मैंने अपने एक दोस्त से बात किया और मैंने उसे इस बारे में बताया। मैंने कहा- किसी व्यक्ति को मना करना अच्छा नहीं लगता, पता नहीं कौन किस परेशानी में हो। लेकिन इतने सारे लोग आ जाते हैं कि अपना काफी समय खराब हो जाता है, तो उसने कहा कि तुम ऐसा कर सकते हो कि एक सवाल हर किसी को निशुल्क बता सकते हो और उसके बाद फीस रख सकते हो। मुझे उसकी यह बात सही लगी उस दिन के बाद से मैंने "एक सवाल निःशुल्क, उसके बाद जो जातक की श्रद्धा" का नियम बना लिया। यकीन मानिए, जब मैं लोगों से कहने लगा "एक सवाल के बाद शुल्क देना होगा" तो कई लोगों की परेशानियाँ चमत्कारिक रूप से सही हो गयी। लोग उल्टे पाँव लौट गए। बिना ये पूछे कि वो श्रद्धानुसार शुल्क देकर बाकी के सवाल पूछ सकते हैं। मुझे ये देखकर काफी अच्छा लगा, क्योंकि इससे मेरा काफी समय बचा मैं दूसरी चीजों को समय दे पाया, और कई बार ये भी हुआ कि व्यक्ति ने सामने से "आपकी फीस क्या है ?" पूछा और मैंने उससे कहा कि "पहला सवाल मैं आपको निशुल्क बता सकता हूँ।" उसने फीस देने के लिए कहा तो मैंने मना कर दिया, क्योंकि मुझे हमेशा लगता है व्यक्ति को हर परिस्थिति में अपने बनाये नियमों का पालन करना चाहिए।

बहुत से लोगों को इस बात से थोड़ी आपत्ति रहती है कि निःशुल्क नहीं देखना चाहिए। कुछ लोगों का तर्क है कि गुरु/ बृहस्पति खराब होता है। कुछ लोग कहते हैं कि काम की फीस लेनी ही चाहिए। मेरा इसमें ये तर्क रहता है कि गुरु/ बृहस्पति तो ज्ञान ज्ञान का प्रतीक है। अगर आप किसी को ज्ञान बाटेंगे तो आपका ज्ञान हमेशा बढ़ेगा घटेगा नहीं। तो मुझे नहीं लगता कभी भी किसी की निःशुल्क

कुंडली देखने से आपका गुरु खराब होता है। कम से कम मुझे तो स्वयं के जीवन में इसके नकारात्मक परिणाम देखने को अभी तक नहीं मिले। हाँ यह बात सही है कि जो व्यक्ति आपको कुंडली दिखा रहा है उसको दक्षिणा देनी चाहिए। लेकिन मुझे लगता है ये ज्योतिष पराविद्या है तो ये आपको उसीके ऊपर छोड़ देना चाहिए। अगर वो आपको दक्षिणा नहीं देगा तो यकीन मानिए कहीं और से किसी न किसी दूसरे रूप में वो चीज आपको वापस मिल ही जाएगी। रही बात फीस की तो ज्योतिष की किसी नई- पुरानी किताब में नहीं लिखा कि आपको जातक से फीस लेनी ही चाहिए, हाँ जरूर यह लिखा है कि दक्षिणा लेनी चाहिए और वह दक्षिणा पूरी तरह जातक पर निर्भर करती है।

नए लोग जो ज्योतिष के क्षेत्र में आना चाहते हैं, मुझे लगता है उन्हें पैसे पर फोकस ज्यादा न करते हुए अपनी ज्योतिष को वह कैसे बेहतर कर सकें? इस पर विचार करना चाहिए। एक बात उन्हें हमेशा याद रखनी चाहिए कि प्रसिद्धि का रास्ता सिद्धि से होकर ही जाता है।

ज्योतिषीय उपाय कारगर क्यों नहीं होते?

"बहुत से ज्योतिषीय उपाय किए, लेकिन समस्या ज्यों की त्यों बनी हुई है, उसमें रत्ती भर भी फर्क नहीं आया...।" यह बात काफी लोग कहते रहते हैं और इधर से उधर भटकते भी रहते हैं।

उन्हें इसके लिए यह समझना होगा कि क्या उनके द्वारा अथवा ज्योतिषी के द्वारा उनकी समस्या की जड़ को खोजने की कोशिश की गई ? क्या जड़ पता लगने के बाद सही उपाय बताए गए ? कहीं ऐसा तो नहीं हुआ कि सर दर्द की असल वजह कुछ थी और वो उपाय किसी और चीज का करते रहे।

उदाहरण के लिए सातवां भाव जीवनसाथी का होता है। अगर किसी को वैवाहिक जीवन में समस्या आ रही है तो यह जरूरी नहीं कि उसे सिर्फ सातवें घर का उपाय करना चाहिए, सबसे पहले हमें यह समझना होगा कि उसे जो समस्या आ रही है वह किस वजह से आ रही है? जैसे कि दूसरा स्थान कुटुम्ब स्थान होता है यानी परिवार का घर जहाँ आप रहते हैं। साथ ही, इसे ही धन स्थान भी कहते हैं, तो जातक को जो वैवाहिक जीवन की समस्या आ रही है, क्या उसकी वजह पारिवारिक या आर्थिक तो नहीं ? पांचवा स्थान प्रेम का स्थान होता है और वही संतान का स्थान भी होता है तो ये भी टटोलना चाहिए कि वैवाहिक जीवन में जो समस्या आ रही है उसकी मुख्य वजह प्रेम या संतान तो नहीं ?

ज्योतिष में रुचि लेने वालों को ये समझना बहुत जरूरी है कि एक भाव बाकी के 11 भावों से भी जुड़ा रहता है। अगर आप संबंधित भाव को लग्न मानें तो उसके आसपास के सारे भावों का मोटा- मोटी अनुमान लगा सकते हैं। इसलिए जब भी आप कुंडली देखकर कोई भी उपाय बताएं तो इन सब बातों का अध्ययन करें और यह भी देखें कि कौन से ग्रह के उपाय करने से स्थिति जल्दी बेहतर हो सकती है।

इसके अलावा दो और महत्वपूर्ण पक्ष होते हैं। पहला जो कुंडली या बर्थ डिटेल आपके सामने आई है वो विश्वसनीय है भी या नहीं ? कई बार लोग विवाह न होने पर नकली कुंडली तक बनवाते हैं ऐसा मैंने देखा है। तो ऐसी कुंडली ज्योतिषीय उपाय कैसे कारगर होंगे खुद ही सोचिये।

दूसरा पक्ष यह कि व्यक्ति अपना आंकलन नहीं कर पाता और अपनी क्षमता से ज्यादा पाने की कोशिश करता है। यूँ तो ऐसी कोई चीज नहीं जो जातक के बस में न हो फिर भी हर व्यक्ति कुछ खास गुणों, शारीरिक एवं मानसिक विशेषताओं को लेकर जन्म लेता है और उन्हें पहचानकर व्यक्ति को उसी दिशा में प्रयत्न करने चाहिए जहाँ वो अपना शत-प्रतिशत दे पाये।

ज्योतिषी आपकी मदद नहीं कर सकता, अगर आप......

कुछ लोग ज्योतिषी के पास जादू की उम्मीद लेकर आते हैं। उनकी महत्वाकांक्षाएं उन पर इतनी हावी होती है कि वह सच और कल्पना के बीच में जो तर्क की दीवार होती है, उसको पहले ही गिरा चुके होते हैं। ऐसे ही लोगों का ज्योतिषी फायदा भी उठाते हैं और यही लोग बाद में पछताते हैं।

जिस तरह एक साइकिल ठीक करने वाला साइकिल के टायर दुरुस्त कर सकता है, साइकिल में घण्टी, शीशा, स्टैंड आदि लगा सकता है पर साइकिल चलाने वाले को रेस नहीं जितवा सकता, ठीक उसी तरह ज्योतिषी सिर्फ आपको रास्ता दिखा सकते हैं प्रयास आपको खुद करने होंगे।

अगर आप नौकरी के लिए इंटरव्यू नहीं दे रहे हैं, खुद से प्रयास नहीं कर रहे हैं तो ज्योतिषी आपकी नौकरी नहीं लगा सकता है। अगर आप विवाह करने के इच्छुक तो हैं मगर आपकी जीवनसाथी को लेकर "टॉल, डार्क, हैंडसम" या "स्लीम, फेयर, इंटेलिजेंट" वाली फरमाइशें हैं तो इस मामले में भी कोई ज्योतिषी आपकी मदद नहीं कर सकता। कुल मिलाकर ये कह सकते हैं आप जो भी हासिल करना चाहते हैं अगर आपने उस दिशा में अपनी तरफ से प्रयास नहीं किये हैं तो आपकी मदद ज्योतिषी तो क्या कोई भी नहीं कर सकता। किसी भी चीज को पाने की पहली शर्त स्वयं उसके काबिल बनना है, अगर आप उस चीज के काबिल नहीं होंगे तो मिलने के बाद भी उसे सम्भाल नहीं पायेंगे।

देश काल परिस्थिति को समझना भी हमेशा एक महत्वपूर्ण बिंदु होता है। मान लीजिए एक सरकारी पोस्ट की सिर्फ 12 ही वैकेंसी आयी हैं और उस पर 12 लाख लोगों ने अप्लाई किया है, किसी कोर्स में दाखिले के लिए परीक्षा है जिसकी सिर्फ 70 सीटें हैं और उस पर 7 हजार बच्चों ने फॉर्म भरा है, तो यहाँ "ज्योतिषीय योग" से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण "कर्म योग" है ।

इसके संग- संग अगर आपको कोई अतिरिक्त लाभ यानी किसी भी तरह का कोई आरक्षण नहीं मिल रहा है, न ही आपकी बड़े अधिकारियों तक सीधी

पहुँच है तो भी आपकी काबिलियत धरी की धरी रह सकती है, क्योंकि कई बार इंटरव्यू करवाया ही तब जाता है जब लोग रख लिए जाते हैं।

आप बहुत शानदार लिखते हैं, बहुत शानदार गाते हैं, बहुत शानदार चित्र बनाते हैं, बहुत शानदार विचार रखते हैं, बहुत अच्छे खिलाड़ी हैं, लेकिन जब तक पुरुषार्थ करके दुनिया के सामने आप अपनी प्रतिभा को नहीं लेकर आयेंगे, आपको कोई नहीं पहचानेगा। ....शायद आपके पड़ोसी भी नहीं।

ज्योतिषी को जादूगर मत समझिये। अकेला ज्योतिषी आपकी मदद नहीं कर सकता, अगर आप अपनी मदद स्वयं नहीं करेंगे।

ठग, चोर और डाकू

एक मित्र ने इस सम्बंध में प्रश्न किया। उन्होंने कहा कि पहले ये मंगल और राहु के अंतर्गत आता था अब इनमें बुध देव भी सहयोग करने लगे हैं, जैसे ऑनलाइन फ्रॉड आदि।

मुझे लगता है सबसे पहले ठग, चोर, डाकू में अंतर को समझना होगा। ठग बातों में उलझाकर आपको लूटता है तो कह सकते हैं बुध और राहु का सम्बन्ध। चोर आपकी अनुपस्थिति में चोरी करता है, वो कई दिनों/ हफ्तों से घात लगाकर सही समय का इंतजार करता है तो कह सकते हैं चन्द्रमा राहु का सम्बन्ध और डाकू पूरी दबंगई के साथ सामने से आकर आपको लूटता है यानी मंगल केतु का संबन्ध।

इसके इतर इसी तरह मानसिक अवसाद जो कमजोर चन्द्रमा की देन है उसमें भी फर्क है। कुछ लोग बहुत ज्यादा सोचते हैं, छोटी सी बात पर टेंसन ले लेते हैं, वो चन्द्रमा और राहु की वजह से है। कुछ लोग छोटी सी बात पर झुंझला जाते हैं, उनका स्वभाव चिड़चिड़ाहट वाला होता है, वो सूर्य- चन्द्र के ग्रहण योग की वजह से होता है।

हर बार ऐसा ही हो जरूरी नहीं कुंडली के अन्य ग्रहों तथा युतियों पर भी चीजें निर्भर करेंगी, साथ ही नवमांश में भी कई बार ग्रह के अच्छी स्थिति में बैठने से वर्गोत्तम होने से स्थिति पूरी तरह से बदल जाती है।

सरल ज्योतिष बनाम जटिल ज्योतिष

समय के साथ- साथ ज्योतिष एक बड़ा बाजार बनता जा रहा है, लेकिन इसके जिम्मेदार जितने ज्योतिषी हैं, उतना ही जातक भी है। आसान उपायों को जातक कभी मानता ही नहीं, उसे हर बार यही लगता है जब तक वह भारी भरकम उपाय नहीं सुनेगा, उसे कुछ महँगे रत्न नहीं बताये जायेंगे, तब तक उसे फायदा नहीं होगा। कितनी बार ये तक होता है कि जिस व्यक्ति ने बड़ा तिलक न लगाया हो दस ऊँगलियों में आठ अंगूठियाँ न पहनी हों, जातक उस व्यक्ति जो ज्योतिषी मानता ही नहीं।

अपने पिछले अनुभवों के आधार पर मैं ये कह सकता हूँ कई बार जब आप जातक को बहुत आसान उपाय बताते हैं तो वह पूछता है और क्या करना है ? उनका इशारा इस तरह होता है कि आप उनसे कहें आपको खुद जाकर शुतुरमुर्ग का अंडा लेकर आना है और उसे घर की पश्चिम दिशा में रखना है और सुबह उठकर उसके दर्शन करने हैं। जब तक आप उन्हें ऐसा कोई उपाय नहीं बतायेंगे वो आप पर विश्वास नहीं करेंगे।

इसका शायद एक मनोवैज्ञानिक पक्ष है। वह यह कि जब तक आदमी पैसें खर्च नहीं करता या जब तक उससे पैसे खर्च नहीं करवाये जाते, तब तक उसे लगता ही नहीं कुछ हुआ है। दूसरा जब तक लोगों को डराया नहीं जाए तब तक वो हर चीज को हल्के में ही लेते हैं। तीसरा, साधारण उपाय उन्हें दकियानूसी पुरानी सोच के लगते हैं। उन्हें लगता होगा कोई टीका लगाए हुए या रोजाना मंदिर जाते हुए उन्हें देखेगा तो समाज में उन्हें रूढ़िवादी विचारधारा का समझा जायेगा। कुछ लोगों को लगता है कि पेड़ों को पानी देने से या किसी गरीब को भोजन देने से किसी समस्या का हल कैसे हो सकता है? तो उन्हें ये समझना चाहिए कि जब एक निर्जीव पत्थर (रत्न) आपका भाग्य बदल सकता है तो एक जीवित पेड़ या जीवित मनुष्य दुआ देकर आपका भाग्य कैसे नहीं बदल सकता।

कुछ समय पहले एक व्यक्ति मेरे पास अपनी कुंडली दिखाने आए। वह बहुत बहुत परेशान थे। उनकी कुंडली का निरीक्षण करने के बाद मैंने पाया कि उनकी कुंडली में सिर्फ चंद्रमा से संबंधित समस्याएं थी, जैसा कि आप जानते हैं कि

चन्द्रमा मन का कारक होता है और कमजोर चंद्रमा यानी कमजोर मन पूरे जीवन को प्रभावित कर सकता है। मैंने उन्हें सिर्फ एक आसान सा उपाय बताया, मैंने कहा कि आप सोमवार/ पूर्णिमा का व्रत कीजिए और हर दिन हो सके तो शिव मंदिर के दर्शन कीजिए। उन्होंने कहा और क्या करना चाहिए ? मैंने कहा इतना काफी है इतना करके देखें।

उन्होंने कहा कुछ और बताते तो शायद अच्छा रहता। मैं समझ गया कि यह मुझसे कोई जटिल उपाय सुनना चाह रहे हैं, तो मैंने उन्हें समझाया- "देखिए सर मैं आपको ये भी कह सकता हूँ की आपके पंचमेश का स्वामी दुष्ट ग्रहों के साथ बैठकर क्षीण हो गया है, जिसके कारण उसका स्वयं का बल समाप्त हो चुका है। उसे पुनः बल देने के लिए आपको भोलेनाथ शिव की शरण में जाना होगा, वही आपका कल्याण करेंगे अन्यथा बड़ी हानि हो सकती है।" ये सुनने के बाद उन्हें मेरी बात काफी हद तक समझ में आ गयी, इस तरह के बहुत से मामले लगातार आते रहते हैं। कुछ लोग तो कहते हैं "हमें नग पहनने का मन है, हमें कौन सा नग पहनना चाहिए?"

वैसे अगर व्यक्ति एक घण्टा पहले उठना और दो घण्टे पहले सोना शुरू कर दे तो उसकी काफी समस्याओं का समाधान हो सकता है जल्दी उठना सूर्य का और जल्दी सोना चन्द्रमा का उपाय है।

ज्योतिषी रास्ता बताता है, बनाता नहीं

ज्योतिष को वेदों में नेत्र कहा गया है और नेत्र का काम सिर्फ लक्ष्य को देखना होता है। उस लक्ष्य तक पहुंचने के लिए आपको पैरों की जरूरत होती है, दिमाग की जरूरत होती है, इच्छाशक्ति आदि की जरूरत होती है यानी सिर्फ लक्ष्य को देख भर लेने से आप लक्ष्य को हासिल नहीं कर सकते।

बहुत से जातक बहुत से अटपटे सवाल लेकर उपस्थित होते हैं। अटपटे से मेरा मतलब है पहुँच से बाहर वाले। जैसे मेरे पास अपार धन संपदा कब होगी? मेरे पास बड़ा घर कब होगा? आदि। ऐसा नहीं है ये चीजें होना सम्भव नहीं हैं या किसी के पास हैं नहीं, लेकिन व्यक्ति कभी आत्मावलोकन नहीं करता या फिर नहीं करना चाहता।

उदाहरण के तौर पर एक जातक है, जो मुंबई या बेंगलुरु जैसे किसी महानगर में रहता है और वह चाहता है कि किसी पॉश इलाके में उसका अपना घर हो। ....तो यह बहुत सोचने वाली बात है कि मुंबई या किसी बड़े महानगर में अपना फ्लैट होना ही एक बड़ी बात होती है। ऐसे शहर में अगर वह देश काल परिस्थिति को नहीं समझ रहा है और वह घर पाना चाहता है तो यह बात जीवन भर उसे परेशान करती रहेगी और शायद ही कभी उसे इसका कोई हल मिल पाये।

एक दूसरे उदाहरण में एक बालक है, जिसका पढ़ाई में मन बिल्कुल नहीं लगता और जो साल भर पढ़ाई नहीं करता। लेकिन उसके माता- पिता चाहते हैं कि किसी ज्योतिषीय उपाय से न सिर्फ वो पास हो बल्कि क्लास में टॉप कर जाए, मुझे लगता है ये बहुत असम्भव सी बात है।

इस वक़्त एक सवाल जो बहुत टेंडिंग है वो है कि मुझे नौकरी करनी चाहिए या बिजनेस? तो मुझे लगता है यह सवाल भी आत्मावलोकन का सवाल है। व्यक्ति को खुद पता होता है कि वह जॉब कर कर सकता है या व्यापार? व्यापारी की जो पहली विशेषता होती है वह होती है बाजार को समझकर निर्णय लेने की क्षमता। अगर एक व्यक्ति में निर्णय लेने की क्षमता ही नहीं है कि उसे नौकरी करनी है या व्यापार करना है तो वह कैसे अच्छा व्यापारी बन सकता है?

दूसरा कुछ लोग कहते हैं कि किस चीज का व्यापार करना चाहिए? ....

तो जो चीज उन्हें सबसे ज्यादा चीज अच्छी लगती है, जिसमें उनका इंटरेस्ट है, जिसे वो कुशलता से कर सकते हैं, उन्हें उस चीज का व्यापार करना चाहिए। कुशल व्यक्ति कचरा बेचकर भी करोड़ों कमा लेते हैं और जो व्यक्ति कुशल नहीं होते वो अरबों के व्यापार का भी कचरा कर देते हैं। जो जातक ज्योतिषी से पूछ रहा है कि उसे भी नौकरी करनी चाहिए कि बिजनेस करना चाहिए? ...तो मुझे लगता है कि उसे नौकरी ही करनी चाहिए। जिसे खुद ही अपने आप पर भरोसा नहीं है तो मुझे नहीं लगता वह एक सफल बिजनेसमैन साबित हो पाएगा।

यह बात ठीक है कि ग्रह कुछ तत्वों का प्रतिनिधित्व करते हैं, साथ ही राशियों और भावों से दिशाओं का पता भी चलता है किस- किस जातक को किस तरह का व्यापार करके या किस दिशा में जाकर सफलता मिलेगी, लेकिन यह भी बहुत महत्वपूर्ण है कि व्यक्ति का अपना विजन क्लियर होना चाहिए। जिस तरह किताबों में पढ़कर स्विमिंग, क्रिकेट, बॉक्सिंग, साइकलिंग नहीं सीखी जा सकती, उसी तरह बिना अभ्यास के गीत/ संगीत नहीं सीखा जा सकता और बिना पढ़े पास तो हुआ जा सकता है मगर टॉप करना असम्भव है।

ज्योतिष आपकी ऊर्जा को दिशा दे सकता है, आपके अंदर ऊर्जा पैदा नहीं कर सकता, अपनी ऊर्जा आपको खुद पैदा करनी होगी या खुद खोजनी होगी। पहला सवाल खुद से कीजिये कि आप क्या चाहते हैं? फिर खुद को बताइये कि उसे हासिल करने के लिए क्या कर रहे हैं या क्या करेंगे? फिर भी सफलता न मिले तभी ज्योतिषी के पास जाइये।

ज्योतिष और इष्ट सिद्धि

यूं तो ज्योतिष के दो भाग होते हैं- गणित और फलित। गणित में गणनाएं होती हैं जिनकी मदद से कुंडली बनाई जाती है और फलित जिसकी मदद से ग्रह,योगों और युतियों के आधार पर फलादेश किया जाता है।

ज्योतिष का एक और अदृश्य भाग होता है जिसे इष्ट सिद्धि या वाक सिद्धि कहा जाता है। एक ज्योतिषी में और बहुत अच्छे ज्योतिषी में बस इसी का फर्क होता है। क्योंकि भाव तो बारह ही हैं, ग्रह भी नौ ही हैं, लेकिन एक ज्योतिषी की कही बात पत्थर की लकीर हो जाती है और दूसरे कही बात पानी में लिखा नाम।

सत्य का नियमित अभ्यास ही वाकसिद्धि कहलाता है और यह सिर्फ ज्योतिष तक ही सीमित नहीं है। अगर आप दूसरे क्षेत्रों में भी देखेंगे तो आप पाएंगे कि बहुत से लोग अपने क्षेत्र में किसी चीज को मात्र देखकर ही उसकी भविष्यवाणी कर देते हैं। जैसे कोई इंजीनियर मशीन की आवाज सुनकर बता देता है कि मशीन सही है या खराब, एक क्रिकेटर पिच देखकर बता देता है कि इस पिच पर कितने रन पड़ेंगे और चौथे दिन इसका व्यवहार कैसा होगा यानी वह अपने कार्यक्षेत्र के प्रति इसका समर्पित होता है कि ज्योतिष न जानते हुए भी वो सटीक भविष्यवाणी कर देता है।

ज्योतिषीय दृष्टिकोण में इसे समझने के लिए आप इस तरह समझ सकते हैं कि अगर आप किसी जातक की निस्वार्थ भाव से मदद कर रहे हैं तो निश्चित तौर पर वह आपको दुआएं देगा और वह दुआएं जीवन भर आपके साथ रहेंगी। समय के साथ ज्योतिष व्यापार बनता जा रहा है और ज्योतिषी व्यापारी या दूसरे शब्दों में कहें तो आजकल ज्योतिषी ज्योतिष के ज्ञाता से ज्यादा रत्न विक्रेता ज्यादा हो गए हैं। मुझे हमेशा लगता है अगर आप किसी व्यक्ति को डरा कर, उसका मन दुखा कर उससे मनचाही फीस या मनचाहा पैसा ले रहे हैं तो निश्चित तौर पर वह आपको दुआएं तो नहीं देगा। ....और अगर वह आपको दुआएं नहीं देगा और आपके मन में पाप होगा तो यह संभव ही नहीं कि आप वाकसिद्धि को प्राप्त कर पाए। ये संभव है कि आप बहुत योग्य हों, बहुत ज्ञानी हों और आप की

भविष्यवाणियां हमेशा सही होती हो, लेकिन आप यह तय मानिए की उसके दिल से निकली बद्दुआ, उसकी आँखों से निकले आंसू लौटकर आपके जीवन में जरूर आएंगे।

कुछ लोगों का यह कहना होता है कि ज्योतिषी को फीस लेनी चाहिए वरना उससे उसका गुरु खराब हो जाता है। मैं हमेशा उनसे कहता हूँ कि अगर कोई आपको आशीर्वाद दे रहा है या आपके लिए मंगलकामना कर रहा है तो क्या वह किसी फीस से कम है ? .....और दूसरी सबसे महत्वपूर्ण बात ज्योतिष के किसी भी ग्रंथ में फीस का कोई भी जिक्र नहीं है। हाँ, दक्षिणा का जिक्र कई जगह किया गया है और दक्षिणा जातक पर निर्भर करती है कि वह अपने मन से क्या देना चाहता है।

जो लोग सिद्धि प्राप्त करना करना चाहते हैं उन्हें पंचमेश की आराधना करनी चाहिए। पंचमेश ही आपके इष्ट होते हैं, लेकिन पहले तो वह यह तय करें कि वह सिद्धि क्यों प्राप्त करना चाहते हैं? यदि वह सिद्धि दूसरों की भलाई के लिए चाहते हैं तो अंजान लोगों की या जिन्हें मदद की जरूरत है उन लोगों की मदद करके भी यह काम कर सकते हैं और इसके लिए किसी सिद्धि की जरूरत नहीं। अगर वह सिद्धि इसलिए चाहते हैं कि वह प्रसिद्ध हो जाएं या खूब पैसा कमा लें तो वह स्वार्थ- सिद्धि कहलाएगी। सिद्धि और प्रसिद्धि दो अलग- अलग ध्रुव हैं। एक साथ दोनों को साधना असम्भव है। प्रसिद्ध होने की कामना रखकर ज्योतिष सीखने वाला व्यक्ति जीवन में सुख शांति को छोड़कर सब कुछ पा लेता है।

ज्योतिष बच्चे और उनका करियर

मुमकिन है इस लेख से कई लोग इत्तेफ़ाक़ ना रखें लेकिन जब आप बारीकी से 15-20 दिन जीवन का अध्यन करेंगे तो आपको ये लेख अक्षरश: सत्य या सत्य के बहुत करीब लगेगा।

हमारी कुंडली में एक या दो ग्रह होते हैं जो बहुत बलवान होते हैं और अधिकतर मामलों में वही ग्रह हमारे जीवन की दिशा निर्धारित करते हैं। जातक का स्वभाव भी उन्हीं ग्रहों के जैसा होता है, ये बात आप जातक से दो- तीन घण्टे की बातचीत में जान सकते हैं कि उसका कौन सा ग्रह बलवान हैं।

इसके अतिरिक्त राहु और केतु जीवन के दो छोर हैं। राहु माया है और केतु मोक्ष। तो व्यक्ति इन दोनों में से किसी एक प्रभाव में भी काफी ज्यादा रहता है। एक वक़्त के बाद तो मनुष्य का स्वभाव बहुत जटिल हो जाता है क्योंकि उसे दुनिया बहुत सी चालाकियाँ सिखा देती है। लेकिन बच्चे कुछ वक़्त तक ही सही इन चालाकियों से दूर रहते हैं, तो आप बच्चों में ग्रहों का प्रभाव खुद देख सकते हैं। अगर किसी की दो संताने हैं तो एक संतान के गुण राहु के गुणों से मिलते जुलते होंगे और दूसरी संतान के गुण केतु से मिलते जुलते होंगे।

राहु के गुण जिस बच्चे में होंगे वो गुप्त शरारतें करेगा यानी आज कोई काम किया तो हफ्ते भर बाद उसका पता लगेगा, केतु के गुण जिस बच्चे में होंगे उसकी शरारत दो- तीन घण्टे में ही पकड़ी जायेगी।

राहु के गुण एक शातिर चोर की तरह होते हैं जो कई दिनों तक किसी चीज पर घात लगाये रखता है और बिना सबूत छोड़े उस चीज को लेकर फरार हो जाता है। कोई नहीं जान पाता कि वो कहाँ से आया और कहाँ चला गया? दूसरी तरफ केतु के गुण खूंखार डाकू की तरह होते हैं। वो जो भी करता है डंके की चोट पर करता है, उसे किसी का डर नहीं होता।

पिछले कई लेखों में हम राहु केतु समेत अन्य ग्रहों के स्वभावों पर बात कर चुके हैं तो इस लेख में उनके स्वभाव कैसे होते हैं इस पर चर्चा करके हम ज्यादा समय और ऊर्जा खर्च नहीं करेंगे।

ये लेख पूरी तरह बच्चों और उनके करियर से जुड़ा हुआ है तो जिन बच्चों

के गुण राहु से मिलते जुलते हैं उन्हें फाइन आर्ट, म्यूजिक, थियेटर, गायन, मेंटल गेम्स जैसे चैस और कुछ हद तक टेबल टेनिस आदि से जुड़ना चाहिए, वो शायद बेहतर कर सकते हैं ।

जिन बच्चों के गुण केतु से मिलते- जुलते होते हैं उन्हें आउटडोर स्पोर्ट्स जैसे बॉक्सिंग, कब्बडी, क्रिकेट, भाला फेंक, वेट लिफ्टिंग से जुड़ना चाहिए साथ ही उनमें लीडरशिप क्वालिटी ज्यादा होती है तो वो कला के क्षेत्र में निर्देशक और एडिटिंग में बेहतर कर सकते हैं ।

इन दोनों ग्रहों के अलावा बाकी ग्रह भी जातक का स्वभाव और रुचि को तय करते हैं लेकिन मुझे हमेशा लगता है राहु और केतु जातक के जीवन में उत्प्रेरक का कार्य करते हैं ।

एक चिट्ठी नए ज्योतिषियों के नाम

फेसबुक में ज्योतिषियों की बड़ी शिकायत रहती है कि जातक मुफ्त में दिखवाना चाहता है, फीस नहीं देता, विद्या की कद्र नहीं करता। बात दरअसल ये है जातक ज्योतिष विद्या की कद्र तो करता है इसलिए वो ज्योतिष के ग्रुप से जुड़ा है, सवाल पूछ रहा है। किन्तु ज्योतिषियों की कद्र शायद इसलिए नहीं करता क्योंकि ज्योतिषी खुद अपनी कद्र नहीं करते, विद्या की कद्र नहीं करते। कुंडली/ हाथ आदि देखने से लेकर फलादेश करने के कई नियम हैं उनका कभी पालन नहीं करते।

ज्यादातर ज्योतिषी रत्न विक्रेता बने हुए हैं। हर समस्या का उपाय उन्हें पुखराज, माणिक, नीलम के अंदर ही दिखाई पड़ता है और जब जातक उपाय करने में असमर्थता जताता है तो यही ज्योतिषी जो खुद को दैवज्ञ/ ज्योतिषाचार्य (बिना डिग्री के) कहते हैं, जातक को डराने लगते हैं। उसके मन में शक डाल देते हैं, डर डाल देते हैं, तो खुद बताइये कोई व्यक्ति ऐसे ज्योतिषियों की कद्र क्यों करे?

क्या कोई व्यक्ति मिलावटी मिठाई देने वाले हलवाई को अच्छा कहेगा? क्या कोई मरीज किडनी निकाल लेने वाले डॉक्टर की तारीफ करेगा? वो तो बस इस बात की खुशी मनाएगा कि अच्छा हुआ बचकर निकल आया। मुमकिन है अब वो हर किसी को उसी दृष्टि से भी देखने लगे।

ज्योतिषियों के कुछ तर्क हैं कि उनका भी घर है, परिवार है, खर्चे हैं। बिल्कुल, इस बात से कोई इंकार नहीं कर सकता, लेकिन भइया अगर आप ज्योतिष के कार्य में सफलता प्राप्त नहीं कर पा रहे हो तो अपनी कुंडली देखकर कोई दूसरा काम करो जिसमें आपको लगे कि आप सफल हो सकते हो। क्योंकि यही काम तो आप जातक के लिए भी करते हो न? जब उसे परेशानी के भंवर से निकालने का दावा करते हो, क्या खुद उससे नहीं निकल सकते ?

दूसरा तर्क ज्योतिषी देते हैं हमनें इतने वर्ष दिए हैं, घाट- घाट का पानी पिया है, दर्जनों- सैंकड़ों किताबें पढ़ी हैं। मुझे ये जानना है कि क्या आपने लोगों से पूछकर ज्योतिष सीखना शुरू किया था या ज्योतिष की किताबें खरीदी थी? ग्रन्थों में तो कहीं भी फीस/ शुल्क का जिक्र नहीं। हाँ दक्षिणा का जरूर है और वो जातक की श्रद्धा पर निर्भर करती है। किसी से किसी भी तरह की उम्मीद करना लोभ है

और लोभी व्यक्ति कभी अच्छा ज्योतिषी नहीं हो सकता। ज्योतिष सात्विक विद्या है, ज्योतिषी को सात्विक होना चाहिए, वरना सनातन का दंड विधान कहता है एक ही पाप के लिए ज्ञानी व्यक्ति को मूर्ख व्यक्ति के मुकाबले ज्यादा दंड दिया जाता है ।

कई लेखों में मैंने पढ़ा है कि "एक सुयोग्य ज्योतिषी के मोबाईल फोन में कौन- कौन लोग हैं? सैकड़ों डाक्टर- डाक्टरनी, जज, मैजिस्ट्रेट, उच्च- अधिकारी, बड़े राजनेता, दुर्दांत अपराधी, साधु- संत, बड़े वकील, शहर के व्यापारी व अन्य भी काफी लोग हमसे जुड़े होते हैं और यह नियमित सम्पर्क में होते हैं...." तो इसमें कौन सी बड़ी बात है? इसमें घमंड करने जैसा क्या है ? हर वो व्यक्ति जो सार्वजनिक जीवन से जुड़ा है, उसके फोन में यही सब नम्बर होते होंगे। मुमकिन है एक बड़े से हॉस्पिटल में पर्चा (नम्बर) लगाने वाला व्यक्ति हर दिन किसी ज्योतिषी से ज्यादा लोगों की मदद करता हो।

मैं इस बात के पूरे- पूरे साथ हूँ कि एंड्रॉइड फोन चलाकर उसमें नेट रिचार्ज करके सवाल पूछने वाले जातक को शुल्क देना चाहिए। लेकिन मैं इस बात का भी समर्थन करता हूँ कि ज्योतिषी को सामने से नहीं मांगना चाहिए। ज्योतिष पराविद्या है, मुमकिन है आज जिन भविष्यवाणियों में भगवान आपको अपना साझेदार या मित्र बना रहा है भविष्य में बनाना बन्द कर दे।

ज्योतिष की लगभग हर किताब में ये लिखा है कि जो ज्योतिष को नहीं मानते, नास्तिक हैं, शंकालु हैं, कुतर्की हैं, वाचाल आदि हैं उनकी कुंडली कभी नहीं देखनी चाहिए। तो क्यों देख रहे हो उनकी कुंडली? क्यों अपना मूल्यवान समय खराब कर रहे हो?

याद रखिये धनुष की डोर जितनी कसी हुई होगी तीर उससे उतनी दूर जाएगा। यहाँ डोर से मतलब जीवन में अनुशासन, नियम आदि से है।

नए ज्योतिषियों को मेरी एक सलाह है। चैट बॉक्स में कुंडली देखना, बिना माँगे सलाह देना बंद कीजिए। (ये फलादेश करने के नियमों के भी विरुद्ध है।) खुद के अंदर हुनर पैदा कीजिये, ऐसा हुनर कि लोगों को लगे कि इस सवाल का जवाब या इस समस्या का सबसे आसान हल बस आप ही बता सकते हैं। लोग खोजते हुए आयेंगे, ठीक वैसे जैसे पुराने समय में राजा ऋषियों के आश्रमों में जाया करते थे, वो भी नंगे पाँव।

विश्वास अंधविश्वास की बारीक रेखा

ज्योतिष एक रोशनी है जो आपको रास्ता दिखा रही है उससे ज्यादा कुछ नहीं। देश, काल, परिस्थिति और पुरुषार्थ आपके हाथ में है। मशहूर वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग 21साल की उम्र में एक भयानक बीमारी की चपेट में आ गए थे, जिसके बाद वो सारी जिंदगी व्हीलचेयर पर ही रहे, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। वो सदी के सर्वश्रेष्ठ दिमागों में से एक थे, जबकि वो बोल तक नहीं पाते थे।

ज्योतिषीय उपाय करने चाहिए, उन्हें मानना भी चाहिए, लेकिन हर बात को ज्योतिष से जोड़ देना हर समस्या का हल ज्योतिष में खोजना मेरी समझ में तो नासमझी है। इसमें मसला ये है कि अगर किसी को कम्पनी की तरफ से कोई मोबाइल नम्बर मिला या कोई फ्लैट मिला या उसका कोई सैलरी अकाउंट खुला तो क्या वो न्यूमरोलॉजी के आधार पर उनके नम्बर बदलवा पायेगा और अगर बदलवा भी पाया तो उसकी छवि कैसी बनेगी? सोचने वाली बात है।

यह सच है कि हर घटना के घटने का एक ज्योतिषी आधार होता है, लेकिन हर घटना के पीछे के ज्योतिषी आधार को ढूंढने में समय खराब करने से बचना चाहिए। कुछ दिन पहले एक मित्र से पूर्वजन्म के बारे बात हो रही थी, तो मेरा उनसे बस यही सवाल था अगर हमें मालूम भी चल गया कि पिछले जन्म में क्या थे, तो उसका हासिल क्या है?

कुछ पॉलिटिशियन्स, एक्टर्स और प्रोड्यूसर्स के बारे में मैंने ये तक सुना था कि वो किसी को नौकरी देने से पहले ज्योतिषी की राय लेते थे और कोई महत्त्वपूर्ण मीटिंग करने से पहले राहु काल आदि देखते थे साथ ही मीटिंग में किस जगह बैठेंगे? ये तक पहले से निर्धारित रहता था। मुझे लगता है कि व्यक्ति को हमेशा विश्वास और अंधविश्वास के बीच की बारीक रेखा को क्रॉस करने से बचना चाहिए।

इसका ज्योतिषीय पहलू ये भी है की जिस व्यक्ति की आप कुंडली दिखा रहे हैं उसे ज्योतिष की कितनी समझ है, क्या वो फलित करते समय षोडश वर्ग देख रहा है, वो कुंडली परमार्थ के उद्देश्य से देख रहा है या स्वार्थ से? साथ ही जो कुंडली आप दिखा रहे हैं वह कितनी सही है? क्योंकि कई बार एक सेकेंड में

राशि /लग्न आदि बदल जाते हैं और पूरा फलादेश बदल जाता है।

इसलिए अंत में, मैं फिर से वही कहूँगा व्यक्ति को हमेशा विश्वास और अंधविश्वास के बीच की बारीक रेखा को क्रॉस करने से बचना चाहिए।

अगर पुनः इसको समझें तो राहु जो आठवें घर को देख रहा है, जो पराविद्याओं का घर भी होता है उसकी वजह से मुझे लगा कि इनबॉक्स में जाकर उनसे बात करनी चाहिए। शनि के साथ राहु होने की वजह से मैंने उनसे मर्यादित शब्दों में बातचीत की। छठे मंगल की वजह से वो मुझसे तर्क-कुतर्क में नहीं जीत पाये और अंत में कमजोर राहु की वजह से उन्होंने अपना राज जल्दी बता दिया और मजबूत राहु की वजह से मैंने उन्हें ये बात पता ही नहीं लगने दी। वैसे नवमांश कुंडली में भी मेरा राहु जो वर्गोत्तम है वो बुध के साथ बैठा है और बुध भी वाणी और ज्योतिष का ही कारक होता है ।

ज्योतिषीय उपाय

कुंडली द्रोणागिरी पर्वत सी होती है, जिसे देखने पर बहुत सी चीजें दिखती हैं। कई बातें बताई जाती है, कई बातें नहीं बताई जाती, कुछ को नजरअंदाज कर दिया जाता है। ज्योतिषीय उपाय उस द्रोणागिरी पर्वत में उपस्थित संजीवनी बूटी जैसे होते हैं। जिस प्रकार जब हनुमान जी चमकते द्रोणागिरी पर्वत को देखकर ये नहीं जान पाये थे कि इसमें संजीवनी बूटी कौन सी है? लेकिन सुषेण वैद्य देखते ही पहचान गए कि संजीवनी बूटी कौन सी है। ठीक उसी प्रकार उपायों का भी रहता है। लंगड़ाकर चल रहे व्यक्ति का ऑपरेशन करना ही जरूरी नहीं होता, कई बार बस उसे बैठाकर पाँव में लगा काँटा निकलना पड़ता है या उसे टूटी चप्पल को ठीक करने की सलाह दी जाती है।

कुछ जातक इसलिए परेशान होते हैं कि वो बहुत भोले होते हैं, दुनिया उनका फायदा उठा लेती हैं। कुछ इतने धूर्त होते हैं कि कोई उन पर विश्वास नहीं करना चाहता। कोई परिजनों के लिए अपने सपनों की इतनी कुर्बानियां दे देते हैं कि ये बात उनके लिए अवसाद का कारण बन जाती है। कोई बच्चों से या परिजनों से, मित्रों से इतनी उम्मीदें बांध लेता है कि उम्मीदें पूरी न होने पर सदमें में चला जाता है और खुद के निर्णय को कोसता रहता है।

ज्योतिष एवं हस्ताक्षर विज्ञान की मदद से कई बार आपको भोले व्यक्ति को ऐसे उपाय बताने पड़ते हैं जिससे उसमें थोड़ी चालाकी/ धूर्तता आ जाये और इसके विपरीत धूर्त/ चालाक व्यक्तियों में थोड़ा सा भोलापन डालना पड़ता है । बरगद की छांव में उगे पौंधों की जगह बदलनी पड़ती है या बदलवानी पड़ती है, उसकी बेहतरी के लिये।

पाँच- दस वर्ष पहले, एक ज्योतिष के जानकार व्यक्ति से एक कुंडली पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा, इस जातक के ग्रह पिता के लिए खराब हैं। अगर यह पिता से या पिता इससे दूर रहते तो शायद आज पिता जीवित होते। ऐसा ही एक उपाय साउथ के ज्योतिषी के द्वारा भी दिया गया था जिसमें वो कहते हैं, अगर जातक की कुंडली में दुर्घटना के योग बन रहे हों तो उसे समय- समय पर रक्त दान करना चाहिए। यानी जो रक्त जातक के शरीर से दुर्घटना के रूप में निकल सकता

है, वो उसे रक्तदान के जरिये खुद दान कर सकता है।

मुझे लगता है जीवन में एनर्जी का संतुलन बनाये रखते हुये सम बने रहना ही सुखी जीवन का मूल-मन्त्र है।

एक ग्रह के आधार पर फलादेश

फेसबुक पर ज्योतिष के ग्रुप में भरमार है एक ग्रह के आधार पर फलादेश करने वाले विद्वानों की। चलो ठीक है, आपके हाथ कोई ज्ञानवर्धक सूत्र लग गया तो कम से कम उस सूत्र के अंत में या उसके शुरुआत में अक्सर, ज़्यादातर, प्रायः, देखा गया है जैसे शब्दों का ही प्रयोग कर लो।

क्या जीवन सिर्फ एक या दो ग्रहों के आधार पर संचालित हो सकता है? मुझे लगता है नहीं, कभी भी नहीं। एक सफल या असफल जीवन बहुत सी चीजों पर निर्भर करता है। उदाहरण के तौर एक व्यक्ति है जो बहुत अच्छा लेखक (बुध) है। अब लेखक तो बहुत सारे हैं, अगर वो पराक्रम (मंगल) नहीं दिखायेगा, साहस करके दुनिया के सामने नहीं आयेगा तो क्या उसे दुनिया उसके घर जाकर मौका देगी ? मौका मिलने के बाद अगर वो अपना कार्य अनुशासन (सूर्य) के साथ नहीं करेगा, तय हुई समय- सीमा का पालन नहीं करेगा तो तय सी बात है, कोई दूसरा जो उससे कमतर भले ही हो मगर अनुशासित हो वह व्यक्ति उसकी जगह ले लेगा।

अगर वही लेखक (बुध) समय के साथ खुद को अपडेट (राहु) नहीं करेगा, अपने बौद्धिक स्तर (गुरु) को नहीं बढ़ाएगा तो मुमकिन है कुछ एक सालों में उसकी चमक खुद ब खुद फीकी पड़ जाये। सबसे बड़ी बात अगर वो मानसिक तौर पर मजबूत (चन्द्रमा) नहीं होगा तो इंजीनियरों/ डॉक्टरों की इस दुनिया में लीक से हटकर इस तरह के कार्यक्षेत्र को अपना पायेगा?

एक फिल्म निर्देशक रिसर्च करके कोई आईडिया सोचता है। उसके बाद तमाम तरह के लोगों से मिलता है, उन्हें अपना आईडिया सुनाता है, कन्वेंस करता है, उनसे काम करवाता है और जब फिल्म बनती है तो वो डायरेक्टर की फिल्म कहलाती है। क्या ये प्रक्रिया किसी एक ग्रह पर निर्भर कर सकती है ? चलिए एक बार चमत्कार हो भी गया तो क्या वो चमत्कार बार-बार हो सकता है?

ठीक इसी तरह एक नेता जमीनी मुद्दों को उठाता है। पार्टी के अंदर अपने खिलाफ चल रहे षड्यंत्रों से खुद को बचाते हुई आगे बढ़ता है। चुनाव लड़ने की स्थिति में धन की व्यवस्था करता है। भाषण कला और हाजिरजवाबी से जनता को मंत्रमुग्ध और विरोधियों के दिल जीतता है।

और कुछ लोग बहुत आसानी से कह देते हैं कि दसवें घर में राहु/ शनि हो तो जातक प्रसिद्ध नेता बनता है।

अष्टम भाव और ज्योतिष

जिंदगी में हमेशा ये होता है कि कोई नई अतरंगी चीज आती है, फिर सबको वही चीज चाहिये होती है। .....और लोग बिना कुछ सोचे- समझे- जाने उसके पीछे भागना शुरू कर देते हैं, जिसकी वजह से कई बार लूट-धोखे आदि का शिकार भी हो जाते हैं और कई बार वास्तविक मूल्य से कई गुना अधिक दाम पर उस चीज को प्राप्त करते हैं।

इस बीच यही देखने में आया है कि कई सारे लेखों में पढ़ने को मिला कि आठवां भाव जागृत कीजिए सब ठीक हो जाएगा। ज्योतिषियों से लेकर नए सीखने वालों तक सभी चाहते थे कि उनका अष्टम भाव जागृत हो जाये, फिर वो त्रिकालदर्शी बन जायेंगे। उन्हें सारी चिंताओं से मुक्ति मिल जायेगी। मुझे लगता है इसमें कुछ चीजें समझने वाली हैं, जिन्हें ज्योतिष में रुचि रखने वाले हर व्यक्ति को समझना चाहिए। आठवां भाव यात्रा, आयु, पराविद्याओं एवं शोध आदि का होता है। मान लीजिए आपने कोशिश की और आपका आठवां भाव जागृत हो गया और आप त्रिकालदर्शी बन गए, जिसके परिणाम स्वरूप आपको आस-पास ग्रह चलते हुए दिखने लगें। आपको होने वाली अच्छी- बुरी घटनाओं के पूर्वाभास होने लगे तो क्या कमजोर लग्न के साथ कमजोर चन्द्रमा (मन) के साथ आप उसे संभाल पायेंगे? कमजोर द्वितीय भाव के साथ जो वाणी का कारण होता है, क्या आप घटने वाली बुरी घटनाओं को जातक के सामने सही तरीके से रख पायेंगे ? क्या बिना पंचम भाव मजबूत हुए जो विद्या, इष्ट आदि का होता है उस ज्ञान का सही उपयोग कर पाओगे? बिना इष्ट को साधे क्या आप सही दिशा में बढ़ पाओगे ?

ये लेख बहुत लंबा हो सकता है। महाभारत से रामायण तक और हमारे इतिहास से लेकर वर्तमान तक ऐसे हजारों उदाहरण मौजूद हैं जहाँ व्यक्तियों ने सदा उन चीजों की कामना की है, जिनकी उन्हें रत्ती भर भी जरूरत नहीं थी और परिणाम सदा ही विनाशकारी रहे। लेकिन मुझे हमेशा लगता है कि कम से कम शब्दों में अपनी बात रखकर पाठक को चिंतन, मनन का मौका दे देना चाहिए ताकि वो अपना रास्ता स्वयं खोज सके।

किसी दूसरे व्यक्ति को देखकर उसके प्रभाव में आकर भगवान से वो

चीज कभी मत माँगिये जिसकी आपको जरूरत न हो या जिसके आप काबिल न हों या जिसके लिए आपने मेहनत नहीं की हो। वरना वह चीज आपको मिल भी जाएगी फिर भी आप उसे संभाल नहीं पाएंगे और जब संभाल नहीं पाएंगे तो और ज्यादा दुखी हो जाएंगे।

ज्योतिष के विद्यार्थी की कलम से

वर्तमान समय में हर एक चीज का बाजारीकरण हो रहा है। ज्योतिष भी उनमें से एक है, इस पर कटाक्ष करते हुए कई लेख लिखे हैं, मैं इसका घनघोर विरोधी भी हूँ।

लेकिन जैसे कि एक कहावत है "ताली एक हाथ से नहीं बजती" ठीक उसी तरह इस मामले में ज्योतिषी जितने गलत हैं, जातक उससे कई ज्यादा गलत हैं ।

कितनी कमाल की बात है। हम टूथपेस्ट से लेकर लैपटॉप तक कुछ भी खरीदने से पहले कितनी जाँच-पड़ताल करते हैं? अगर कभी पसन्द चीज ना मिले तो सही चीज आने का इंतजार तक करते हैं।

हम कभी डॉक्टर को दिखाने जाते हैं तो पहले दिन पर्चा लगवाते हैं या समय लेते हैं, उसके बाद क्लिनिक/ हॉस्पिल में जाकर अपनी बारी का इंतजार करते हैं, फिर नम्बर आने पर अपनी परेशानी आदि बताकर परामर्श लेते हैं ।

हम कहीं किसी से मिलने जाते हैं तो पहले अपना परिचय देते हैं फिर सामने वाले से पूछते हैं कि उसके पास समय होगा या नहीं? जब वो कहता है कि समय है, तब उसके बाद हम जिस उद्देश्य से उसके पास गए होते हैं वो बात कहते हैं। लेकिन कई बार जातक इन छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देना जरूरी नहीं समझता। ज्योतिष के ग्रन्थों में भी साफ- साफ शब्दों में लिखा है फलादेश करते समय समय अनुकूल होना चाहिए। ज्योतिषी मानसिक और शारीरिक रूप से फलादेश करने की स्थिति में होना चाहिए।

मुझे बड़ा आश्चर्य तब भी होता है जब लोग पब्लिकली अपनी कुंडली पोस्ट करके सवाल पूछते हैं। आश्चर्य होने का पहला कारण है कि पुराने ज्योतिषचार्य कह गए हैं कि फलादेश करते समय दैवज्ञ (ज्योतिषाचार्य) और जातक के अलावा कोई दूसरा व्यक्ति पास में नहीं होना चाहिए। आश्चर्य होने का दूसरा कारण क्या कभी ऐसा होता है कि आपके सर में दर्द होता है और आप शहर भर के डॉक्टरों से राय लेते फिरते हैं? मेरा अपना मत तो यहाँ तक है कि एक बार कुंडली दिखाने के बाद कम से कम 3-4 महीने तक किसी को भी कुंडली नहीं

दिखानी चाहिए। पूरे मनोयोग से पूरे विश्वास के साथ ज्योतिषी के द्वारा बताये हुए उपायों को करना चाहिए, लाभ न होने की सूरत में दूसरी तरफ रुख करना चाहिए।

जिस तरह जातक अलग- अलग होते हैं उसी तरह ज्योतिषी भी अलग- अलग होते हैं। उनके देखने का तरीका और उनके बताए उपाय भी अलग- अलग होते हैं। पब्लिकली पोस्ट करके तो आप खुद को कन्फ्यूज कर रहे हैं, हाँ अगर कुंडली शोध/ रिसर्च की दृष्टि से अपलोड की गयी है तो फिर ये स्वागत योग्य बात है।

तीसरा कारण हर जातक की कुछ ताकत, कुछ कमजोरियाँ होती हैं। जैसे कोई बहुत ज्यादा भावुक होता है, किसी को अपने परिजनों की हद से ज्यादा चिंता होती है, कोई किसी भी कीमत पर मशहूर होना चाहता है आदि और ये सब बातें आपकी कुंडली में झलकती हैं। मुमकिन है कोई ये सब देखकर उसी दिन या 15-20 दिन बाद सुनियोजित योजना बनाकर आपको बुरी तरीके से ठग ले।

चौथा और अंतिम कारण, सिर्फ एक या दो ग्रह के आधार पर फलादेश करना मूर्खता है और उस फलादेश पर भरोसा कर लेना उससे बड़ी मूर्खता। कई बार तो जन्मकुंडली में ग्रहों की स्थिति अलग होती है और नवमांश में स्थिति बिल्कुल उलट हो जाती है। जन्मकुंडली में राजा दिखने वाला व्यक्ति नवमांश देखने पर रंक मालूम होता है और जन्मकुंडली में रंक दिखने वाला व्यक्ति नवमांश में राजा।

किसी को लूटने के दो तरीके होते हैं पहला उसकी हद से ज्यादा तारीफ करके, दूसरा उसे डराकर। जातक को दोनों की तरह से ज्योतिषियों से बचकर रहना चाहिए। उदाहरण के तौर पर अगर कोई ज्योतिषी किसी 25 वर्षीय युवा से कह दे कि 37वर्ष की उम्र में उसका एक एक्सीडेंट होगा या किसी महिला से कोई ज्योतिषी कह दे, कि उसकी बेटी अपने कुल से नीचे जाकर प्रेम विवाह करेगी। मैं दावे के साथ कह सकता हूँ ये बातें उनके दिलो- दिमाग में जल्दी घर कर जायेगी, क्योंकि बुरी बातों पर हम जल्दी यकीन कर लेते हैं। लेकिन ये सोचिये कि इस तरह की नकारात्मक भविष्यवाणियाँ जातक के जीवन में कैसा प्रभाव डालेंगी!

एक अंतिम बात जो जातकों को और समझनी चाहिए। अगर कोई ज्योतिषी आपसे शुल्क नहीं ले रहा है तो ये उसकी नेक-दिली है, किन्तु अगर कोई व्यक्ति आपको अपना ज्ञान अपना समय दे रहा है तो उसे उसका पारिश्रमिक मिलना चाहिए। मैं इस बात का पूर्ण समर्थक हूँ कि एंड्रॉइड फोन चलाकर उसमें नेट रिचार्ज करके सवाल पूछने वाले जातक को शुल्क देना चाहिए, लेकिन मैं इस बात

का भी समर्थन करता हूं कि ज्योतिषी को सामने से फीस/ शुल्क की डिमांड नहीं करनी चाहिए, क्योंकि शास्त्रों में कहीं इस बात का जिक्र नहीं।

अगली बार जब कोई ज्योतिषी कुंडली देखे या कोई जातक अपनी कुंडली दिखाए तो बस याद रखे हमारे ऋषियों ने क्या कहा है।

शान्तो विनीतः शुद्धात्मा देवब्राहमणपूजकः ।
विमुखः परनिन्दासु वेदपाठी जितेन्द्रियः ।।
देवताराधनासक्तः स्वरशास्त्रविदारकः ।
सिद्धांतसंहितावेक्ता जातके च कृतश्रमः।।
प्रश्नज्ञः शकुनज्ञश्च प्रशस्तो गणकः स्मृतः ।
प्रमाणं वचनं तस्य भवत्येव न संशयः ।।

शांत स्वभाववाला, विनय से सम्पन्न, पवित्र अंतःकरण वाला, देवताओं तथा ब्राह्मणों में श्रद्धा रखने वाला, परनिन्दा से विमुख रहने वाला, वेद का परायण करने वाला तथा जितेन्द्रिय, देवपूजा से लीन, स्वरशास्त्र में निपुण, सिद्धांत व संहिता का जानकार, जातकशास्त्र में परिपूर्ण, प्रश्न और शकुन शास्त्र का ज्ञाता गणक या ज्योतिषी या दैवज्ञ होता है।

हल्दी को हल्के में न लें

कुछ दिन पहले एक पोस्ट डाली थी, जिसमें मैंने लिखा था हल्दी की गांठ या पुखराज एक बराबर फायदा करते हैं और हल्दी की गांठ थोड़ा ज्यादा करती है क्योंकि उससे जातक के पैसें बचते हैं। मेरा उद्देश्य ये कहना कतई नहीं था कि पुखराज रत्न खराब है या कम असरदार है, लेकिन मेरा उद्देश्य ये हमेशा रहता है कि अगर दस का काम पाँच में और पाँच का काम मुफ्त में हो रहा हो तो मैं जातक को मुफ्त वाला रास्ता बताऊँ, क्योंकि शायद वही रास्ता जानने जातक ज्योतिषी के पास आता भी है।

उस पोस्ट पर बहुत सकारात्मक प्रतिक्रियाएं मिली। कई लोगों ने कहा कि हमने इस तरह कभी सोचा ही नहीं, आगे से ऐसे भी सोचेंगे। कुछ ने कहा हम इसे आजमाकर देखेंगे, पर कुछ लोग राशन पानी लेकर मुझ पर चढ़ गए। उनमें से कुछ ने कहा ये बड़ी फालतू बात है। कुछ ने कहा कि पुखराज देशी घी है और हल्दी डालडा, दोनों की कोई तुलना नहीं।

मुझे इस विषय पर बस थोड़ी सी बात कहनी है जो उस दिन रह गयी थीं। हल्दी और पुखराज की तुलना ही गलत है। पुखराज एक रत्न है जिसका दूसरा या तीसरा उपयोग मैं नहीं जानता, उसकी तुलना में हल्दी एक औषधीय पौंधा है जो न सिर्फ औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है बल्कि उसका अपना धार्मिक महत्व भी है। हल्दी इतनी गुणकारी है कि अमेरिका जैसे देश की एक यूनिवर्सिटी ने उसका पेटेंट करवा लिया था, फिलहाल केस में भारत को जीत मिल चुकी है ।

हाँ एक बात से मैं पूरी तरह सहमत हूँ पुखराज पहनना मॉर्डन लगेगा। हल्दी की गांठ गले में पहनना या दायीं बाजू में बांधना उतना कूल नहीं लगेगा। हल्दी, पीला कपड़ा और पीला धागा शुरुआत में रंग भी छोड़ेगा, जिससे कपड़े खराब हो सकते हैं।

अंत में मैं फिर से वही कहूँगा कि मेरा उद्देश्य ये कहना कतई नहीं है कि पुखराज रत्न खराब है या कम असरदार है, उसकी अपनी उपयोगिता है लेकिन हल्दी को हल्के में न लें।

ज्योतिष और राहु केतु के मध्य का अंतर

बात 2013 के आस-पास की थी दो लोगों को भारत रत्न देने की घोषणा की गई पहले थे सचिन तेंदुलकर जिन्हें क्रिकेट का भगवान भी कहा जाता है सालों से देश में ये मांग उठती रही थी तमाम बड़े नेता इच्छा जाहिर कर चुके थे, देश के प्रमुख मीडिया हाउस घंटों की डिबेट कर चुके थे।

दूसरी तरफ एक वैज्ञानिक थे जिनका नाम मैंने पहले कभी नहीं सुना था, अगले दिन समाचार पत्रों के माध्यम से पढ़ने को मिला कि सचिन तेंदुलकर अपनी काली रंग की मर्सिडीज' से और वो वैज्ञानिक अपनी पुरानी कार शायद 'एम्बेसडर' से भारत रत्न लेने के लिए राष्ट्रपति भवन आए थे, सचिन तेंदुलकर को भारत रत्न मिलने का हल्ला देश भर में था साथ ही क्रिकेट खेलने वाले देशों से भी उन्हें बधाई संदेश मिल रहे थे, दूसरी तरफ अपनी पुरानी कार शायद 'एम्बेसडर' से आए वैज्ञानिक ने पुरुस्कार लिया सबका धन्यवाद किया और चले गए।

विकिपीडिया से प्राप्त जानकारी के अनुसार 2013 में जिन्हें भारत रत्न मिला उन वैज्ञानिक का नाम था चिंतामणि नागेश रामचंद्र राव जिन्हें सी० एन० आर० राव के नाम से भी जाना जाता है, एक भारतीय रसायनज्ञ हैं जिन्होंने घन-अवस्था और संरचनात्मक रसायन शास्त्र के क्षेत्र में मुख्य रूप से काम किया है। वर्तमान में (2022) वह भारत के प्रधानमंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार परिषद के प्रमुख के रूप में सेवा कर रहे हैं। डॉ० राव को दुनिया भर के 60 विश्वविद्यालयों से मानद डॉक्टरेट प्राप्त है। उन्होंने लगभग 1500 शोध पत्र और 45 वैज्ञानिक पुस्तकें लिखी हैं।

व्यक्ति का जीवन या तो राहु प्रभावी (लीलाधर भगवान श्री कृष्ण) होता है या केतु प्रभावी (मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम) होता है, सवाल ये उठता है की आपको कैसे पता लगेगा की आपका जीवन राहु प्रभावी है या केतु प्रभावी, इसका बहुत आसान उपाय है दोनों महान व्यक्तियों के बारे में पढ़कर उनके गुण-दोष देखकर आपको जिसके जैसा बनने की इच्छा जीवनपर्यंत करे आपका जीवन उसी ग्रह से प्रभावी होगा।

ज्योतिष और अजीब सवाल

जातक ज्योतिषी के पास तभी आता है जब हर जगह से हार चुका होता है। कई बार परेशानी सहते- सहते उसकी स्थिति बदहवास सी होती है और इस वजह से उसके सवाल भी उतने ही बदहवास से हो जाते हैं। कुछ जातक बड़े अजीब सवाल लेकर आते हैं जिनका जवाब शायद ही कोई व्यक्ति जानता हो। मेरे साथ सबसे अच्छी/ बुरी बात ये है कि मैं "साफ कहना, सुखी रहना" में विश्वास रखता हूँ और किसी को झूठी उम्मीदें देना भी मुझे पसंद नहीं।

चलिए, सवालों की तरफ लौटते हैं। पहला सवाल जो मुझे बड़ा अजीब लगता है वो है कि "कर्ज कब खत्म होगा?" ये एक ऐसा सवाल है जो कुंडली के अलावा दो बातों पर निर्भर करता है। पहला जिसे कर्ज लौटाना है उसका दिल कितना साफ है और दूसरा कर्ज कितना है? अब कुंडली में योग तो कुछ– कुछ समय में सदा ही बनते रहते हैं, लेकिन अगर आपका कर्ज भी दो–तीन करोड़ का है या आपकी नियत ही नहीं है तो मुझे नहीं लगता कि ज्योतिषीय योग आपकी कुछ मदद करेंगे।

हाँ, अगर कर्ज लौटने में किसी तरह की समस्याएं आ रही हैं, पैसें का फ्लो सही नहीं हो रहा है या क्या उपाय करके कर्ज आपको बोझ नहीं जिम्मेदारी लगे, लौटाने का टेंशन आदि कम हो, तभी ज्योतिषीय उपायों से ये जरूर बताया जा सकता। लेकिन कब ख़त्म होगा? यह बता पाना कम से कम मेरे सेलेब्स से तो बाहर की चीज है।

इसी तरह एक दूसरा सवाल जो इससे भी ज्यादा अटपटा है वो है की "केस खत्म कब होगा या केस में जीत कब मिलेगी?" इस सवाल का जवाब ज्योतिषि तो छोड़िए शायद स्वयं मिलोर्ड तक नहीं जानते, सुप्रीम कोर्ट की वेबसाइट पर उपलब्ध एक अप्रैल 2022 तक के आंकड़ों के अनुसार, कुल 70 हजार 632 केस सुप्रीम कोर्ट में अभी लंबित हैं। वहीं अटॉर्नी जनरल के मुताबिक, देशभर के उच्च न्यायालयों में अभी 42 लाख मामले पेंडिंग है।

ज्योतिषि आपको ये जरूर बता सकता है कि पक्ष में फैसला आने की कितनी उम्मीद है? अगर आपके केस में अड़चन आ गई है, किसी वजह से तारीख

नहीं मिल रही आदि के लिए फिर भी उपाय बताए जा सकते हैं। लेकिन भारत जैसे देश में जहाँ न्याय व्यवस्था लगभग चरमराई हुई है वहाँ "केस कब खत्म होगा? या कब जीत होगी?" जैसे सवालों के लिए शायद कोई जगह नहीं।

ऐसे और भी बहुत से सवाल हैं, जिन्हें इस लेख में शामिल किया जा सकता था। लेकिन अभी के लिए बस इतना ही......❤

ज्योतिष और यूनिवर्सल उपाय

जीवन में कुछ ऐसी छोटी–छोटी बातें होती हैं जिन्हें अपनाकर हम जीवन को सुखमय बना सकते हैं जैसे समय पर सोना समय पर जगना, भरपेट भोजन ना करना प्रतिदिन कुछ किलोमीटर पैदल चलना आदि।

ज्योतिष में भी कुछ उपाय हैं जिन्हें लगभग हर व्यक्ति कर सकता है इन उपायों को करने के लिऐ जातक को किसी ज्योतिषी से पूछने की जरूरत नहीं, जैसे मानसिक शांति के लिए प्रतिदिन शिव मन्दिर जाकर जलाभिषेक, अगर घर में कलह पूर्ण या नकारात्मक वातावरण हो तो सोते वक्त सिरहाने की तरफ दाई दिशा में मिट्टी के बर्तन में पानी रखकर सोना और उठते ही उसे पौंधों में डाल देना भी बहुत अच्छा उपाय है।

घर में खुद से गमलों/क्यारी में पौंधे लगाकर उनकी देखभाल करना बुध का सर्वोत्तम उपाय है अगर आपने फूलों के पौंधे लगाए हैं तो वो शुक्र के कारक हैं, जब आप उनमें पानी डालते हैं तो पानी चंद्रमा का कारक है जब आप जमीन को बंजर नहीं छोड़ते हैं तो जमीन (भूमि) मंगल का कारक है।

हनुमान चालीसा एवं बजरंग बाण का पाठ करना मंगल एवं शनि दोनों का उपाय है क्योंकि जब हनुमान जी ने शनि देव को रावण की कैद से आजाद किया था, तो शनि देव ने उनका धन्यवाद देते हुऐ कहा था की वो भविष्य में कभी उनके भक्तों को परेशान नहीं करेंगे।

किसी की सहायता करने के पीछे अपना फायदा देखना तो पाप है लेकिन फिर भी अगर आप निर्धन बच्चों की ट्यूशन पढ़ाते हैं या क्षमता अनुसार बच्चों की पढ़ाई का खर्चा उठाते हैं तो ये शनि देव का बहुत अच्छा उपाय है क्योंकि शनिदेव निचले तबके के कारक होते हैं।

अपने शहर में लाइब्रेरी आदि के लिए धन देना या अच्छी किताबें (बेकार पड़ी नहीं) डोनेट करना गुरु का अच्छा उपाय है लाइब्रेरी में वाटर कूलर लगवाना चंद्रमा का वहां वाई फाई लगवाना राहु का सर्वोत्तम उपाय है क्योंकी राहु टेक्नोलॉजी का कारक होता है और वाई फाई लगवाकर आप एक तरह से उसका दान कर रहे हैं।

केतु के लिए शहर के आवारा बेसहारा चौपायों को भोजन देना समय के अभाव के कारण भोजन ना दे पाने की स्थिति में जो संस्थाएं उस दिशा में प्रयास करे रही हैं उनकी मदद करना एक बहुत अच्छा उपाय है।

मेरा व्यक्तिगत मत ये है की ये सारे कार्य उपाय से ज्यादा कर्तव्य हैं, जो हर जिम्मेदार नागरिक के समाज के प्रति हैं और मुझे नहीं लगता जीवन में आपको इनके कोई उल्टे फल प्राप्त होंगे।

ये उपाय कैसे होंगे?

नकारात्मकता हम पर हावी रहती है कोई भी चीज करने से पहले हम सोचते हैं यह चीज नहीं होगी और अपने मन में ही बाधाओं की दीवार खड़ी कर लेते हैं, ज्योतिषी उपाय में भी व्यक्ति यही करता है कोई अपने कंफर्ट जोन से बाहर नहीं निकलना चाहता, अगर कोई उपाय बताओ तो व्यक्ति कहता है यह कैसे होगा? यह मेरे बस की बात नहीं है! इसमें तो मेरा बहुत ज्यादा समय लग जाएगा।

कुछ एक मेरे साथ घटित हुए सच्चे उदाहरणों के जरिए मैं अपनी बात रखना चाहूंगा, मुझे लगता है उसके बाद आगे का रास्ता आप खुद तय करेंगे और दूसरों को भी जागरूक करेंगे।

कुछ समय पहले एक युवा साथी का मैसेज आया वो हैदराबाद से था उसकी कुंडली देखकर मैंने कुछ उपाय बताए उनमें से एक उपाय चंद्रमा का भी था, जिसमें उसको सिरहाने की तरफ पानी का मटका रखना था (ये उपाय मैं दस में से सात लोगों को बताता हूं) और सुबह वो पानी पौधे में डाल देना था।

इस उपाय को सुनकर उस युवा साथी ने बोला कि यह उपाय कैसे होगा मैं पानी का मटका कहां खोजूंगा मैं तो शहर में नया हूं। तो मैंने उससे पूछा हैदराबाद से हो उसने कहा हां हैदराबाद से, मैंने कहा हांडी बिरयानी मंगा लेना और धोकर उस मटके का यूज कर लेना उसने कहा लेकिन बिरयानी तो नॉनवेज होती है मैंने कहा कोई नहीं एक दिन वैज बिरियानी खाकर देख लेना वैसे धोकर नॉन वेज वाली हांडी यूज करने से भी फर्क नहीं पड़ेगा।

एक व्यक्ति जो जर्मनी में रहते थे उन्हें बृहस्पति/गुरु के उपाय के तौर पर नहाते वक्त पानी में हल्दी डालने के लिए कहा था, तो कुछ समय बाद उनका मैसेज आया कि सर यहां तो शावर होता है मग और बाल्टी का मिलना तो थोड़ा मुश्किल रहता है क्या किया जाए? तो मैंने कहा कि आप गिलास में पानी लेकर उसमे हल्दी घोल सकते हैं और इससे नहाने के बाद शावर से नहा सकते हैं।

इसी तरह कुछ समय पहले एक लड़की को अन्य उपायों के साथ -साथ केतु का उपाय बताया था जिसमें मछलीयों को आटे की गोलियां देनी थी, वह लड़की दिल्ली शहर में रहती थी और उसने कहा कि मैं यहां तालाब या नदी कहां

खोजूँगी? मैंने कहा इसके लिए तालाब या नदी खोजने की जरूरत नहीं है अगर आपकी किसी फ्रेंड या रिलेटिव के पास फीस टैंक हो या आस-पास कोई शॉप हो तो आप महीने भर का दाना या अपनी सामर्थ्यनुसार उनको भी दे सकती हैं और इसके लिए आपको फिश टैंक रखने की भी जरूरत नहीं पड़ेगी।

मेरे शहर का ही एक दोस्त मिस्त्र में रहता था उसे शनिवार के कुछ उपाय बताए थे शनि के उपाय के तौर पर नियमित उसे शनि मंदिर जाना था या पीपल के पेड़ पर सरसों के तेल का दिया जलाना था, मिस्त्र में आस–पास शनि मंदिर ना होने के कारण उसे इस उपाय को करने में दिक्कत महसूस हुई, फिर मैंने उसे इस उपाय के जगह पर शनि यंत्र (जिसकी तस्वीर नेट में निशुल्क उपलब्ध है) लगाकर नियमित मंत्र पढ़ने को कहा, यकीन मानिए उसे इसका लाभ भी हुआ।

ग्रहों के कारकों की खोज कीजिए उनका अध्ययन कीजिए आपको बहुत आसान, कम कीमत वाले, सुलभ उपाय जरूर मिलेंगे।

मेरा अपना मानना है दूध ना देने वाली बूढ़ी (शनि) सफेद (शुक्र) गाय (गुरु) को निस्वार्थ भाव से घास (बुध) देना विशेष लाभकारी होता है, ये अपने आप में शनि, शुक्र, गुरु, बुध का उपाय है, सबसे महत्वपूर्व बात इसके लिए आपको गाय पालने की जरूरत नहीं आप प्रतिदिन, हफ्ते में या महीने में एक बार गौशाला जाकर खुद या उतनी राशि देकर भी आ सकते हैं, प्रकृति के करीब रहिए मुश्किलें आप से दूर रहेंगी।

पैसा, संपत्ति, सुख और ज्योतिष

शेर शब्द के कई अर्थ होते हैं जो निर्भर करता है कहां वो शब्द प्रयोग किया गया है ठीक वैसे ही ज्योतिष में पैसें को लेकर है ज्यादा जातक और कई बार कुछ ज्योतिषी भी इसको लेकर बहुत कन्फ्यूज रहते हैं।

इसको कुछ ऐसे समझिए द्वितीय भाव अचल एवं पुश्तैनी संपत्ति का भाव जिससे पता चलता है पारिवारिक रूप से जातक की क्या स्थिति है, ग्यारहवा भाव लाभ स्थान कहलाता है यानी जातक के जीवन के जीवन में पैसें का इनफ्लो और आउटफ्लो कैसा है यानी आमदनी और खर्चे के बाद क्या प्राप्त हो रहा है, चतुर्थ भाव सुख स्थान है यानी "जो प्राप्त है वो पर्याप्त है" वाला भाव जातक में कितना प्रतिशत है।

उदाहरण के लिए एक व्यक्ति की कल्पना करते हैं जिसके पास हजार एकड़ की पुश्तैनी संपत्ति है दुनिया की नजर में उसका जीवन बड़ा शानदार होगा, लेकिन अगर ग्यारहवे भाव की स्थिति ठीक नहीं होगी उसका कैश इनफ्लो और आउटफ्लो ख़राब होगा तो इतनी अचल संपत्ति के बाद भी उसे एक एक रुपए के लिए संघर्ष कर सकता है।

दूसरे उदाहरण में एक व्यक्ति है जिसके दूसरे भाव की स्थिति ठीक नहीं है लेकिन ग्यारहवे भाव की स्थिति अच्छी है तो भले ही उसके पास संपत्ति ना हो लेकिन उसके पास सदा पैसें रहेंगे लेकिन इसमें भी अगर चतुर्थ भाव के स्थिति अच्छी नहीं होगी तो व्यक्ति को हमेशा लगेगा की कमा तो वो पचास हजार रहा है लेकिन उपभोग पचास रूपये का भी नहीं कर पा रहा है।

अंतिम उदहारण में एक व्यक्ति है जिसके द्वितीय जिसे धन भाव भी कहते हैं उसकी स्थिति ठीक नहीं है यानी परिवार से उतना बैकप नहीं है, साथ ही ग्यारहवे भाव की स्थिति अच्छी ना होने के कारण उसके जीवन में कैश फ्लो की स्थिति भी ठीक नहीं है आमदनी का कोई नियमित सोर्स नहीं है, लेकिन उस कुंडली में अच्छा है तो चतुर्थ भाव चतुर्थ भाव में बैठे ग्रह की स्थिति ऐसा व्यक्ति सौ रुपए पास होने पर एक सौ पांच खर्च करने वाला होगा।

एक सुखी जीवन के लिए यूं तो हर ग्रह हर भाव में तारतम्य होना जरूरी है

ताकि इधर से घटे तो उधर से पूरा हो जाए और उधर से घटे तो तो यहां से पूरा हो जाए, लेकिन अगर सिर्फ धन संबंधी बात करें तो द्वितीय, चतुर्थ और ग्यारहवे भाव को उसमें बैठे ग्रहों की स्थिति को देखकर ही फलादेश कहना चाहिए, कोई एक स्थिति व्यक्ति को अवसाद में डालने और निकालने दोनो की शक्ति रखती है।

आशा करता हूं ज्योतिष में रुचि रखने वाले व्यक्तियों एवं जातकों को इस लेख को पढ़कर कुंडली देखने का एक नया दृष्टिकोण मिलेगा, मुमकिन है इस लेख को पढ़कर उन्हें समझ आया होगा धन होना, धन पास में होना और पास में जो धन है उसका उपभोग करना बहुत अलग-अलग बात है।

ज्योतिष, जातक और सर्किट

विद्युत उपकरणों के मध्य ऊर्जा का संचार तभी होता है जब वह अपना सर्किट पूरा करते हैं अगर किसी कारण से सर्किट के बीच में छोटा सा भी व्यवधान आता है तो विद्युत उपकरण काम करना बंद कर देते हैं, ज्योतिष के सटीक फलादेश भी इसी फॉर्मूले के अंतर्गत कार्य करते हैं ज्योतिष में रुचि रखने वाले व्यक्ति को हमेशा ही ग्रहों के इस एनर्जी फ्लो को समझने की कोशिश करनी चाहिए।

कुछ समय पहले एक जातक की कुंडली देखी थी तो बड़ी रोचक घटना घटी, उस कुंडली को देखकर लगा जैसे जातक के कुछ दांत वक्रता लिए हुए होंगे अर्थात टेढ़े होंगे। मैंने जैसे ही वो योग देखा मैंने जातक से पूछा "क्या आपके दांत टेढ़े हैं?" इस पर जातक की तरफ से जवाब आया की "एक एक्सीडेंट की वजह से दांत कुछ टेढ़े हो गए थे लेकिन वह बाद में मैंने तार लगवा कर ठीक करवा लिए" उसके बाद जातक के कुछ एक सवालों के जवाब दिए कुछ उपाय बताए और जातक चला गया।

एक तरह से मेरा फलादेश सही था लेकिन तार वाली बात दिमाग में चलती रही फिर मैंने जब दोबारा उस कुंडली का अध्ययन/मनन किया और इस सर्किट को पूरा करने की कोशिश की, तो मैंने पाया कि जातक की जन्म कुंडली में और नवमांश कुंडली में शुक्र उच्च का था, जन्मकुंडली तथा नवमांश में एक ही राशि होने के कारण एक ही राशि होने के कारण वह ग्रह वर्गोत्तम भी हो गया इस तरह जातक का शुक्र बहुत ज्यादा बलवान था।

जैसा कि आप जानते ही हैं शुक्र हमेशा ही सुंदरता,विलासिता और ब्रांडेड चीजों को पसंद करने वाला होता है, तो मुझे ऐसा लगा की जैसे ही बाकी ग्रहों की वजह से दांतों में दिक्कत आई बलवान शुक्र ने पूरी ऊर्जा लगाकर अपनी तरफ से जातक को फिर से उसी रूप में लाने की कोशिश की।

सर्किट को आप इस तरह भी समझ सकते हैं कि अगर किसी भी बीज को जरूरत योग्य जमीन (पृथ्वी), जरूरत योग्य नमी (जल), जरूरत योग्य हवा (वायु), जरूरत योग्य प्रकाश (अग्नि), जरूरत योग्य वातावरण (आकाश) नहीं

मिलेगा तो वह पौधा ना बड़ा होगा ना ही उसमें कोई फूल निकलेंगे और ना ही उसमें कोई फल आएगा।

वैसे विज्ञान भी तो यही कहता है की मानव शरीर पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश तत्वों से मिलकर बना है तो अगली बार जब कुंडली देखें तो सर्किट पूरा करने की कोशिश करें।

एक या दो ग्रहों के आधार पर किया फलादेश आपको क्षणिक सफलता तो दे सकता है लेकिन इससे जातक, ज्योतिष और ज्योतिषि तीनों को नुकसान होता है। जातक को नुकसान इस तरह होता है क्योंकि उसे आपकी वजह से गलत जानकारी प्राप्त हुई अब वो उसे सही मानकर उसका ही प्रचार प्रसार करेगा, ज्योतिष विद्या को नुकसान इस तरह होता है क्योंकि अब कुतर्की लोगों को आपकी वजह से बोलने का या उपहास उड़ाने का मौका मिल जाएगा, और स्वयं फलादेश करने वाले ज्योतिषी को ये नुकसान होता है की भविष्य में लोग उस पर विश्वास करने से कतराएंगे साथ ही उसके पुण्यों का एवं वाक शक्ति का जो ह्रास हुआ वो अलग से है ही इसलिए अगली बार जब कुंडली देखें तो सर्किट पूरा करने की कोशिश करें।

बड़े ग्रह उनके फल और ज्योतिष

कई बार जातक (जिसे ज्योतिष का थोड़ा ज्ञान होता है या कुंडली दिखाते-दिखाते हो जाता है) स्वयं की कुंडली देखकर सोचता है की ग्रह स्थिति तो अच्छी है फिर मुझे इस ग्रह स्थिति के अनुकूल फल क्यों नहीं प्राप्त हो रहे हैं, वैसे तो इसके बहुत से कारण हो सकता है लेकिन आज हम बड़े ग्रहों के फल के बारे में बात करेंगे।

जैसा की आप सभी को पता है कि चंद्रमा सबसे तेज गति से चलता है और उसके प्रभाव आपको हर ढाई दिन में अपने या दूसरों के व्यवहार में होने वाले बदलाव के रूप में दिखते हैं, ठीक इसी तरह बड़े ग्रहों की गति काफी धीमी होती है वह एक राशि में एक साल डेढ़ साल तक रहते हैं इसीलिए उनके फल देरी से मिलते हैं और उनके द्वारा मिले हुए फलों में एक ठहराव होता है।

इसे इस तरह समझिए अगर आपको एक किराए का घर लेना है तो कितना समय लगेगा ? अगर आपको एक फ्लैट लेना है तो कितना समय लगेगा ? अगर आपको अपना घर बनाना है तो कितना समय लगेगा ? अगर आपको हवेली/ फार्म हाउस बनानी/बनाना है तो कितना समय लगेगा ? सारी चीजें रहने के लिए ही हैं मुमकिन है आप तीन से चार कमरों से ज्यादा में ना रहें मगर उन्हें प्राप्त करने में आपको अलग-अलग समय खर्च करना होगा।

अपने अनुभव से मैंने पाया कि बड़े ग्रहों के फल मिलने से पहले का समय तैयारी का होता है या यूं कह लिजिए पहले दुनिया/ईश्वर आपको परखता है की आप उस काबिल भी हैं या नहीं। मेरी कुंडली में गुरु उच्च के हैं लगभग अट्ठाइस की उम्र तक मैं स्वयं भी खुद से और ज्योतिष के जानकर लोगों से सवाल करता रहा की मुझे उच्च के गुरु के फल कब प्राप्त होंगे, मुझे हमेशा लगता था जैसे जीवन निकला जा रहा है फिर एक दिन एक ज्योतिष के जानकर व्यक्ति ने कुंडली देखकर मुझे कहा "छब्बीस कोई उम्र नहीं होती बत्तीस-पैंतीस के बाद तो जीवन शुरू होता है" उस दिन मुझे लगा जैसे ये एक बेहतर जवाब है।

कुछ समय बाद एक ज्योतिष के जानकर ने मुझे देवदार की लकड़ी (जिसका चित्र पोस्ट के साथ में हैं) पहनने को कहा, उन्होंने बताया पुखराज और

इसके फल लगभग एक बराबर होते हैं।

गांव फोन करके मैंने अपने भाई से देवदार की लकड़ी मंगाई जो एकदम निशुल्क थी (इसलिए मैं हमेशा कहता हूं सात्विक उपाय या प्लांट एस्ट्रोलॉजी से जुड़े उपाय कीजिए) मैंने बस पैंतालीस रुपए कुरियर का चार्ज अपने भाई को दिया हालांकि वो इसके लिए भी मना ही कर रहा था, फिर बात आई गई हो गई लेकिन उसी दौरान कोरोना काल में प्रवासी लोगों की मदद करते करते मुझे महाराष्ट्र के राजभवन से फोन आया (इस पर कभी बाद में विस्तार से बात करेंगे) उसी दौरान आरएसएस से जुड़े होने के कारण आरएसएस के माध्यम से भी मैंने कई राज्यों में फसे प्रवासी भाइयों की मदद की आरएसएस के कई बड़े पदाधिकारियों से संपर्क हुआ बातचीत हुई, उस दिन मुझे लगा एक अच्छे गुरु का यही फल है राजा/विद्वानों से मित्रता।

हालाकि शनि स्वग्रही और उच्च का गुरु होने के कारण मैं जीवन में "काम खत्म आप अपने घर मैं अपने घर" वाली एप्रोच रखता हूं तो मैंने संबंधों को आगे बढ़ाने बारे में नहीं सोचा। वैसे तो ये बातें बतानी भी नहीं चाहिए लेकिन मुझे लगा ये लेख बिना इन उदाहरणों के अधूरा लगेगा।

इस लेख को लिखने का मुख्य उद्देश्य ये था की अगर कभी किसी ग्रह या युति को देखकर आपको लगे की इतनी अच्छी स्थिति के बावजूद आपको इसके फल क्यों नहीं मिल रहे तो हमेशा याद रखियेगा बड़ी चीजें होने में वक्त लगता है।

आप भी मांगलिक ही होंगे

कुछ ग्रह योग ज्योतिषियों के लिए लॉटरी से हैं जैसे कालसर्प योग, पितृ दोष, मांगलिक दोष आदि, कई बार तो मैंने ये तक पाया है की उपरोक्त ग्रह योग ना होने के बावजूद त्रिकालदर्शी ज्योतिषियों ने जातक से उन योगों के उपाय करवा दिए।

ख़ैर तो मांगलिक पर लौटते हैं जातक के मांगलिक होने को लेकर बहुत सी बातें/मत प्रचलित हैं, कुछ लोग कहते हैं जब किसी कुण्डली में प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम अथवा द्वादश भाव में मंगल होता है तब मांगलिक दोष लगता है, वैसे अमूमन सप्तम और अष्टम भाव में मंगल होने पर जातक मांगलिक होता है लेकिन कुछ विद्वानों के अनुसार प्रथम, चतुर्थ, द्वादश भाव में जब मंगल होता है तो उसे आंशिक मांगलिक कहा जाता है, इसके अलावा विवाह के समय कई लोग चंद्र कुंडली से, शुक्र कुंडली से, सूर्य कुंडली से भी मांगलिक देखने की बात करते हैं, ऐसी स्थिति में शायद ही कोई जातक मांगलिक होने से बच पाएगा।

सप्तम भाव जीवनसाथी का होता है अष्टम भाव जीवनसाथी से सुख का होता इन दोनों भावों में मंगल के बैठने से जातक का मांगलिक होना समझ में भी आता है लेकिन बाकी स्थितियों में सिर्फ मंगल की दृष्टि होने से किसी को मांगलिक कह देना कम से कम मेरे तो गले नहीं उतरता, साथ ही चंद्र कुंडली, सूर्य कुंडली, शुक्र कुंडली देखने पर तो मंगल कभी ना कभी प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम अथवा द्वादश भाव में आ ही जायेगा।

वैसे भी मांगलिक होना कोई अभिशाप नहीं है हां इसे प्रस्तुत जरूर इस तरह किया गया है, मांगलिक जातक का विवाह भी उस जातक से किया जा सकता है जो मांगलिक नहीं हैं विवाह से पहले घट विवाह, प्रतिमा विवाह, वृक्ष विवाह जैसे आसान उपाय हमारे ऋषि मुनियों ने बताए हैं, वैसे तो विवाह से पूर्व सिर्फ गुण मिलान नहीं बल्कि दोनों कुंडलियों का विश्लेषण करवाना चाहिए (इस संबंध में एक लेख पहले लिखा हुआ है) लेकिन मुझे ये भी लगता है (कई जातकों की कुंडली का अध्यन करने के बाद पाया है) की दोनों में से अगर कोई एक व्यक्ति भी समझदार हो तो कितने भी तूफान आ जाएं जीवन चलता रहता है और अगर दोनों तू डाल-डाल मैं पात पात हों तो फिर महादेव कृपा करें।

भाव, राशि, सातवे भाव का शनि और ज्योतिष

इस लेख के शुरू होने से पहले हम भाव और राशि में फर्क जान लेते हैं कुंडली में बारह भाव और बारह ही राशियां होती हैं, भाव स्थिर होते हैं लेकिन राशियां सूर्योदय के साथ बदलती रहती हैं।

कुंडली में जो आपको संख्या दिखती है वह राशि होती है और जो बारह खाने दिखते हैं वह भाव होते हैं बीच के चार खाने ऊपर से बायीं ओर प्रथम, चतुर्थ, सप्तम और दशम भाव होते हैं। इसी तरह के क्रम चलता रहता है जिसके जन्म के समय जो राशी उदित होती है वह उस व्यक्ति का लग्न बन जाती है और जिस राशि में जन्मकुंडली में चंद्रमा होता है वह उस व्यक्ति की राशि, उदाहरण के लिए अगर बीच के खाने में 6 नंबर है और और चंद्रमा 10 नंबर यानि पांचवे भाव में है तो हम कह सकते हैं जातक का जन्म कन्या लग्न में हुआ है और उसकी राशि मकर है।

वैसे तो मैं एक ग्रह के आधार पर होने वाले फलादेश का कभी पक्षधर नहीं रहा हूं लेकिन सातवे भाव में शनि का फलादेश मुझे बहुत रोचक लगता है इसलिए कुछ अनुभव साझा करना चाहता हूं, सातवें भाव में जब शनि होता है तो वह तीसरी दृष्टि से भाग्य भाव को देखता है सातवीं दृष्टि से लग्न को और दसवीं दृष्टी से सुख स्थान को देखता है, ज्योतिष में शनि मजदूरों/मेहनत का कारक होता है शनि व्यक्ति को प्रयत्नशील बनाता है, ऐसी स्थिति में व्यक्ति लग्न में देखने में काफी ज्यादा खुद्दार होता है भाग्य में देखने पर सेल्फ मेड होता है और सुख स्थान में देखने पर हवाई महल नहीं बनाता जमीन पर रहता है।

शनि जब सातवें भाव में होता है तो उसके कई सारे फलादेश होते हैं लेकिन उन फलादेशों में से एक फलादेश ये भी होता है कि व्यक्ति बहुत कम उम्र में कमाने लगता है, अब इसे समझ लेते हैं कई बार व्यक्ति मजबूरी में कमाना पड़ता है, कई बार व्यक्ति शौक पूरे करने के लिए कमाने लगता है और कई बार प्रतिभा के दम पर व्यक्ति के पास लक्ष्मी चलकर आ जाती है।

मैंने कई कुंडलियां देखी और कई कुंडलियों में जिनमें सातवे भाव में शनि

था उनमें पाया कि कुछ लोगों को परिवारिक समस्या की वजह से बेमन से बेमन का काम करना पड़ा, कुछ लोग जो पढ़े लिखे नहीं थे उन्होंने अपने खर्चे निकालने के लिए कम उम्र में ही दलाली/लाइजनिंग आदि करके कमाई की और कुछ लोग जो बहुत पढ़े लिखे थे उन्होंने कम उम्र में ही ट्यूशन आदि पढ़ाना शुरू कर दिया। साथ ही जो लोग अपने अंदर कोई हुनर/कला रखते थे, उन्होंने बच्चों को वह हुनर सिखा कर धनार्जन किया।

सभी स्थितियों में सातवे भाव में शनि होने से सबकी कम उम्र में ही आमदनी शुरू हुई थी सबकी देश, काल, परिस्थिति और बाकी ग्रहों की स्थिति अलग थी तो उनके कारण और स्त्रोत भी अलग-अलग थे।

इसका जो कारण मुझे लगता है वो ये कि लग्न को देखता शनि व्यक्ति को खुद्दार और भाग्य भाव को देखकर सेल्फ मेड बनाता है ऐसा व्यक्ति हर किसी से मदद नहीं मांगता हाथ नहीं फैलाता, लेकिन भौतिकवादी युग में खर्चे सबके होते हैं तो वह जातक अपनी देश, काल, परिस्थिति अपनी काबिलियत के अनुसार अपनी आमदनी के रास्ते खुद बनाता है।

गोचर जीवन और ज्योतिष

पिछले कुछ दिनों से सामने रखा सामान नहीं मिल रहा था घंटों खोजने के बाद थककर दूसरा सामान खोजने लगो तो पहला सामान सामने ही नजर आ रहा था, ऐसा लगातार हो रहा था तो हल्का गुस्सा और फिर खुद पर हंसी भी आ रही थी क्योंकि जब मुश्किल में फसो और घटना का ज्योतिषीय विश्लेषण करो तो कोई नया सूत्र हाथ लग जाता है।

कई बार तो लगता है मुश्किलें आती ही नया ज्योतिषीय सूत्र सिखाने के लिए हैं ख़ैर तो इस घटना को देखकर लग रहा था जरूर गोचर में बुध पीड़ित होगा पाप ग्रहों के प्रभाव में होगा, मैं अमूमन घटनाओं पर जल्दी रिएक्ट नहीं करता काफी समय तक चीजों को इग्नोर करना पसंद करता हूं क्योंकि मुझे लगता है क्यों अपनी ऊर्जा, अपना समय, अपना दिमाग उस पर खर्च करना।

कल आखिरकार मैंने गोचर देखा तो मेरा अनुमान ठीक ही रहा बुध तुला राशि में थे जहां उनके साथ नीच राशि के सूर्य थे सूर्य पर ग्रहण लगाते केतु थे और उन सब पर शनि की दृष्टि थी, केतु साथ थे तो राहु भी बुध को सीखे देख रहे थे तो हिसाब लगाइए लगभग चार पाप ग्रहों के प्रभाव में थे बुध जो की बुद्धि और स्वयं जातक के कारक होते हैं।

आज भी शाम साढ़े छः के आसपास मन यूं ही थोड़ा उदास था तो जब नौ के करीब गोचर देखने का निर्णय किया तो पाया, चंद्रमा जो की मन का कारक होते है वो राहु के साथ युति बना रहे हैं जो कि चंद्रमा के लिए ग्रहण का काम करते हैं। अब मन प्रसन्न है क्योंकि सारे कारण समझ में आ गए हैं अगले ढ़ाई से तीन दिन में ग्रहों की स्थिति बदल जायेगी।

एक ज्योतिष के विद्यार्थी के तौर पर कई बार मुझे लगता है की आपको घटना के घटने का तो थोड़ा बहुत अनुमान तो लग जाता है आप बस ये देखने के उत्सुक होते हैं की परिस्थिती क्या बनेगी और वो घटना घटेगी कैसे?

प्रतिदिन गोचर कुंडली का अध्ययन भी ज्योतिष सीखने का एक बहुत सटीक और प्रमाणिक तरीका है मुझे लगता है अगर कोई ज्योतिष सीखने का इच्छुक व्यक्ति साढ़े तीन से चार महीने प्रतिदिन गोचर कुंडली का अध्ययन कर ले तो उसे काफी कुछ नया सीखने को मिलेगा।

1620 साल बाद बना दुर्लभ संयोग इन 3 राशि वालों पर बरसेगा पैसा

अक्सर आपने टेलीविजन में, यूट्यूब चैनल्स में, अख़बारों में "1620 साल बाद बना दुर्लभ संयोग इन 3 राशि वालों पर बरसेगा पैसा" ऐसी हैडलाइन वाली ख़बरें सुनी, देखी और पढ़ी होंगी या ज्योतिषियों को बोलते सुना होगा।

यकीन मानिए किसी का "अचानक" भाग्योदय नहीं होता ना ही किसी पर "अचानक" पैसा बरसता है, जिस भी व्यक्ति पर आपको लग रहा है कि उस पर "अचानक" पैसा बरस रहा है उसके बारे में करीब से जानने पर आपको पता चलेगा ये ये "अचानक" उसकी कई बरसों की मेहनत का परिणाम है।

अगर इसे ज्योतिषीय आधार पर समझने की कोशिश करें तो वैदिक ज्योतिष में मनुष्य की आयु 120 वर्ष मानी गई है, और इन 120 वर्षों को नौ ग्रहों में बांटा गया है हर ग्रह कुछ वर्षों तक जातक के जीवन में विशेष प्रभाव डालता है नौ ग्रहों की कुल अवधि 120 वर्षों की होती हैं वो निम्नलिखित है।

सूर्य - 6 वर्ष

चंद्र - 10 वर्ष

मंगल - 7 वर्ष

राहु - 18 वर्ष

बृहस्पति - 16 वर्ष

शनि - 19 वर्ष

बुध - 17 वर्ष

केतु - 7 वर्ष

शुक्र - 20 वर्ष

इसमें समझने वाली बात यह है कि महादशा के अंदर अंतर्दशा होती है अंतर्दशा के अंदर प्रत्यंतर दशा होती है प्रत्यंतर दशा के अंदर सूक्ष्म दशा समस्या होती है सूक्ष्म दशा के अंदर प्राण दशा होती हैं, ये क्रम सुव्यवस्थित तरीके से चलता रहता है।

प्राण दशा का समय तो कई बार इतना कम होता है की किसी कार्य के शुरु होने और खत्म होने तक किसी दूसरे या तीसरे ग्रह की प्राण दशा शुरु हो जाती है, इसीलिए व्यक्ति के विचार बदलते रहते हैं और कभी कभी वो कार्य को बीच में ही छोड़ देता है या उसकी रुचि अचानक बढ़ जाती है।

विषय से हटकर एक बात जोड़ना चाहूंगा जीवन में महादशा के साथ-साथ अंतर्दशा और प्रत्यंतर दशा इसलिए भी महत्वपूर्ण हैं क्योंकि जीवन में कई बार अच्छे ग्रह की महादशा में बुरे ग्रह का प्रत्यंतर आ जाता तो जीवन कुछ समय के लिए जटिल हो जाता है, और कई बार बुरे ग्रह की महादशा में अच्छे ग्रह का प्रत्यंतर आ जाता है तो जीवन सुख कुछ समय के लिए सुखमय हो जाता है ठीक वैसे जैसे चींटी को बहते वक्त तिनके का सहारा मिल गया हो। इस बातों के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि ये कतई जरूरी नहीं की अच्छी महादशा में सिर्फ अच्छे और बुरी महादशा में महादशा के सिर्फ बुरे फल जी जातक को मिलेंगे।

पुनः विषय पर लौटते हैं एक "सामान्य परिस्थिति" में आपके जीवन में घटने वाली एक छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी घटना घटने में योगदान आपकी कुंडली (षोडश वर्ग) में उपस्थित ग्रहों का, उन ग्रहों से बनने वाले योगों का, आपके लग्न का, आपकी राशि का, आपकी देश, काल, परिस्थिति आदि का होता है। इन सभी बातों को ध्यान में रखकर ही कोई "अच्छा ज्योतिषी" फलादेश करता है।

अब आप खुद ही सोचिए जो ज्योतिष इतना सूक्ष्म है इतनी बारीक और इतनी सारी गणनाओं पर आधारित है, क्या उसमें "1620 साल बाद बना दुर्लभ संयोग इन 3 राशि वालों पर बरसेगा पैसा" जैसी आधारहीन बातों के लिए कोई जगह बनती है ?

ज्योतिष की आंतरिक यात्राएं

चंद्रमा आपका वो व्यवहार है जो आपका खुद के साथ है बुध आपका वो व्यवहार है जो आपका लोगों के साथ है।

अगर आप इस दोनों बातों को समझ गए तो आपको कुंडली में बुध और चंद्रमा की स्थिति व्यक्ति से बात करके, उसके सवाल पूछने के तरीके से, उसके बात करने के तरीके से मालूम चल जायेगी।

जैसा इस मामले में हुआ एक मित्र ने सवाल पूछा जो कॉम्बिनेशन मैंने बताए वो जन्मकुंडली में तो पूरी तरह अनुपस्थित थे लेकिन नवमांश कुंडली में दोनों योग उपस्थित थे।आपको पता ही होगा जन्म कुंडली अगर पेड़ है तो नवमांश उस पेड़ में लगने वाला फल है इसलिए नवमांश की अपनी अलग महत्ता है।

कुछ हफ्ते पहले एक मित्र अपने बेटे की कुंडली लेकर आए थे उनके कुछ सवाल थे तो मैंने सवाल सुनकर उनसे कहा कि यह जरूर चंद्रमा,मंगल और राहु की वजह से होगा और कुंडली देखने पर उन्हीं तीन ग्रहों की वजह से वह स्थिती बन रही थी।

लेकिन इसके बाद भी समस्या का पता लगा लेना कोई बहुत बड़ी बात नहीं है उस "जटिल समस्या" का "आसान समाधान" खोज लेना एक अच्छे ज्योतिषि की पहचान है। ज्योतिष में ऐसे बहुत से ग्रह योग हैं या ग्रहों की स्थितियां हैं जिससे आप व्यक्ति के शरीर में उपस्थित तिलों की संख्या और उनकी स्थिति भी बता सकते हैं, लेकिन मैं हमेशा यही कहता हूं कि उसे हासिल क्या होगा उससे आपको वाहवाही के सिवा कुछ नहीं मिलेगा समय खराब होगा अलग से और खुद की विद्या पर खुद पर घमंड होगा अलग से।

ज्योतिषि के रूप में आपका पहला और अंतिम कर्तव्य होना चाहिए कि आप समस्या का "आसान समाधान" खोज सकें क्योंकि वही आपकी वास्तविक उपलब्धि होगी।

कुछ लोग इस सवाल के साथ आते हैं की हमें ज्योतिष को अपना प्रोफेशन बनाना है तो हमें क्या करना चाहिए? तो यह मेरा बहुत निजी मत है हो सकता है बहुत से लोग इससे इत्तेफाक नहीं रखते हो, लेकिन मुझे लगता है

ज्योतिष को कभी भी प्रोफेशन नहीं बनाना चाहिए क्योंकि जब आप उसे प्रोफेशन बना लेते हैं तो आपके अंदर लालच अपने आप आ जाता है।

आपको लगता है कि आज मैंने पांच सौ कमाए तो कल मुझे छः सौ कमाने चाहिए और इसी तरह लालच आगे बढ़ता रहता है, कई बार आप हर व्यक्ति को रत्न/नग आदि चिपकाने लग जाते हैं या फिर उसे महंगी पूजा-पाठ बताने लगते हैं, ऐसी स्थिति में कई बार परिणाम ये होता है की आप दस कमाते हैं और आपको हर्जाना सौ का भरना पड़ता है।

एक मेरे जानने वाले ज्योतिषि हैं वह शहर में इस तरह से पैसा कमाने के लिए बहुत मशहूर हैं एक बार मैं उनसे मिला तो उन्होंने मुझे बताया कि उनके पेट के दो ऑपरेशन हो चुके हैं आजकल बहुत परेशान है, वैसे तो ऑपरेशन किसी का भी हो सकता किसी को भी गंभीर से गंभीर बीमारी हो सकती है स्वयं रामकृष्ण परमहंस जी को गले का कैंसर हो गया था। लेकिन ये मेरा मानना है की अगर आपने किसी को जानबूझकर तकलीफ दी है किसी का प्रत्यक्ष नुकसान किया है तो आपको सजा थोड़ी ज्यादा मिलेगी।

राजयोग के विभिन्न रूप

ज्योतिष को समझना है तो जीवन को समझना होगा और जीवन को समझना है तो व्यक्ति को समझना होगा, आज दिन में डेढ़-दो के करीब जब घर से निकला तो मेरे पास खुले पैसें नहीं थे एक पांच सौ का नोट था जिसे तोड़ने को कोई आसानी से तैयार नहीं होता। टूकटुक वाले को हाथ दिया तो वो आकार रुक गया उसमें इंग्लिश मीडियम स्कूल के दो बच्चे एक लड़का एक लड़की बैठे थे एकदम नया टूकटुक था, मैंने टूकटुक वाले भइया को बोला क्या पांच सौ के खुले हो जाएंगे? वैसे किराया सिर्फ 10 रुपए था तो ऐसे सवाल पूछना एक तरह से मूर्खता ही थी ख़ैर मेरे पास भी कोई विकल्प नहीं था।

टूकटुक वाले भइया ने बोला खुले तो नहीं हो पायेंगे फिर मेरे दिमाग में एक आइडिया आया मैंने बोला आप गूगलपे या पेटियम आदि चलाते हो ? उन्होंने बोला "हां वो हो जाएगा" मैंने कहा ठीक है मैं बीस रुपए ट्रांसफर करता हूं आप दस मुझे वापस कर देना, उन्होंने कहा "ठीक है"।

टूकटुक चलने लगा थोड़ी दूर जाकर मैंने उन्हें बोला "पैसें कहां पे करने हैं ?" उन्होंने टूकटुक में बैठी इंग्लिश मीडियम वाली लड़की को बोला "बिटिया नम्बर बता दे" लड़की ने नंबर बताया मैंने बीस रुपए ट्रांसफर करने लगा। इस सब के बीच एक पल के लिए मैं चौंक सा गया दरअसल टूकटुक चालक उस लड़की का पिता था या शायद दोनों बच्चों का पिता होगा, और वो उन्हें स्कूल से घर छोड़ने जा रहा था, वैसे ये बड़ी सामान्य सी बात है इसमें ऐसा चौंकने जैसा कुछ भी नहीं लेकिन जीवन में हमने बहुत सी धारणाएं बनाई हुई हैं जैसे मोटा व्यक्ति डांस नहीं कर सकता या दौड़ नहीं सकता, पतला व्यक्ति ताकतवर नहीं होता, कोई गरीब है तो उसके बच्चे अच्छे स्कूलों में नहीं पढ़ सकते आदि।

ज्योतिष कई बार इन्हीं धारणाओं को तोड़ने का काम करती है अब इस घटनाक्रम में राजयोग को समझने की कोशिश करते हैं तो हम पाते हैं की सामान्य परिवार या एक तरह से लोअर मिडिल क्लास परिवार में जन्म लेने वाली लड़की प्रतिष्ठित स्कूल में पढ़ रही है जो किसी राजयोग से कम नहीं है, एक टूकटूक चालक अपने बच्चों को प्रतिष्ठित स्कूल में पढ़ा रहा था मुमकिन है कई टूकटूक

चालक चाहकर भी नहीं पढ़ा पा रहे होंगे तो उस टूकटूक चालक की कुंडली में भी राजयोग होगा।

ज्योतिष इसी तरह हमारे चारों ओर बिखरा हुआ है बस जरूरत है की हम हर घटना पर ध्यान दें और उसे समझने की कोशिश करें, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं ही अपनी चलती फिरती कुंडली होता है।

ज्योतिष और गोचर

गोचर शब्द का संधि विच्छेद करने पर हमें दो शब्द प्राप्त होते हैं पहला शब्द गो और दूसरा शब्द चर, गो का अर्थ होता है ग्रह/नक्षत्र और चर का अर्थ होता है चलना अर्थात गोचर हमारे वर्तमान समय की कुंडली होती है।

वर्तमान ग्रह स्थिति का हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ रहा है इसका अध्ययन गोचर के द्वारा ही ज्यादा सटीकता से किया जा सकता है। वैसे तो महादशा, अंतर्दशा, प्रतिअंतर्दशा, सूक्ष्म दशा, प्राण दशा का अपना महत्व है और इनके बारीक अध्यन से हम घटना के घटने का दिन और घंटा तक निकाल सकते हैं लेकिन उतना सटीक फलादेश कर पाना लगभग असंभव सा है।

गोचर का अध्यन ज्यादातर किसी विशेष निर्णय को लेने में जैसे कोर्ट कचहरी के मामले, जमीन खरीदने बेचने संबंधी विचार, नई गाड़ी आदि से संबंधी विचार में किया जाता है, साथ ही जीवन में आने वाले अच्छे या बुरे समय के बारे में गोचर का अध्यन करके जाना जा सकता है।

कई विद्वान कहते हैं लग्न से गोचर कुंडली देखनी चाहिए कई विद्वानों का मत है कि चंद्र को केंद्र में रखकर गोचर कुंडली को देखना चाहिए, कुछ लोग कहते हैं उन दोनों में से जो बलवान हो उसके हिसाब से गोचर कुंडली के देखना चाहिए, मेरा मत इसमें है कि लग्न कुंडली से ही गोचर देखना चाहिए क्योंकि लग्न ही व्यक्ति की सबसे पहली पहचान है जो उसके चेहरे से झलकती है।

मैंने कई बार गोचर का प्रत्यक्ष उदाहरण अपने जीवन में देखा है, जब भी मैं बिना बात के थोड़ा उदास होता हूं या किसी निर्णय को लेकर असमंजस की स्थिति में होता हूं, तो मैंने लगभग हर बार ही पाया की उस समय चंद्रमा पाप ग्रहों के प्रभाव में था, जैसा की आप जानते ही हैं चंद्रमा ज्योतिष में मन का कारक होता है।

इसी तरह दूसरे ग्रहों की स्थिति देखकर और उनके कारक के आधार पर हम भविष्य की घटनाओं के बारे में थोड़ा बहुत अनुमान लगा सकते हैं, इस सब जानकारी के बाद भी मैं पूरी गंभीरता से यह बात कह रहा हूं की व्यक्ति को हर चीज के लिए कुंडली नहीं देखनी/दिखानी चाहिए, ना ही सारे के सारे निर्णय कुंडली

देखकर लेने चाहिए। ज्यादा कुंडली दिखाने से कई बार व्यक्ति अंधविश्वासी/ भाग्यवादी हो जाता है और जीवन की सबसे सुंदर चीज से हाथ धो बैठता है, जीवन की सबसे सुंदर चीज है जीवन की अनिश्चिता।

गोचर के अनुभव

मैंने गोचर पर कभी इतना ध्यान नहीं दिया लेकिन जब इस विषय पर ध्यान देना शुरू किया तो पाया कि गोचर अपने आप में बहुत ही रोचक विषय है, गोचर की सबसे बड़ी खूबी यह है कि आप घटनाओं को घटते हुए देख सकते हैं जो उसकी प्रमाणिकता को साबित करने के लिए काफी रहता है।

कल शाम के वक्त मैं थोड़ा उदास सा था तो अब मैं जब भी कभी उदास होता हूं तो सबसे पहले गोचर देखता हूं, गोचर देखने पर पता चला चंद्रमा और केतु एक ही भाव में बैठे थे गोचर का जो फार्मूला मैंने सीखा है उसके आधार पर मैंने अपनी और दूसरों की कुंडली में पाया है चन्द्रमा (जो की मन का कारक होता है) जब भी पाप ग्रहों के प्रभाव में रहता है तो व्यक्ति थोड़ा उदास रहता है। ये उदासी अलग-अलग ग्रहों के साथ अलग-अलग प्रकार की होगी और अलग-अलग भावों में भी इसका फल अलग-अलग होगा।

मैं जब भी ऐसी स्थिती अपनी कुंडली में देखता हूं तो उसके बाद मुझे हंसी आ जाती है और मैं समझ जाता हूं ऊपरवाले के द्वारा फिरकी लेने की कोशिश की जा रही है, खैर कल का दिन भी सामान्य था और आज का दिन सामान्य था। कुछ देर पहले जब मैं बेवजह मुस्कुराया तो मुझे लगा फिर से गोचर देखना चाहिए और गोचर देखने पर मैंने पाया की चंद्रमा केतु के प्रभाव से मुक्त होकर एक घर आगे बढ़ चुका है यूं तो अभी भी चंद्रमा नीच राशि में था लेकिन चंद्रमा स्वतंत्र है तो फिर भी इतना परेशान नहीं रहेगा।

गोचर के अध्ययन के दौरान ही मैंने पाया कि जिस तरह चंद्रमा हमें मानसिक रूप से परेशान/उदास करता है ठीक उसी तरह जब बुध (जो की वाणी और बुद्धि का कारक है) बुरे या पाप ग्रहों के प्रभाव में होता है या शत्रु राशि में होता है तो उस दौरान व्यक्ति काफी चीजें भूलता है, भूलने की वजह से उसके अंदर एक अजीब सी इरिटेशन होती है और जब उस दौरान वो किसी से बात करता है तो वही इरिटेशन उसके लहजे में भी झलकती है इससे दूसरे व्यक्ति के साथ झगड़े होने, मनमुटाव होने की संभावना बहुत अधिक रहती हैं।

फिलहाल तो शोध यहीं तक था आगे इस पर और शोध करूंगा तो

लिखूंगा, मुझे लगता है कि गोचर अपने आप में एक बेहद रोमांचक विषय है इसे ज्योतिष में रुचि रखने वाले हर व्यक्ति को समझना चाहिए। गोचर के अध्यन के बाद आप पाएंगे कि अपने जीवन में आने वाली दस में से आठ समस्याओं का समाधान आप गोचर से प्राप्त कर सकते हैं।

गोचर (केस स्टडी)

गोचर का अध्यन करने और गोचर को समझने के बाद मैंने पाया की हमारी कुंडली और गोचर में परस्पर द्वंद की स्थिति बनी रहती है, आसान शब्दों में कहें तो कुंडली हमारा व्यवहार प्रदर्शित करती है और गोचर हमारे प्रति समाज/ सृष्टि का व्यवहार।

ज्योतिषियों की एक बहुत बुरी आदत होती है वह यह की घटना घट जाने के बाद वह ग्रहों का जोड़-तोड़ करके बताते हैं की ऐसी घटना क्यों घटी, मैं जितना हो सके इससे बचने की कोशिश करता हूं इसका कारण ये है की हमें लगता तो है हम काफी कुछ सीख रहे हैं लेकिन इससे कुछ सीखने को नहीं मिलता।

कुछ समय पहले मेरे एक मित्र का फोन आया और उन्होंने मेरे एक लेख में पढ़ा था की अगले सात से आठ दिन थोड़ा सतर्क रहने की जरूरत है वाद विवाद की स्थिति बन सकती है (उसका कारण ये था की उन सात से आठ दिन या तो चंद्रमा के केमद्रुम योग में था या बुरे ग्रहों के प्रभाव में था।) उनका सवाल ये था क्या अभी भी सतर्क रहने की जरूरत है? उन्होंने बताया कि पिछले पांच छः सालों में पहली बार उनका उनके पड़ोसी से हल्का वाद-विवाद हुआ था साथ ही ऑफिस में भी कुछ तनाव की स्थिति बनी थी लेकिन लेख पढ़ने के कारण उन्होंने दोनों ही मामलों को तूल नहीं दिया और एक तरह से नजरंदाज कर दिया।

मैंने उन्हें बताया कि अभी सितंबर 2023 तक थोड़ा सतर्क ही रहें (ये हर किसी के लिए है क्योंकि सितंबर तक गोचर में ग्रहों की स्थिति उतनी ठीक नहीं है) इसके बाद मैंने उनसे ऑफिस में होने वाले झगड़े का कारण जानना चाहा क्योंकि वह एक तरह मेरे अध्यन के लिए भी काफी जरूरी था, उन्होंने बताया कि काफी समय से उनका एक बिल पास नहीं हुआ था वो उनकी मैडम के ट्रीटमेंट का बिल था इसी वजह से एचआर से थोड़ी मौखिक झड़प हो गई।

कुछ दिन बाद मैंने सोचा क्यों ना अपने मित्र का उस दिन का गोचर देख लूं तो क्या पता कुछ नया सीखने को मिल जाए तो मैंने पाया की एकदाश भाव में शुक्र राहु की युति बन रही थी और उस पर शायद शनि की भी दृ थी, शुक्र के साथ राहु का बैठना और शनि की दृष्टि होना शुक्र के अच्छे प्रभावों को दूषित

करेगा, अब इसके ज्योतिषीय पहलू को देखें तो एकादश भाव सप्तम से पंचम होने के कारण जीवनसाथी से प्रेम का भी होता है ऊपर वाले मामले में भी लड़ाई जिस बिल की वजह से हुई थी वह जातक के ना होकर जातक के जीवनसाथी के थे, ये भी एक तरह से सत्य ही है की प्रेम में आदमी कुछ भी कर गुजरता है मौखिक झड़प तो फिर छोटी सी बात है।

लेकिन मैं फिर अपनी ऊपर लिखी बात को दोहराऊंगा की "ज्योतिषियों की एक बहुत बुरी आदत होती है वह यह की घटना घट जाने.........लेकिन इससे कुछ सीखने को नहीं मिलता।"

अब एक काल्पनिक उदाहरण से इसे समझने की कोशिश करते हैं जैसे गोचर में ग्रहों की स्थिति ऐसी बन रही है की आज या तो बहुत तेज बारिश आयेगी या बहुत तेज धूप निकलेंगी, तो इस स्थिति में आप पायेंगे वो तेज धूप या तेज बारिश समाज के हर वर्ग को अलग अलग तरह से प्रभावित करेंगी।

मुमकिन है किसी को भीगते ही सर्दी जल्दी लग जाती हो और वो बीमार पड़ जाए, कोई व्यक्ति ऐसा हो जो शहर से बाहर कहीं मीटिंग में गया हो और जिसके पास सिर्फ एक या दो जोड़ी ही कपड़े होंगे उसे उनकी टेंशन होगी, ये भी सम्भव है की किसी का ऑफिस पहुंचना जरूरी हो लेकिन उसके पास अपनी कार ना हो, ये भी संभव है भारी बारिश की वजह से किसी की सारी मीटिंग कैंसिल हो गई हों और वो बालकनी में बैठकर चाय की चुस्की और गरमा गर्म पकोड़ों के साथ अख़बार पढ़ते हुए उस बारिश का आनंद ले रहा हो और बैकग्राउंड में गीत बज रहा हो "आया सावन झूम के।"

साधना का आधुनिक स्वरूप

किसी भी बात को शाब्दिक लेने से बचना चाहिए एक बात के हर व्यक्ति की देश, काल, परिस्थिति के हिसाब से अनेक अर्थ हो सकते हैं।

हमारे धर्म ग्रंथों में जितनी भी बातें लिखी गई हैं उनमें से ज्यादातर बातें काव्यात्मक और प्रतीकात्मक रूप में लिखी गई हैं, ताकि पढ़ने वाले को कहानी सी लगे और आसानी से याद भी हो जाए और समय आने पर या अगर कोई समझाए तो समझ में भी आ जाए।

आम दिनचर्या के ऐसे बहुत से उपाय होते हैं जिनको करके हम ग्रहों को बल दे सकते हैं, मेरा हमेशा से फोकस इसी पर रहा है कि हम कैसे छोटे-छोटे उपायों को करके अपने जीवन में बड़े बदलाव ला सके।

जैसे कि एक उपाय जो काफी लोग जानते हैं काफी प्रचलित भी है वह यह है कि मंगल के लिए आप समय-समय पर ब्लड डोनेशन कर सकते हैं (अगर आपका शरीर इजाजत दें तो) इससे मंगल के बुरे प्रभाव में कमी और अच्छे प्रभाव में बढ़ोतरी होती हैं।

इसी तरह का एक दूसरा उपाय है जिसके बारे में कम लोगों को जानकारी है वह है कि अगर आप मौन व्रत रखते हैं तो आपका बुध ग्रह बलवान होता है, कई बार जब मैं किसी जातक को यह उपाय बताता हूं तो उल्टा सवाल दागता है मौन व्रत रखना कैसे संभव हो पाएगा? यह तो बहुत असंभव है आधुनिक युग में।

लेकिन मुझे इसका उल्टा लगता है मुझे लगता है यह एक आसान उपाय है वह भी तब जब आपके पास मोबाइल, इंटरनेट, ईमेल जैसी सुविधाएं हैं जिससे आप लोगों तक बिना बोले अपना मैसेज भेज सकते हैं।

हां ये जरूर है इसके लिए आपको थोड़ी बहुत नियम बनाने होंगे जिससे बाद मुझे लगता है कि आप हफ्ते में एक दिन नहीं बल्कि हफ्ते में चार-पांच दिन भी मौन व्रत रख सकते हैं।

अपना उदाहरण दूं तो कोई बहुत जरूरी काम हो तभी मैं दिन में फोन उठाता हूं, व्यस्तता के कारण लोग भी रात आठ से पहले फोन नहीं करते मैं भी फोन करने से बचता हूं, ज्यादातर बातें आजकल मैसेज में हो ही जाती हैं तो हफ्ते

में कई ऐसे दिन होते हैं जब मैं सारा सारा दिन किसी से बात नहीं करता जबकि मुझे तो बुध के उपाय करने की कोई खास जरूरत भी नहीं।

अब यह जरूरी नहीं कि आप यही उपाय यही तरीका फॉलो करें अपनी देश काल परिस्थिति के हिसाब से आप अपना उपाय खोजिए तरीका खोजिए।

विद्या बनाम विद्यार्थी और ज्योतिष

हर व्यक्ति खुद को और खुद की विद्या को श्रेष्ठ समझता है ये कम या ज्यादा हो सकता है, लेकिन इसे बदला नहीं जा सकता क्योंकी ये मानवीय स्वभाव है।

ज्योतिष के क्षेत्र में भी अक्सर ऐसे सवाल उठते रहते हैं ज्योतिष सीखने में रुचि रखने वाले लोग शुरुआत करने से पूर्व के जानना चाहते हैं की भविष्य जानने की कौन सी विद्या ज्यादा बेहतर और प्रमाणिक है।

मेरा अपना इसमें ये मत है की कुंडली बाकी सभी विद्याओं से ज्यादा प्रमाणिक और तार्किक है, इसके दो कारण हैं पहला कुंडली की गणनाएं बहुत व्यापक हैं और बहुत सूक्ष्म हैं।

व्यापक का अर्थ है की जन्मकुंडली के अलावा बहुत सी कुंडलियां हैं जिनसे जातक के पिछले जन्म के बारे में तक बताया जा सकता है और सूक्ष्म का अर्थ है की जन्मकुंडली के प्रत्येक भाव को केंद्र मानकर जातक से जुड़े हर व्यक्ति के विषय में फलादेश किया जा सकता है साथ ही गोचर और प्राण दशाओं का अध्यन करके व्यक्ति ने किस रंग के कपड़े पहने होंगे कई ज्योतिष के जानकर ये तक बता देते हैं।

दूसरा कारण ये है की बाकी सभी प्रमुख विद्याएं जैसे मुखाकृति विज्ञान, सामुद्रिक शास्त्र, हस्तरेखा शास्त्र, अंक शास्त्र कहीं सा नहीं ज्योतिष से ही निकली हैं। क्योंकि कुंडली तो मनुष्य के जन्म लेते ही बन जाती है और जानकर लोग इस बात से इंकार नहीं करके शरीर के किस भाग में तिल होगा ये तक कुंडली देखकर बताया जा सकता है।

इसका एक खूबसूरत पहलू ये भी है जो ज्योतिष का अध्यन करने वाले या ज्योतिष में रुचि रखने वाले हर व्यक्ति को समझना चाहिए की विद्या अपनी जगह है लेकिन विद्यार्थी का योग्य होना भी जरूरी है, मैं अपने जीवन में ऐसे लोगों से मिला हूं जिन्होंने पिता का हाथ देखकर पुत्र के कान के पिछले भाग में पीछे तिल होगा ऐसा बताया था और ऐसे लोगों से भी जो आंख बंद करते थे और जीवन में घट रही घटनाओं के विषय में सटीक फलादेश कर देते थे।

इसके साथ साथ ऐसे लोग भी मौजूद हैं जिनके पास ज्योतिष की बकायदा डिग्री है तमाम तरह के पुरुस्कार भी हैं लेकिन उन्हें फलादेश का फ भी नहीं पता, जैसा की मैंने पहले भी कहा विद्या अपनी जगह है लेकिन विद्यार्थी का योग्य होना भी जरूरी है।

हमारा कर्ज उतारते हैं उपाय

फूलों के पौधों को पानी देते हुए एक दिन मैंने देखा मधुमक्खियों का एक झुंड जिसमें लगभग 15 से 20 मधुमक्खियां थी फूलों के आस पास मंडरा रही थीं, मुमकिन है वो फूलों के पौधों से शहद एकत्र कर रहीं हो। उस वक्त मुझे लगा जन्म से मृत्यु तक मनुष्य अनेकों लोगों से मिलता है, इस जीवन यात्रा में उस पर जाने अनजाने कई लोगों के कर्ज चढ़ जाते हैं उन्हीं कर्जों को उतारने की प्रक्रिया है उपाय।

कुछ छोटे मोटे उदाहरणों के जरिए इसे समझने की कोशिश करते हैं जैसे आप दूध खरीदते हैं दुकानदार को पैसें मिलते हैं गाय/भैंस को क्या मिला ? कई बार उन्हें भरपेट चारा और समय पर दवाई आदि भी नहीं मिल पाती है।

इसी तरह गली-मोहल्ले में कुछ कुत्ते रखवाली करते हैं अंजान लोगों को देखते ही भौंकने लगते हैं कुछ को तो गली-मोहल्ले में फटकने भी नहीं देते, क्या हमारी तरफ से उन कुत्तों को कभी प्रेम मिल पाता है या हम ये सोचकर अपना पल्ला झाड़ लेते हैं भौंकना तो इनका काम है।

मधुमक्खी के द्वारा बनाए शहद में भी उस शहद की कीमत बेचने वाले को मिल जाती है मधुमक्खियों के लिए हमनें क्या किया ?

हमनें आवारा पशुओं के प्रति सेवा भाव नहीं रखा, उनको चोट लगा देखकर "हाय राम! कैसे निर्दयी लोग हैं" बोलकर मुंह फेर लिया, कभी गौशाला जाकर उनकी स्थिति नहीं देखी दान नहीं दिया, हमारी सुरक्षा में तत्पर रहने वाले कुत्तों को रोटी का एक निवाला नहीं दिया, आसपास फूल लगाकर मुधुमक्खियों की मेहनत को आसान नहीं बनाया।

ऐसी स्थिति में आपको लगता है आप पर कुछ कर्ज चढ़ा होगा ? आप इस बात को भूल भी जाएं लेकिन अंतर्मन कभी नहीं भूलता उसे तो जन्म जन्मांतर की बातें याद रहती हैं।

अब इस लेख को थोड़ा सा ज्योतिष से जोड़ते हैं जैसा कि आप जानते ही होंगे फूलों के पौंधे लगाना उनका ख्याल रखना शुक्र ग्रह का उपाय है, शहद फूलों से बनता है शहद का स्वाद मीठा होता कुंडली में ज्यादातर मामलों में शुगर/

डायबिटीज/मधुमेह के लिए शुक्र ही जिम्मेदार होता है बात जहां से शुरू हुई थी वहीं उसे खत्म करते हैं "हमारा कर्ज उतारते हैं उपाय"।

इससे आगे के लेख पढ़ने के लिए आप यह किताब Shopizen App पर जाकर खरीद सकते हैं।

https://shopizen.app.link/7GCVI4QYEzb

कुछ केस स्टडीज

केस स्टडी- 1

एक मित्र से ज्योतिष सम्बन्धी बात हो रही थी। उनकी रुचि ज्योतिष से ज्यादा तंत्र- मंत्र में थी। थोड़ी बातचीत होने पर वह बोले कि तंत्र- मंत्र सही चीज है। मैं चीजों को महसूस कर लेता हूँ। मैंने उनसे कहा, ये वही लोग महसूस कर पाते हैं जिनका चंद्रमा राहु के साथ होता है या केतु के साथ, या फिर शनि के साथ, या इन तीनों से किसी तरह का सम्बन्ध (मुख्यतः राहु) होता है। मैंने कहा, मैं यकीन के साथ कह सकता हूँ कि आपकी कुंडली में ऐसा कोई योग बन रहा होगा। उन्होंने कहा- नहीं- नहीं, ऐसा तो कुछ नहीं है। मैंने कहा फिर भी चेक कीजिये। ....तो पहले उन्होंने जन्म कुंडली देखी। जन्म कुंडली में चंद्रमा के साथ ऐसा कोई सम्बन्ध सीधे- सीधे नहीं दिख रहा था, जिसके फलस्वरूप कहा जा सके कि उनकी रुचि तंत्र विद्या में हो और उन्हें आभास भी होते हों। फिर मैंने उनसे उनकी नवमांश कुंडली देखने को कहा और वहाँ उनके चंद्रमा को सीधे- सीधे राहु देख रहा था।

मैं यह नहीं बताऊँगा कि कौन सा ग्रह कहाँ पर था? क्योंकि यह बहुत ही निजी जानकारी हो जाएगी और मैं यह भी नहीं कहता कि कौन सी चीजें सही है और क्या गलत है? तंत्र विद्या गलत है या सही है? इस बहस में भी मुझे नहीं पड़ना। मैं बस अपनी बात रखना चाहता हूँ और चन्द्रमा पर राहु/ केतु/ शनि के प्रभाव बताना चाहता हूँ। ये दूसरे ग्रहों की स्थिति पर भी निर्भर करेगा कि हर किसी को ऐसे प्रभाव मिलें या ना मिलें।

केस स्टडी- 2

कुछ महीने पहले मैंने अपने एक करीबी की कुंडली देखी। मैंने उन्हें शनि से जुड़े उपाय बताये। हर बार की तरह मैंने सात्विक उपाय पहले बताया। मैंने कहा- “आपको हर दिन शाम के वक़्त शनि मंदिर जाकर सरसों के तेल का दिया जलाकर आना है।“

सामने से जवाब आया- "वक़्त ही कहाँ हो पाता है?"

मैंने कहा- “चलिए कोई बात नहीं। आप गरीब बच्चों को मुफ्त में पढ़ा भी सकते हैं।”

सामने से जवाब आया- "घर वाले इसकी इजाजत नहीं देंगे"

मैंने कहा- “नीलम तो बहुत महँगा है, आप नीली धारण कर लीजिए। वो भी लाभकारी हो सकती है, शायद आपको आपकी परेशानी से मुक्ति मिल जाये।“ इसका बहुत ही रोचक जवाब मुझे सुनने को मिला- "मैं ऐसे अंधविश्वासों को नहीं मानता।"

नोटः- समस्याओं का समाधान हर कोई चाहता है, पर उपाय कोई नहीं करना चाहता। फिर चाहे वो मुफ्त के ही क्यों न हों।

केस स्टडी- 3

एक कहावत मुझे बहुत अच्छी लगती है- 'कुछ नाम के रिश्ते होते हैं, कुछ रिश्तों के नाम नहीं होते।" दरअसल इसका जिक्र इसलिए भी जरूरी था, क्योंकि ये केस इसी कहावत के इर्द- गिर्द घूमता है।

एक कुंडली देखी। उस कुंडली को देखते ही ऐसा लगा कि उनका वैवाहिक जीवन अच्छा नहीं है। .....और यहाँ तक भी संभावना थी कि उनका तलाक हो सकता है। अमूमन ऐसे मामले जब भी सामने आते हैं या मुझे ऐसी किसी बुरी चीज का पता चलता है तो मैं सीधे- सीधे नहीं कहता। लेकिन घुमा-फिरा कर कन्फर्म जरूर करता हूँ, ताकि मेरी भी जानकारी बढ़ जाये। सामने वाले को तकलीफ न हो और भविष्य में ऐसा कोई मामला आये तो कम समय में उसे बेहतर उपाय बताया जा सके। कुंडली देखकर एक दो बातें बताने के बाद मैंने उनसे सवाल किया कि आपका वैवाहिक जीवन सही चल रहा है?

उन्होंने कहा, एकदम बढ़िया चल रहा है। मैंने एक बार फिर से सवाल किया- "क्या आप साथ में रहते हैं ?"

उन्होंने कहा- "हाँ, हम दोनों साथ में रहते हैं।"

मैं आगे बढ़ गया, फिर मैंने सोचा कि क्यों इस मामले को तूल देना और फिर मैंने इस तरह का कोई सवाल नहीं किया। लेकिन कुछ देर बाद मुझे पता चला कि पति- पत्नी दोनों साथ में रहते हैं, लेकिन उनकी माँ उनके साथ नहीं रहती। पत्नी अपनी माँ के घर रहती है और वह घरजमाई बनकर रहते थे। ....तो आप खुद सोचिये कि यह कैसा वैवाहिक जीवन की चल रहा होगा? मैं ये नहीं कहता कि घरजमाई बनना गलत है, न ही ये कहता हूँ कि लड़की का अपनी माँ के यहाँ रहना गलत है। लेकिन ये जरूर कहता हूँ कि किसी घटना के घटने की वजह अगर सकारात्मक नहीं है तो वो घटना गलत ही है। छोटे बच्चों को क्या दादा- दादी का प्यार मिलेगा? उन बच्चों की मनःस्थिति पर क्या प्रभाव पड़ेगा भविष्य के लिए ? समाज में बच्चों से कितने मुश्किल सवाल पूछे जायेंगे ?

ख़ैर, ये सब सवाल व बातें ज्योतिष से जुड़ी जरूर हैं, लेकिन "समाजशास्त्र" की बातें ज्यादा हैं। मैं इनमें भी उलझना नहीं चाहता कि क्या गलत है या क्या सही है? मेरी नजर में सब सही ही होता है, कुछ गलत नहीं होता।

आपका 9 मेरा 6 हो सकता है और मेरा 9 आपका 6 I बात ये है कि वैवाहिक समस्याओं के प्रमुख कारण क्या होते हैं या मैंने किस आधार पर ऐसा कहा? दरअसल सातवाँ घर जीवनसाथी का होता है और जब उसमें दो या दो से ज्यादा क्रूर ग्रह बैठे होते हैं और दूसरा घर जो कुटुम्ब स्थान होता है, वह भी क्रूर ग्रहों के प्रभाव में होता है तब वैवाहिक जीवन में कुछ समस्याएं हो सकती हैं ।

नोट:- निष्कर्ष इसके अलावा भी काफी और बातों पर निर्भर करेगाI ये भी सम्भव है कि उपरोक्त योग होने के बावजूद सब कुछ एकदम सही रहे और ये भी सम्भव है कि उपरोक्त योग न होने के बावजूद समस्याओं का सामना करना पड़े।

उसके लिए आपको गहनता से ज्योतिष का अध्ययन करना पड़ेगा और उसे समझना पड़ेगा।

केस स्टडी- 4 और 5

मुम्बई में मेरी कम्पनी और रूममेट्स में बहुत कम ही लोगों को पता था कि मैं हाथ देखता हूँ या कुंडली देखता हूँ। मैंने कभी बताया ही नहीं। कुछ दोस्तों को बातों- बातों में पता लग गया था। ज्योतिष और पराविद्याओं का एक नियम है। उस नियम के अनुसार जहाँ आपको लगता है कि लोग इस पर विश्वास नहीं करेंगे, वहाँ आपको मौन रहना चाहिए और जब तक कोई सलाह न माँगे या बहुत जरूरी न हो, तब तक आपको कुछ कहना भी नहीं चाहिए। मैं हमेशा इन नियमों और इस जैसे कई नियमों का पालन करने की कोशिश करता हूँ।

एक बार कंपनी के कुछ दोस्तों को पता चल गया है कि मैं हाथ देखता हूँ तो उन्होंने अपना अपना हाथ दिखाया। मैंने उन्हें दो तीन चीजें बतायी। फिर उसके बाद एक रोचक हाथ देखने को मिला। उसकी खासियत यह थी कि उसको देखकर लग रहा था कि उस जातक के पास काफी सारी जमीन है। इसी पल से इस फलादेश की रोचकता शुरू होती है। क्योंकि अगर आपके पास मुंबई में बहुत सारी जमीन होती तो यह संभव था कि वह जॉब नहीं कर रहा होता। या तो वो बहुत बड़ा बिजनेसमैन होता या बिल्डर वगैरह। लेकिन उस व्यक्ति के हाथ में काफी सारी जमीन मुझे दिख रही थी, तो मैंने उसका हाथ गौर से देखा और पूछा- "क्या तुम्हारी गाँव में बहुत सारी जमीन है"?

वो एकदम चौंक गया। उसने पूछा- तुम्हें कैसे पता? मैंने कहा- तुम्हारे हाथ में दिख रहा है।

दूसरा केस भी रोचक था और शायद थोड़ा जटिल भी। कंपनी में काम करने वाला एक दोस्त कुछ वक्त पहले घर से लौटा था और उसने हमें पेड़े खिलाए थे। उसने बताया था कि घर के बने पेड़े हैं, उसकी माँ ने भेजे हैं। फिर उसके बाद यह आयी गयी बात हो गयी। उसके कुछ समय बाद जब इसी तरह ज्योतिष की बातचीत चली और कुछ लोगों को पता चला कि मैं थोड़ा- बहुत हाथ देखता हूँ, तो उस व्यक्ति ने भी अपना हाथ दिखाया। उसके हाथ में माता की रेखा ही नहीं थी। मतलब उसके हाथ को देखकर साफ पता चल रहा था कि उसके हाथ में माँ का सुख नहीं है।

अगर मैंने उसकी मम्मी के दिए हुए पेड़ नहीं खाए होते तो मैं जरूर घुमा

फिराकर ही सही माता के स्वास्थ्य या माता जी हैं या नहीं? ये जरूर पूछता। लेकिन मुझे पेड़े वाली बात याद आ गई और मैंने उससे कहा- "मुझे लगता है, आप बहुत कम उम्र में अपने घर से निकल गये होगे। ...या तो पढ़ाई के सिलसिले में या किसी और सिलसिले में और आप कभी भी अपनी माता के निकट नहीं रह पाये होंगे? वो जातक असल में आठवीं के आस- पास घर से निकल गया था और अभी तक घर से बाहर ही था। ...तो देखा जाये तो दूसरी तरह से यह बात सही थी। उसे माता का सुख नहीं मिल पाया तो क्या होना? क्या नहीं होना?

इसीलिए मैं हमेशा कहता हूँ कि ज्योतिष की यात्रा में भगवान की कृपा के साथ- साथ आपको देश, काल, परिस्थिति का भी अच्छा ज्ञान होना चाहिये। इन दोनों के बगैर आपकी ज्योतिष धरी की धरी रह जायेगी।

केस स्टडी- 6

ये एक ऐसा फलादेश रहा, जो था तो बुरा, लेकिन मेरे लिए और दूसरे लोगों के लिए किसी चमत्कार से कम नहीं था और दोबारा इतना सटीक फलादेश शायद हो भी नहीं पाया।

मैं अपने एक भाई जैसे मित्र के साथ अपने किसी जानने वाले के घर गया था। उन्हें पता था कि मैं कुंडली देखता हूँ। उन्होंने अपनी बेटी की कुंडली मुझे दिखाई और मुझसे कहा कि इसकी शादी नहीं हो रही है। बात बनते- बनते टूट जा रही है। इसकी शादी कब तक होगी?

उसी दौरान मैंने कुंडली में कोई भी चीज कब घटित होगी? इसका मोटा-मोटा अनुमान लगाना सीखा था और मैं जिस व्यक्ति के साथ गया था, उसे ज्योतिष में बिल्कुल भी विश्वास नहीं था। उसे लगता था कि यह सब फालतू की चीजें हैं। मैं बैठा और उन्होंने कुंडली मेरी तरफ बढ़ा दी। मैंने वह कुंडली देखी और जिससे हम थोड़ा- बहुत घटना कब घटित होगी? उसके बारे में बता सकते थे वाली विधि के सहारे बिना महादशा देखे, बिना अंतर्दशा देखे, भगवान का नाम लेकर कहा कि यह शादी फिलहाल तो नहीं होगी। लगभग डेढ़ साल बाद होगी और घर से बहुत दूर होगी। उसके बाद मैं वहाँ से चला गया।

अगले दो या तीन हफ्ते के बाद जो व्यक्ति मेरे बगल में बैठा था, उसका मुझे फोन आया। उसने मुझसे कहा- "तेरे लिए एक अच्छी खबर है और एक बुरी खबर है।... पहले कौन सी सुनेगा?" मैंने कहा- "भाई कोई भी खबर अच्छी नहीं थी होती और कोई भी ख़बर बुरी नहीं होती। जो मर्जी बता दे।" उसने कहा कि बुरी खबर यह है कि तूने कहा था कि उस जातक (लड़की) की शादी डेढ़ साल बाद होगी। उसकी शादी तय हो गई है, दो महीने बाद उसकी शादी है। ...तो मैंने कहा बुरा क्या है? ये तो अच्छी खबर है। भविष्यवाणी गलत होकर किसी की जल्दी शादी होना तो अच्छी खबर ही है।

इसके बाद उसने कहा- “अच्छी खबर यह है कि उसकी शादी घर से बहुत दूर हो रही है। उसने किसी दूसरे स्टेट के एक शहर का नाम बताया। मैंने कहा– “अच्छा, यह भी सही है।” मुझे आज भी याद है, मैंने बस उससे इतना कहा - "अभी हुई तो नहीं है न ?"

.....और आप यकीन नहीं करेंगे। शादी की सारी तैयारियाँ हो चुकी थी। जितना कुछ होता है और न जाने क्या चीजें घटित हुई कि वह शादी उस जगह नहीं हो पायी और फिर डेढ़ साल बाद, घर से दूर, दूसरे शहर में, किसी दूसरे प्रदेश में हुई।

बहुत से केसों में मैंने देखा है कि बारहवें घर में शनि हो, तो शादी घर से काफी दूर होती है। इसका लॉजिकल कारण ये हो सकता है कि तीसरी दृष्टि से शनि दूसरे घर को देखता है। दूसरा घर पैतृक आवास का होता है और शनि/ राहु/ केतु वैराग्य के घोतक होते हैं।

कुंडली देखकर समय का पता कैसे करें? इसका एक तरीका तो दशा/ महादशा/ अंतर्दशा वाला है। दूसरा तरीका जो मैंने कहीं पढ़ा था और ऊपर वाले केस में अप्लाई किया, वो था कि दूसरे घर को पहला साल मानिए और वहाँ से दाई तरफ को बढ़ते रहिये। जैसे पहले को दूसरा साल, बारहवें को तीसरा साल, ग्याहरवें को चौथा साल, आदि।

केस स्टडी- 7

आज एक व्यक्ति ने फेसबुक पर मुझसे व्हाट्सएप नंबर मांगा और उसके बाद मुझे मैसेज भेजकर मेरी थोड़ी तारीफ की। जैसे- आप बहुत अच्छे आदमी हैं, आप बहुत अच्छा काम कर रहे हैं, आप समाज सुधार रहे हैं, आदि। मुझे इन बातों से अब राई के दाने जितना फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि मुझे मालूम है कि मैं क्या कर रहा हूँ और मैं कैसा व्यक्ति हूँ। मुझे किसी के प्रमाणपत्र की जरूरत नहीं ।

उसके बाद उस व्यक्ति ने अपने हाथ की फोटो भेजी। तो मैंने उससे कहा कि भैया मैं इस तरह हाथ नहीं देखता। यह तस्वीर भी अधूरी है और वैसे भी मैं रोज नहीं देखता। मेरे कुछ दिन निर्धारित हैं और मैं जितना हो सके नियम का पालन करता हूँ। अगर आपको एक सवाल ही पूछना है तो मैं निःशुल्क देख लूँगा और अगर एक सवाल से ज्यादा है तो आपको शुल्क देना पड़ेगा।

उसके बाद उस व्यक्ति ने कहा- मुझे सिर्फ एक रेखा के बारे में जानना है। मैंने देखा कि जिस रेखा के बारे में उसे जानना था, वह रेखा उसके हाथ में हृदय रेखा को छूती हुई शनि पर्वत की तरफ जा रही थी। उस व्यक्ति को लग रहा था कि वो हृदय रेखा को काट रही है, जबकि ऐसा नहीं था। उसने सिर्फ उसका फलादेश जानना चाहा तो मैंने कहा कि जिसके हाथ में शनि पर्वत की तरफ यह रेखा जाती है, वह आदमी सेल्फमेड होता है। उसने कहा कि सेल्फमेड होना कैसा है? अच्छा या बुरा ?

मैंने कहा- "सेल्फमेड होना कभी बुरा नहीं होता।" फिर उस व्यक्ति ने सरकारी नौकरी कब लगेगी? वाला सवाल किया। होने को उसके दो सवाल हो चुके थे और आज के दिन मैं देखता भी नहीं था, फिर भी मैंने उसे सरकारी नौकरी वाला आर्टिकल भेज दिया। उसके बाद उसने सारे मैसेज डिलीट कर दिए।

मैंने पूछा कि आपने मैसेज डिलीट क्यों किये ? तो उसका जवाब आया- "मैंने सोचा आप के फोन से लोड कम कर लूँ, इसलिए ज्ञान की बातें छोड़कर बाकी के मैसेज डिलीट कर दिए।" मैंने कहा मुझे लगता है कि आपकी कुंडली में चंद्रमा- राहु और शनि के बीच आपस में कुछ संबंध है।

उसने कहा- नहीं ऐसा नहीं है। मैंने कहा कुंडली भेजिए। ...तो उसकी जन्मकुंडली में राहु 9वीं दृष्टि से चंद्रमा को देख रहा था और नवमांश कुंडली में

नीच राशि में बैठा शनि सीधे चन्द्रमा को देख रहा था और चंद्रमा सूर्य के साथ था।

निष्कर्ष :- राहु शातिर/ चालाक/ डिप्लोमेटिक/ कंजूस होता है, जो उस व्यक्ति की बातों और दो सवाल दिखाने की चालाकी से ही स्पष्ट था। शनि हमेशा गुप्त/ अकेला रहना चाहता है, जिस वजह से उस जातक ने मैसेज डिलीट किये। ये दोनों ग्रह व्यवहार पर तभी पूरी तरह से असर दिखायेंगे, जब ये चन्द्रमा यानी मन को देख रहे होंगे। इसलिए ये तीनों ग्रह जुड़े होंगे, ऐसा मुझे आभास हुआ और ईश्वरी कृपा हुई कि बात सही भी हो गयी। इस तरह के मीठा बोलने वाले, जरूरत से ज्यादा तारीफ करने वाले लोगों से मैं दूर रहना चाहता हूँ। इन लोगों के चक्कर में दूसरे लोगों का नुकसान होता है। इस सबको भूल जायें तो उच्च का गुरु होने के कारण उस व्यक्ति ने मुझे ये जानकारी साझा करने की इजाजत भी दी, जिसके लिए मैं उस व्यक्ति का आभारी रहूँगा।

केस स्टडी- 8

कई मेरे जानने वाले मुझसे अक्सर कहते हैं- "तुमने कभी बताया नहीं कि तुम कुंडली देखते हो?" मुझे इसमें बताने जैसा कुछ लगता ही नहीं। अभी भी मेरे मोहल्ले के तीन- चार लोगों को ही पता है कि मैं कुंडली देखता हूँ, जबकि मोहल्ले में 12- 13 परिवार होंगे लगभग। ये किस्सा इसी बताने, न बताने से जुड़ा है।

ग्रेजुएशन के वक़्त की बात है। एक मित्र किसी बड़े बाबा टाइप ज्योतिषी से मिलकर आया। बाबा जी ने उसे एक पन्ना लगभग दोगुने रेट लगाकर पहले ही पहना दिया था और फीस भी ठीक- ठाक ले ली थी, जिसे फीस न कहकर दक्षिणा कहा जाता है।

मेरा दोस्त बाबा जी की महिमा का गुणगान कर रहा था। मैं और मेरा तीसरा दोस्त आनन्द ले रहे थे। बातों- बातों में उसने बताया- "बाबा जी सिर्फ भूत, भविष्य, वर्तमान नहीं बताते। बाबा जी पिछले जन्म का भी बता देते हैं। मेरे लिए ये सुनना नई बात नहीं थी। लेकिन तीसरा दोस्त चौंक गया और बोला "गजब"। पहला दोस्त बोला- "हाँ! बाबा जी ने बताया कि मैं पिछले जन्म में एक राजा का सबसे प्रिय और वफादार घोड़ा था"। तीसरा दोस्त मंत्रमुग्ध सा हो गया बाबा जी की महिमा सुनकर।

थोड़ी बातचीत के बाद पहला दोस्त चला गया और तीसरा दोस्त जो ये बात जानता था कि मुझे थोड़ी बहुत ज्योतिष आती है, मुझसे बोला "क्या ये सच में पिछले जन्म में घोड़ा होगा"?

मैंने मन ही मन कहा- "पिछले जन्म का तो नहीं पता, इस जन्म में गधा जरूर है"।

नोट :- तीन चार बातें कहना चाहूँगा। पहली, ये 98% सही घटना है थोड़ा सा हास्य का पुट दिया है मैंने। दूसरी, कभी खुद को ज्ञानी दिखाने के चक्कर में किसी की आस्था का जाने- अनजाने मजाक ना उड़ायें। तीसरी, वर्तमान में रहिये। भविष्य/ भूत/ पिछले जन्म के बारे में सोचकर आप पल ही गवाएँगे और कुछ हासिल नहीं होगा। चौथी, बाबा जी सही भी हो सकते हैं, पाँचवे घर से पूर्वजन्म सम्बन्धी फलादेश किये जाते हैं।

केस स्टडी- 9

एक लड़का मुझे ह्वाट्सएप में बोल रहा था कि आप कुंडली देखना छोड़ दो। वजह? ...वजह कोई खास नहीं थी। कुछ दिन पहले उसका ब्रेकअप हुआ था। वह अभी भी उससे बाहर नहीं निकल पाया था और उसका सवाल था- "क्या प्रेमिका उसकी जिंदगी में वापस लौटेगी?" उसने सिर्फ जन्मकुंडली और चलित कुंडली भेजी थी, जिसे देखकर मैंने कहा था- "जरूर लौटेगी।"

मैंने उसकी बर्थ डिटेल माँगी। नवमांश देखा तो पाया कि इस प्रेम की वजह से उसे बहुत नुकसान हो सकता है। लगभग हर तरह से मैंने पूछा- "क्या इंटरकास्ट है प्रेम सम्बन्ध?" उसने कहा- "हाँ...।"

मैंने उसे छोटे भाई की तरह सलाह दी- "भूल जाओ, आगे बढ़ जाओ।" वो नहीं माना, बोला- आपने तो कहा था कि वापस लौटेगी।

मैंने कहा- "हाँ, वापस लौटेगी। मगर बेहतर यही है कि दोबारा इसमें न फँसो। थोड़ी बहस या दीवानगी वाली बातों के बाद वो लड़की की बर्थ डिटेल भेजकर बोला, इसकी कुंडली भी देख लो। मैंने कहा- "नहीं, इसका कोई फायदा नहीं।" उसने हद से ज्यादा जिद की तो मुझे वह कुंडली देखनी पड़ी। उसमें बहुत कुछ ऐसा था, जो उस जातक को भी नहीं बताया जा सकता था और वो लड़का चाहता था कि वो बातें मैं उसे बताऊँ।

मैंने उसे साफ- साफ शब्दों में कहा- "मैं दूसरों की कुंडली दूसरों को नहीं बताता और मेरे कुछ नियम हैं, जो सबके लिए बराबर हैं।" उसके बाद बात आई गयी हो गयी। सुबह उस लड़के का दोबारा मैसेज आता है- "आपने मुझे और ज्यादा परेशान कर दिया भइया। एक बात बोलूँ, बुरा मत मानना। आप कुंडली देखना छोड़ दो। "

मैंने भी पलटकर बोल दिया- "दूसरों की कुंडली दिखाकर उनके बारे में मत पूछो या उससे बोलो, मुझे फोन मैसेज करके बोल दे कि बता दो, मैं बता दूँगा ।" वो लड़का फिर से थोड़ी बहस या दीवानगी वाली बातें करने लगा। उसके बाद वो मुझे बोला- "आप ये कह रहे हो कि उसका कैरेक्टर सही नहीं है?"

मैंने कहा, मैं बस ये कह रहा हूँ "दूसरों की कुंडली दिखाकर उनके बारे में मत पूछो, बाकी मेरा वक़्त बर्बाद मत करो।"

वो तो अच्छा है, मैं कभी किसी से फीस के लिए नहीं कहता। एक से ज्यादा सवाल होने पर बोलता हूँ- “जो श्रद्धा हो, वो भेज देना। वरना इस तरह के लोग तो जिस लड़की से प्रेम करते हैं उसके लिए "आप ये कह रहे हो कि उसका कैरेक्टर सही नहीं है?" ऐसा सोच सकते हैं तो ज्योतिषी को किस हद तक बदनाम करेंगे? ये सोच से भी परे हैं।

हर 10- 15 कुंडली देखने के बाद, ऐसा व्यक्ति जरूर आता ही है जो खुद कम परेशान होता है किन्तु दूसरे को ज्यादा परेशान कर देता है। इस पूरे केस की सबसे अच्छी बात ये हुई कि मैंने उससे शुल्क दोगे या निःशुल्क दिखाओगे? पूछा जरूर, मगर छोटा भाई समझकर एक रुपया भी उससे लिया नहीं। ....और जब उसने सामने से भी बोला, तब भी मैंने दो बार मना कर दिया, वरना मेरे भी स्क्रीनशॉर्ट लग सकते थे कहीं। ख़ैर, जीवन में एक बात बड़ी गजब होती है सबके साथ। कभी- कभी हमें लगता है कि हम किसी की मदद कर रहे हैं और वही व्यक्ति हमारा फायदा उठाने लगता है।

केस स्टडी- 10

बहुत वर्ष पहले, फेसबुक के एक ग्रुप में त्रिकालदर्शी ज्योतिषी से मुलाकात हुई। पोस्ट में कमेंट के दौरान पता चला कि उनके पास अलग- अलग क्षेत्र से जुड़े हुए बहुत लोगों की कुंडली हैं। ....तो मैंने इनबॉक्स में जाकर उनसे गुजारिश किया कि अगर आप चाहे तो कुछ कुंडलियां मेरे साथ भी शेयर कर सकते हैं। मैं भी आपके साथ वो कुंडलियाँ शेयर कर दूँगा, जो मेरे पास हैं। उन्होंने मेरे प्रस्ताव को सुनते ही ठुकरा दिया।

इसके बाद कमेंटबॉक्स पर बातचीत होने लगी, किसी मुद्दे को लेकर। वो एक भोले मानस से भिड़ पड़े। मैं और कुछ अन्य लोग उस व्यक्ति का पक्ष लेने लगे। खुद को घिरता देख वो त्रिकालदर्शी ज्योतिषी बोले- "तुम वही हो न, जो मुझे कुंडलियाँ माँग रहे थे? मेरे मना कर देने पर अब तुम मुझसे बदला ले रहे हो?"

मैंने कहा- "ये आपकी गलतफहमी है। मैंने आपसे निवेदन किया था और बदले में अपने पास की कुंडलियाँ शेयर करूँगा, ये भी कहा था।" ....और फिर मैं उन्हें कमेंटबॉक्स में जवाब देने में व्यस्त हो गया।

मुझे लगता है सूर्य, बुध की तीसरे घर में युति होने के कारण मैं थोड़ा हाजिरजवाब भी हूँ, ...तो मैं उन पर भारी पड़ने लगा। एक वक़्त के बाद उनका सब्र जवाब दे गया और वो बोले- "बच्चे मेरे छठे घर (शत्रु घर) में राहु बैठा है, तुम मुझसे नहीं जीत पाओगे।" मैंने उनकी इस बात को नजर-अंदाज किया और उनकी दूसरी बातों का जवाब देता रहा। कुछ वक़्त बाद वो झुंझलाकर ऑफलाइन हो गए। मैंने उन्हें बताया नहीं कि मेरे छठे घर (शत्रु भाव) में मंगल बैठे हैं, जो जातक को अजातशत्रु बनाते हैं। मंगल के अलावा सूर्य भी छठे घर के लिए अच्छे माने जाते हैं। अब सवाल आता है कि मैंने उन्हें ये बात क्यों नहीं बताई, क्योंकि राहु शनि के साथ दूसरे भाव में बैठकर छठे भाव को देख रहे हैं। ...यानी शनि ने राहु को नियंत्रण में रखा हुआ है। मंगल जो तर्कशक्ति का ग्रह है, उसे राहु की दृष्टि की वजह से गोपनीयता का गुण भी मिल गया।

अगर पुनः इसको समझें तो राहु जो आठवे घर को देख रहा है, जो पराविद्याओं का घर भी होता है, उसकी वजह से मुझे लगा कि इनबॉक्स में जाकर उनसे बात करनी चाहिये। शनि के साथ राहु होने की वजह से मैंने उनसे मर्यादित

शब्दों में बातचीत की। छठे मंगल की वजह से वो मुझसे तर्क- कुतर्क में नहीं जीत पाये और अंत में कमजोर राहु की वजह से उन्होंने अपना राज जल्दी बता दिया। इधर मजबूत राहु की वजह से मैंने उन्हें ये बात पता ही नहीं लगने दी। वैसे नवमांश कुंडली में भी मेरा राहु जो वर्गोत्तम है, वह बुध के साथ बैठा है और बुध भी वाणी और ज्योतिष का ही कारक होता है।

केस स्टडी- 11

कुछ कुछ दिन पहले एक व्यक्ति का मुझे व्हाट्सएप पर मैसेज आया। वह अपनी कुंडली दिखाना चाहते थे। मैंने उन्हें कहा कि आप दोनों हाथों की तस्वीर, अपने हस्ताक्षर और बर्थ डिटेल मुझे भेज दीजिये, अपने सवालों के साथ। उनके हस्ताक्षर जब मैंने देखे तो उनके हस्ताक्षर आर्टिस्टिक हस्ताक्षर थे। जैसे किसी कलाकार के होते हैं, जैसे किसी बुद्धिजीवी के होते हैं, जैसे किसी कथावाचक या समाज को ज्ञान देने वाले व्यक्ति के होते हैं। उनके हस्ताक्षर देखते ही मैंने उनसे कहा कि आपके हस्ताक्षर दार्शनिकों/ बुद्धिजीवियों की तरह के हैं। क्या आप इस क्षेत्र में हैं? उन्होंने कहा- "नहीं मैं तो एक प्रशासनिक अधिकारी हूँ।"

उनकी बात बहुत चौंकाने वाली थी। उन्होंने कहा- "वैसे भी हस्ताक्षर तो समय- समय पर बदलते रहते हैं।" मैंने कहा आपकी बात ठीक है कि हस्ताक्षर बदलते रहते हैं, लेकिन शब्दों का फ्लो, रेखाओं पर दबाव उतना नहीं बदलता। ख़ैर, फिर मैंने उनकी कुंडली और हाथों को देखना बेहतर समझा। कुंडली देखने के बाद मैंने पाया कि उनके पास धार्मिक किताबें अच्छी खासी संख्या में होनी चाहिए, (जब भी कभी गुरु 12वें भाव, जिसे खर्चे का या व्यय स्थान भी कहते हैं, के साथ सम्बन्ध बनाते हैं तो व्यक्ति धार्मिक चीजों पर पैसे ज्यादा खर्च करता है)। जब मैंने इस बारे में तो सवाल किया तो उन्होंने कहा कि उनके पास काफी संख्या में धार्मिक किताबें हैं और वह अपने ऑफिस में आने वाले व्यक्तियों को भी गीता प्रेस की किताबें भेंट करते हैं। फिर उसके बाद मैंने कहा- "यह तो बहुत अच्छा काम है।"

कुंडली का काफी देर निरीक्षण करने के बाद मैंने उन्हें कहा कि आपकी कुंडली में ऐसी कोई समस्या तो नहीं है, लेकिन वैवाहिक जीवन में कुछ समस्याएं आ सकती हैं। उन्होंने कहा, ऐसी तो कोई बात नहीं है। मैंने कहा, ये तो और अच्छी बात है। अगर सम्भव हो तो आप अपनी धर्मपत्नी की कुंडली भी भेजियेगा। शोध के दृष्टिकोण से ये बहुत जरूरी होगी मेरे लिए, उपाय के तौर पर भी। मैंने उनसे कहा कि आप मंगल के उपाय कर सकते हैं, तो उन्होंने बताया कि पिछले लगभग एक साल से वह कर रहे हैं, दिन में दो बार। मैंने उनसे कहा, शायद हनुमान जी ने आपको मेरी परीक्षा देने के लिए भेजा है!

उन्होंने कहा- "नहीं- नहीं, मैं आपकी परीक्षा लेने नहीं आया। मैं तो बस

अपने बारे में जानना आया हूँ ।" मैंने कहा कि आप मेरी बात समझे नहीं। मैंने यह नहीं कहा कि आप मेरी परीक्षा लेने आये हैं। मैंने यह कहा कि भगवान ने आपको मेरी परीक्षा लेने ही भेजा है। प्लांट एस्ट्रोलॉजी से अंजान होते हुए भी उन्होंने आवास पर काफी वृक्ष लगाए हुए थे। ऐसा उन्होंने मुझे बताया। मेरी इस बात पर यकीन कीजिये कि उनकी दिनचर्या, उनका जीवन, प्रशासनिक अधिकारी होते हुए भी अध्यात्म के क्षेत्र में इतना असाधारण था, जितना आस- पास आसानी से देखने को नहीं मिलता।

कुछ देर बात होने पर उन्होंने ये भी बताया कि कुछ ज्योतिषियों ने उन्हें दो विवाह के योग बताये थे। मुझे हँसी आ गयी। मैं बोला- "मैंने आपको कहा ही था कि वैवाहिक जीवन में तालमेल की कमी रह सकती है। शायद यही ज्योतिषियों ने भी देखा होगा, बाकी आप चिंता मत कीजिये। दो विवाह जैसे कोई योग नहीं हैं मेरे हिसाब से।"

ज्योतिष के इतर उन्होंने कहा- "एकाधिक विवाह को खराब ही मान लेना भी एक दृष्टिकोण ही तो है।"

मैंने कहा- "देखिये खराब नहीं है, लेकिन जिस तरह का सामाजिक ताना-बाना हमारे देश का है, उस हिसाब से एक पक्ष को दिक्कतें आ ही जाती हैं ।

विदेशों में न्यूक्लियर फैमली होती हैं तो शायद इतना फर्क न ही पड़ता हो।"

उन्होंने कहा "आप सही कह रहे हैं, I am just joking.(मैं सिर्फ मज़ाक कर रहा था।)"

इस लम्बी बातचीत के बाद, लगभग अंत में उन्होंने मुझे बताया कि 28-29 वर्ष की आयु में उन्होंने सोचा था कि वो संन्यास ले लेंगे। लेकिन फिर वह किन्ही कारणों से ले नहीं पाये, क्योंकि उन्हें पद और सम्मान ज्यादा आकर्षित नहीं करते।

तब मैंने फिर से हस्ताक्षर वाली बात दोहराई। मैंने कहा देखिए, मैंने आपको सबसे पहले यही बताया था।

इस तरह लगभग सभी बातें थोड़ी बहुत ठीक ही रहीं। शायद नये व्यक्ति के सामने एकदम खुलना उनके स्वभाव में नहीं था। इसका कारण भी उनके सातवें भाव में लग्न को देखता राहु का होना हो सकता है। ....क्योंकि हम सब जानते हैं कि राहु सामने से अपने बारे में नहीं बताता या उतना ही बताता है जितना जरूरत हो। ....लेकिन इसमें कोई दो राय नहीं कि प्रशासनिक अधिकारी के वेश में होते हुए

भी वो दार्शनिक सोच वाले ही व्यक्ति थे। ऐसे व्यक्तियों से मिल पाना, बात कर पाना, बिना दैवीय कृपा के नहीं हो सकता।

केस स्टडी 12

"सब कुछ छोड़ने का मतलब सन्यास नहीं है, हर एक चीज से मुक्त होने का नाम सन्यास है।" मुझे लगता है ये बात पहले ही कहनी जरूरी थी क्योंकि बात शुरू ही यहीं से हुई थी ।

एक फेसबुक फ्रेंड का मैसेज आता है, मैसेज के साथ एक कुंडली आती है और कुंडली के साथ एक सवाल- "क्या इस कुंडली में सन्यास योग है?"

जितना मैंने अनुभव किया है गुरु शनि की युति/ दृष्टि की वजह से सन्यास का भाव जातक के मन में उत्पन्न होता है क्योंकि गुरु ज्ञान/ धर्म है। शनि कर्म, कई बार महादशा/ अंतरदशा/ प्रतिअन्तर दशा आने पर ऐसे क्षणिक भाव भी जातक के मन में आते हैं, लेकिन वर्तमान समय में देखे तो जो सन्यासी है वही सबसे ज्यादा माया से घिरा हुआ है। कभी माया का रूप धन- दौलत है, कभी मान- सम्मान, तो कभी मोक्ष।

ख़ैर उस कुंडली में ऐसे कोई योग नहीं थे जिन्हें देखकर कहा जाये कि जातक सन्यास लेगा, लेकिन उस कुंडली में वैवाहिक जीवन में अस्थिरता के प्रबल योग थे, साथ ही पारिवारिक जीवन में तनावपूर्ण होगा ऐसी संभावनाएं भी थी। चन्द्रमा शनि का विष योग लग्न कुंडली में था और नवमांश कुंडली में केमद्रुम योग बना रहा था। ये सब देखने के बाद मैंने कहा, ये व्यक्ति इसलिए सन्यास के लिए कह रहा होगा क्योंकि अपने जीवन से ये बहुत परेशान है।

मेरी मित्र ने कहा- "इनकी पत्नी बहुत खूबसूरत है।" मैंने कहा तो इसका ये मतलब थोड़ी न होता है कि वैवाहिक जीवन अच्छा ही होगा। उसके कुछ देर बाद मेरी मित्र बोली- ये बहुत समृद्ध परिवार से हैं, कम उम्र में बहुत अच्छी पोस्ट पर हैं।

हम लोगों के साथ समस्या ही ये है कि हम लोग गहराई में नहीं उतरना चाहते और खूबसूरत पति/ पत्नी, अच्छी नौकरी, समृद्ध परिवार, बड़ी गाड़ी, महँगे घर को खुशी से जोड़ लेते हैं और यकीन मानिए कई बार एकदम इतना उलट होता है। यही सब चीजें व्यक्ति के जीवन में तनाव का कारण बनती हैं।

कुछ देर बार मेरी मित्र ने बताया कि इनके विवाह को डेढ़ दशक से ज्यादा समय हो गया और इनकी संतान नहीं है, ये सुनते ही आधी से ज्यादा तस्वीर मेरे दिमाग में क्लियर हो गयी। अगर इसकी कड़ी जोड़े तो एक समृद्ध परिवार जो

चाहता होगा कि उन्हें उनका/ उनकी वारिस मिले, एक खूबसूरत पढ़ी लिखी महिला जो शायद चाहती होगी पहले उसका खुद का करियर बने, कम से इतना कि पति के बराबर आ सके, मुझे लगता है ये सब कारण हो सकते हैं जिसकी वजह से परेशान होकर जातक के दिमाग में सन्यास का ख्याल आया होगा।

अंत में, मैं फिर से अपनी वही बात दोहरूँगा ""सब कुछ छोड़ने का मतलब सन्यास नहीं है, हर एक चीज से मुक्त होने का नाम सन्यास है।"

केस स्टडी 13

हम में से ज्यादातर लोग उस मानसिक स्थिति तक पहुँच चुके हैं कि हम किसी बीमारी को खान-पान में परहेज करके ठीक करने के बजाय इंजेक्शन लगवाकर ठीक करवाना पसन्द करते हैं। उसका कारण ये है कि भले ही उसमें दर्द होता हो, पैसे थोड़े ज्यादा लगते हो, साइड-इफैक्ट की संभावना रहती हो, लेकिन इंजेक्शन लगवाने में मेहनत नहीं करनी पड़ती और शरीर को भी दो दिन तक लगता है कि इंजेक्शन लगवाया है।

कुछ ऐसा ही हफ्ते भर पहले हुआ। एक जातक ने अपनी कुंडली दिखाई। उस कुंडली में शनि चन्द्र की युति थी, राहु पंचम दृष्टि से दोनों को देख रहे थे।

चन्द्रमा को कमजोर अवस्था में देखकर मैंने जातक को प्रतिदिन शिव मंदिर जाने का उपाय बताया, साथ ही सोमवार या पूर्णमासी के व्रत करने को कहा- जातक ने पूछा और कुछ ? मैंने कहा ये उपाय काफी है, कुछ दिन करके देखो।

जातक ने कहा- कुछ पहनना है तो बताइये मैं पहन लूँगा। मैंने कहा- मुझे ऐसी कोई जरूरत नहीं लगती ये उपाय अपने आप में बहुत प्रभावी हैं। लेकिन जातक इंजेक्शन वाले उपाय सुनना चाहता था फिर मैंने उससे कहा।

भाई कहने को मैं आपसे ये भी कह सकता हूँ "आपकी कुंडली में चन्द्रमा जो मन का कारक होता है वो अपने शत्रु शनि के साथ बैठा है, जहाँ दोनों ग्रह परस्पर मिलकर विष योग का निर्माण कर रहे हैं, जिसकी वजह से जातक नकारात्मक विचारों से घिरा रहता है। साथ ही राहु जो चन्द्रमा के लिए ग्रहण है वो अपनी पाँचवी दृष्टि से भाग्य भाव में बैठे चन्द्रमा और शनि को दूषित कर रहा है जिसकी वजह से भाग्य भी उतना साथ नहीं दे रहा जितना देना चाहिये। इसलिए जातक को चाहिए कि वो माह में एक बार उज्जैन के महाकालेश्वर मंदिर जाकर रुद्राभिषेक करे इससे उसे असीम मानसिक शांति प्राप्त होगी तथा दैवीय अनुभव प्राप्त होंगे।"

वो व्यक्ति एकदम से बोला- "भइया यही उपाय मेरे एक रिश्तेदार ने भी बताये जो बहुत प्रसिद्ध ज्योतिषी हैं। उन्होंने मुझे उज्जैन जाने, वहाँ एक घण्टा ध्यान करने तथा वहाँ सफाई करने को भी बोला और मुझसे ग्यारह हजार रुपये भी लिए

ताकि वो मेरे लिए ग्रह शांति पाठ भी कर सकें।"

फिर मैंने जातक को कहा- "भाई सच्चे मन से पास के शिव मंदिर जाओ या उज्जैन जाओ। मुझे तो एक ही बात लगती है।"

केस स्टडी 14

ज्योतिष इसलिए आकर्षित करता है कि जो घटनाएं घट चुकी हैं और जातक को देखकर लग रहा है कि उसके साथ नहीं घटी होंगी, लेकिन पूछने पर पता चलता है कि किसी न किसी रूप में वो घटना उसके संग घटी हैं।

एक जातक की कुंडली देख रहा था। जातक पुलिस में था और उम्र भी कम ही थी। कुंडली को देखकर लगा कि जातक को पेट सम्बन्धी और बैक पेन से सम्बन्धित समस्या हो सकती हैं, लेकिन उम्र कम थी और वह पुलिस में था जहाँ ज्यादातर व्यक्ति फिट रहता है, कम से कम शुरुआती साल में। फिर भी मैंने पूछ ही लिया तो जातक ने बताया कि दोनों समस्याएं हैं। पेट की समस्या बचपन से है और कमर सम्बन्धी दिक्कत बचपन में पेड़ की डाल टूटने की वजह से हुई। जातक नन्दी महाराज के ऊपर गिरा और उनकी सिंग चुभ गयी थी।

ज्योतिष में रुचि रखने वाले व जातकों को मैं बताना चाहूँगा पेट सम्बन्धी समस्या गुरु की स्थिति से और हड्डी/ पीठ/ कमर/ बीपी/ नेत्र सम्बन्धी समस्याओं के लिये सूर्य की स्थिति को देखा जाता है। ऐसा जरूरी नहीं है हर बार कमजोर गुरु/ सूर्य की वजह से जातक को इस तरह की समस्याओं का सामना करना ही पड़े। इसके अलावा भी काफी चीजें निर्भर करती हैं जो मैं और आप सीखते हैं, सीखते ही रहेंगे। एक और बात जो ज्योतिष के साथ गजब की है, वो ये कि हर नई कुंडली के साथ पुराना ज्ञान धरा का धरा रह जाता है।

केस स्टडी 15

काफी समय पहले मैंने एक पंक्ति लिखी थी- "प्रेम में बंधन हो सकता है, बंधन में कभी प्रेम नहीं हो सकता।" यही इस केस स्टडी का सार है।

तो कुछ यूँ हुआ कि एक महिला का मुझे मैसेज आया उन्हें एक कुंडली दिखानी थी। मैंने उन्हें कुछ दिनों के बाद का समय दे दिया। उनका एक ही सवाल था विवाह से जुड़ा हुआ। एक ही सवाल था तो मैंने इनबॉक्स में ही उन्हें कुंडली और नवमांश तथा सवाल भेजने को कहा।

उन्होंने कुंडली भेजी, साथ ही ये बताया कि कुंडली एक पुरुष की है जिनकी पत्नी अब इस दुनिया में नहीं हैं। एक लंबी बीमारी के बाद उनकी देहांत हो गया था । वो जातक के दूसरे विवाह के संदर्भ में जानना चाह रही थी, उन्होंने बताया उनका भी तलाक हो चुका है।

कुंडली में ग्रहस्थिति देखने के बाद मैंने उनसे पूछा "क्या जातक का मन है दूसरे विवाह का या उनके घर वाले फोर्स कर रहे हैं ?"

उन्होंने कहा- जातक की एक संतान है इसलिए जातक के घर वाले चाह रहे हैं कि जातक विवाह कर ले ।

वो विवाह के योग जानने की इछुक थी। मेरे साथ दिक्कत ये है कि मैं किसी को झूठी उम्मीदें देना पसंद नहीं करता। खुद को भी नहीं। मैं हमेशा कहता हूँ "जिंदगी कर्मप्रधान है और कुंडली के योग भी तभी कार्य करते हैं, जब उस दिशा में पूरी मेहनत और ईमानदारी से कर्म किये जायें।"

मैंने उनसे कहा "व्यक्ति की इच्छा ही नहीं तो क्या योग क्या प्रयोग? ऐसे जबरदस्ती विवाह करवाकर लोग क्या पाने की उम्मीद रखते हैं?"

उस कुंडली को देखकर मुझे न जाने क्यों शरद चंद्र चट्टोपाध्याय जी के देवदास उपन्यास के एक किरदार जमीदार भुवन मोहन चौधरी की याद आ गयी, साथ ही संजय लीला भंसाली जी की देवदास (फिल्म) में भुवन मोहन चौधरी का वो डायलॉग जिसमें पारो की शादी भुवन मोहन चौधरी से होती है और पहली ही मुलाकात में जमीदार भुवन मोहन चौधरी पारो से कहते हैं "...लेकिन हम सुभद्रा को कभी नहीं भूल सकते...ये कालरात्रि हमेशा हमारे बीच रहेगी।"

केस स्टडी 16

ये केस स्टडी इसलिए महत्वपूर्ण लगी, क्योंकि इस केस स्टडी के जरिए मेरी बचपन में पढ़ी एक कहानी के किरदार से मुलाकात हुई और वह किरदार था "द आंट एंड द ग्रासहोपर" का टॉम रामशे।

हम उस कहानी पर बात करके इस लेख को लंबा नहीं करेंगे क्योंकि मेरा हमेशा मानना रहता है कि लेख जितना छोटा- कसा हुआ हो उतना बेहतर। अगर आप उस कहानी को पढ़ना चाहते हैं तो आप खोजकर पढ़ सकते हैं, वो आसानी से उपलब्ध है।

एक महिला का मुझे मैसेज आया, उन्होंने कहा कि एक कुंडली देखनी है। उनका पहला दूसरा मैसेज ही "मैं ये नही चाहती कि सुसाइड हो" इसलिए समय न होने के बावजूद मैंने उन्हें कहा- आप जन्मकुंडली और नवमांश भेज दो।

उन्होंने बोला कि उन्हें इसका बिल्कुल भी आइडिया नहीं है तो मैंने कहा ठीक है मैं देख लूंगा। लेकिन शनिवार को महिला ने कहा- तब तक जातक अगर कोई गलत कदम उठा लेगा तो क्या कर लोगे देखकर?

ख़ैर, मैंने मंगल की शाम/ रात का ही समय दे दिया। लेकिन कुंडली देखने पर स्थिति मुझे बिल्कुल उलट लगी। महिला कह रही थी कि जातक फटेहाल हैं लेकिन लग्नेश भाग्य स्थान में था और भाग्य स्थान और आठवें घर के स्वामी का राशि परिवर्तन था यानी दूसरे देश (राज्य) से अच्छी आमदनी होने की संभावना और लग्न भी मजबूत।

मैंने साफ- साफ लिख दिया या तो ये कुंडली गलत है या जातक झूठ बोल रहा है। ये सुनकर महिला ने कहा- जातक उसका प्रेमी है और वही उसके खर्चे उठाती है। महिला अच्छे पद पर थी, दूसरे राज्य में थी। ये सुनकर मैंने उन्हें अपनी कही बात याद दिलाई, जिसमें मैंने कहा था कि फटेहाल नहीं है और दूसरे देश (राज्य) से आमदनी होने की संभावना है।

महिला न जाने क्यों फटेहाल वाली बात पर अड़ी रही तो मैंने भी "बाकी आप जानो, भगवान जाने और जातक जाने, बस मुझे ही यकीन नहीं हो रहा कुंडली देखकर इस बात पर।" कहकर अपनी बात खत्म कर दी।

अपने सीमित ज्ञान के आधार पर कुछ बातें जो उस कुंडली को देख कर

निकल कर आई, वह यह थी कि वैसे तो जीवन का कोई भरोसा नहीं है फिर भी जातक की कुंडली में सुसाइड जैसा कुछ भी नहीं था, उल्टा उसकी वजह से लोगों की ऐसी स्थिति हो सकती है। जातक को जीवन में कभी भी पैसों की कमी नहीं होगी। मौका आने पर पैसों के लिए जातक किसी को धोखा देने से नहीं चूकेगा, क्योंकि जो मेरे पास आई वो कुंडली टॉम राम शे की तरह थी।

इससे आगे के लेख पढ़ने के लिए आप यह किताब Shopizen App पर जाकर खरीद सकते हैं।

https://shopizen.app.link/7GCVI4QYEzb